Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CALENDAR FOR 1921.

JANUARY.							FEBRUARY.							MARCH.							APRIL.						
Sun.	2	9	16	23	30		S.		6	13	20	27	S.		6	13	20	27	S.		3	10	17	24			
Mon.	3	10	17	24	31		M.		7	14	21	28	M.		7	14	21	28	M.		4	11	18	25			
Tue.	4	11	18	25			T.	1	8	15	22		T.	1	8	15	22	29	T.		5	12	19	26			
Wed.	5	12	19	26			W.	2	9	16	23		W.	2	9	16	23	30	W.		6	13	20	27			
Thu.	6	13	20	27			T.	3	10	17	24		T.	3	10	17	24	31	T.		7	14	21	28			
Fri.	7	14	21	28			F.	4	11	18	25		F.	4	11	18	25		F.	1	8	15	22	29			
Sat	1	8	15	22	29		S.	5	12	19	26		S.	5	12	19	26		S.	2	9	16	23	30			

MAY.							JUNE.							JULY							AUGUST						
Sun.	1	8	15	22	29		S.		5	12	19	26	S.	3	10	17	24	31	S.		7	14	21	28			
Mon.	2	9	16	23	30		M.		6	13	20	27	M.	4	11	18	25		M.	1	8	15	22	29			
Tue.	3	10	17	24	31		T.		7	14	21	28	T.	5	12	19	26		T.	2	9	16	23	30			
Wed.	4	11	18	25			W.	1	8	15	22	29	W.	6	13	20	27		W.	3	10	17	24	31			
Thu.	5	12	19	26			T.	2	9	16	23	30	T.	7	14	21	28		T.	4	11	18	25				
Fri.	6	13	20	27			F.	3	10	17	24		F.	1	8	15	22	29	F.	5	12	19	26				
Sat.	7	14	21	28			S.	4	11	18	25		S.	2	9	16	23	30	S.	6	13	20	27				

SEPTEMBER.							OCTOBER.							NOVEMBER.							DECEMBER.						
Sun.		4	11	18	25		S.	2	9	16	23	30	S.		6	13	20	27	S.		4	11	18	25			
Mon.		5	12	19	26		M.	3	10	17	24	31	M.		7	14	21	28	M.		5	12	19	26			
Tue.		6	13	20	27		T.	4	11	18	25		T.	1	8	15	22	29	T.		6	13	20	27			
Wed.		7	14	21	28		W.	5	12	19	26		W.	2	9	16	23	30	W.		7	14	21	28			
Thu.	1	8	15	22	29		T.	6	13	20	27		T.	3	10	17	24		T.	1	8	15	22	29			
Fri.	2	9	16	23	30		F.	7	14	21	28		F.	4	11	18	25		F.	2	9	16	23	30			
Sat.	3	10	17	24			S.	1	8	15	22	29	S.	5	12	19	26		S.	3	10	17	24	31			

CALENDAR FOR 1922.

JANUARY.							FEBRUARY.							MARCH.							APRIL.						
Sun.	1	8	15	22	29		S.		5	12	19	26	S.		5	12	19	26	S.	2	9	16	23	30			
Mon.	2	9	16	23	30		M.		6	13	20	27	M.		6	13	20	27	M.	3	10	17	24				
Tue.	3	10	17	24	31		T.		7	14	21	28	T.		7	14	21	28	T.	4	11	18	25				
Wed.	4	11	18	25			W.	1	8	15	22		W.	1	8	15	22	29	W.	5	12	19	26				
Thu.	5	12	19	26			T.	2	9	16	23		T.	2	9	16	23	30	T.	6	13	20	27				
Fri	6	13	20	27			F.	3	10	17	24		F.	3	10	17	24	31	F.	7	14	21	28				
Sat.	7	14	21	28			S.	4	11	18	25		S.	4	11	18	25		S.	1	8	15	22	29			

MAY.							JUNE.							JULY.							AUGUST.						
Sun.		7	14	21	28		S.		4	11	18	25	S.	2	9	16	23	30	S.		6	13	20	27			
Mon.	1	8	15	22	29		M.		5	12	19	26	M.	3	10	17	24	31	M.		7	14	21	28			
Tue.	2	9	16	23	30		T.		6	13	20	27	T.	4	11	18	25		T.	1	8	15	22	29			
Wed.	3	10	17	24	31		W.		7	14	21	28	W.	5	12	19	26		W.	2	9	16	23	30			
Thu.	4	11	18	25			T.	1	8	15	22	29	T.	6	13	20	27		T.	3	10	17	24	31			
Fri.	5	12	19	26			F.	2	9	16	23	30	F.	7	14	21	28		F.	4	11	18	25				
Sat.	6	13	20	27			S.	3	10	17	24		S.	1	8	15	22	29	S.	5	12	19	26				

SEPTEMBER.							OCTOBER.							NOVEMBER.							DECEMBER.						
Sun.		3	10	17	24		S.	1	8	15	22	29	S.		5	12	19	26	S.	3	10	17	24	31			
Mon.		4	11	18	25		M.	2	9	16	23	30	M.		6	13	20	27	M.	4	11	18	25				
Tue.		5	12	19	26		T.	3	10	17	24	31	T.		7	14	21	28	T.	5	12	19	26				
Wed.		6	13	20	27		W.	4	11	18	25		W.	1	8	15	22	29	W.	6	13	20	27				
Thu.		7	14	21	28		T.	5	12	19	26		T.	2	9	16	23	30	T.	7	14	21	28				
Fri.	1	8	15	22	29		F.	6	13	20	27		F.	3	10	17	24		F.	1	8	15	22	29			
Sat.	2	9	16	23	30		S.	7	14	21	28		S.	4	11	18	25		S.	2	9	16	23	30			

SETH & CO., Anarkali LAHORE.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

गम्ये ... वैदग्धिभंगभयात् प्रणिधत्ते प्रणिधत्ते नियुञ्जीत.

सुहृत्कार्येष्वनभिगमनमनभिहारहेतोः (मूलम्)

अभिहार उपायनम्।

सख्युः पुरस्योत्सञ्जनम् — यस्योत्सवनिकेति प्रतिपत्तिः।

नखदशनक्षतेभ्यो जुगुप्सा।

ओष्ठनिर्भोगः — ओष्ठस्य क्रोडीकरणम्।

अनर्मणि हासः। क्रीडारहितेपि संकथने।

कृतमस्मिन्न नश्यति।

रूपं गुणो वयस्त्याग इति सुभगंकरणम्।

हर्म्यपृष्ठं समारूढः कामोपि गरुडायते।

उत्पतितोपि हि चणकः शक्तः किं भ्राष्ट्रकं भङ्क्तुम्

इति पञ्चतन्त्रे।

न मौक्तिकच्छिद्करी शलाका प्रगल्भते कर्मणि is competent.

टङ्किकायाः Vikramānka.

तपः क्षरति विस्मयात् through pride or arrogance.

तव वीर्यवतः कश्चिद्यथास्ति मयि संभ्रमः Rāma. Respect.

अत्र गन्धवद्गन्धमादनमित्यागन्तुकः पाठः

(Various, interpolated Mallinatha on Kumara 6.46.)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

मतिरागामिकी ज्ञेया बुद्धिस्तात्कालदर्शिनी — Haima.

वयं सर्वे सोत्सुकाः कृतक्षणास्तिष्ठामः waiting impatiently for the exact moment.
इति पञ्चतन्त्रे।

अवक्रजोऽचरत्पार्थो वर्षाणि त्रिदशानि च
Unvanquished. इति महाभारते।

उत्सिच्यमाने पयसि — spouting or foaming up.

कल्पपालः — a distiller कलालेति रूढेः।

वार्दलमिति मेघवाची देश्याम् इति क्षीरस्वामी।

चक्षुःप्रवेशो मुसलप्रवेशः — the thin end of the wedge.

उलूलं चतुःशालमिमं प्रवेश्य प्रकाशनारीधृत एष यस्मात् इति मृच्छकटिकायाम्।

अस्य काव्यस्य कवयो न समर्थाः विशेषणे।
In surpassing.

अर्थपतिर्व्यवहर्तुमर्थगौरवादृणमियोऽयते (दशकुमारे)
To go to law.

व्यवहारोऽयं चाक्षदत्तमवलम्बते This suit relates to:

प्रतिवाचमदत्त केशवः शपमानाय न चेदिभूभुजे
reviling, abusing.

स्वक्रियायामकल्पः unable to perform. } इति
अकल्प एवामधिरोढुमञ्जसा पदम् } भागवते।

अनुबन्धमजानन्तः कर्मणामविचक्षणाः — Rama.
consequences.

छान्दोग्योपनिषदि | वेदान्नानुभवसि — You don't learn or understand the Vedas.
द्वे वामलके अनुभवसि — You contain, comprise or grasp.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

क्रमपरमवशं न विपक्कुर्विभूषितं यदमी स्पृशन्ति भावाः
attack (कुमार)
येनापत्रपते साधुरसाधुस्तेन तुष्यति — महाभारते
य आत्मनापत्रपते भृशं नरः स सर्वलोकस्य गुरुर्भवत्युत इति च.

पिठरं क्वथतीतिमात्रं निजपार्श्वानिव दहतितराम् (पञ्चतन्त्रे)
दैवे पुरुषकारे च कर्मसिद्धिर्व्यवस्थिता
इति याज्ञवल्क्यस्मृतौ.

वैयाकरणकिरातादपशब्दाः क्व यान्तु संत्रस्ताः।

सदा भवान्फाल्गुनस्य गुणैरस्मान्विकत्थते (महाभारते)
vaunts, speaks well of.

क्षत्तारं कुरुराजस्तु शनैः कर्णमुपाजपत्
whispering in the ear.

श्रोत्रेषु संमूर्छति रक्तमासां गीतानुगं वारिमृदङ्गवाद्यम्
pleasing, sweet. R. 16. 64.

रवः श्रवणभैरवः स्थगितरोदसीकन्दरः
full pause

स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमानेकः सतामग्रणीः।
दुरधिगमः परभागो यावत्पुरुषेण पौरुषं न कृतम्
Excellence. Pt. I. 330.

कमलानां मनोहराणामपि रूपादिसंवदति शीलम्
मिद्यते Mrc. I. 19.

शकटदासस्तु मित्रमिति विसंवदन्त्यश्राणि ईव
wander.

इदं सर्वमाकृतं करम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

शब्दा यौ प्रतिभावतः तेनरहस्यमुपायतः।

मतिरागामिकी ज्ञेया बुद्धिस्तात्कालदर्शिनी — Haima.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

वयं सर्वे सोत्सुकाः कृतक्षणास्तिष्ठामः waiting impatiently for each moment.
इति पञ्चतन्त्रे।

अवरुद्धोऽचरत्पार्थो वर्षाणि त्रिदशानि च Imagine. इति महाभारते)

उत्सिच्यमाने पयसि — spouting or foaming up.

कल्पपालः — a distiller कलालेति रूढेः।

वार्दलमिति मेघवाची देश्याम् इति हरिस्वामी।

चञ्चुप्रवेशो मुसलप्रवेशः — the thin end of the wedge.

उलं चतुःशालमिमं प्रवेश्य प्रकाशनारीधृत एष यस्मात् इति मृच्छकटिकायाम्।

अस्य काव्यस्य कवयो न समर्था विशेषणे।
In surpassing.

अर्थपतिर्व्यवहर्तुमर्थगौरवादृमियोऽस्यते (दशकुमारे)
To go to law.

व्यवहारोयं चारुदत्तमवलम्बते This suit relates to:

प्रतिवाचमदत्त केशवः शपमानाय न चेदिभूभुजे
reviling, abusing.

स्वक्रियायामकल्पः unfit, incapable. } इति
अकल्प एवामाधरोढुमञ्जसा पदम् } भागवते।

अनुबन्धमजानन्तः कर्मणामविचक्षणाः — Rama.
consequences.

छान्दोग्योपनिषदि | वेदान्नानुभवसि — You don't learn or understand (the Vedas.)
द्वे वामलके अनुगृह्य — Having, carrying or grasping.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

परमवशं न विप्रकुर्यविभुमपि तं यदमी स्पृशन्ति भावाः

आपद्यते साधुरसाधुस्तेन तुष्यति — महाभारते (कुमारे)

आत्मनापद्यते भद्रं नरः स सर्वलोकस्य गुरुर्भवति इति च.

पैठरं कृमयतिमात्रं निजपार्श्वनिव दहतितराम् (पञ्चतन्त्रे)

दैवे पुरुषकारे च कर्मसिद्धिर्व्यवस्थिता

इति याज्ञवल्क्य स्मृतौ.

व्याकरणकिरातादपशब्दाः क्व यान्तु

संत्रस्ताः।

सदा भवान्फाल्गुनस्य गुणैरस्मान्विकत्थते (महाभारते)

boasts, speaks of.

क्षत्तारं कुरुराजस्तु शनैः कर्णमुपाजपत्

won over by secretly suggesting in the ear.

श्रोत्रेषु संमूर्छति रक्तमासां गीतानुगं वारिमृदङ्गवाद्यम्

pleasing, sweet. R. 16. 64.

रवः श्रवणभैरवः स्थगितरोदसीकन्दरः

full pervading

स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमानेकः सतामग्रणीः।

दुरधिगमः परभागो यावत्पुरुषेण पौरुषं न कृतम्

Excellence. Pl. I. 330.

कमलानां मनोहराणामपि रूपाद्विसंवदति शीलम्

मिद्यते Mu. I. 19.

शकटदासस्तु मित्रमिति विसंवदन्त्यश्रद्धाति ?

इदं सर्वमाकूतकरम् — Excellent.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तन्वते तनुं वृक्षस्य द्विषदी मनङ्क्विनाम् ।
धर्मस्य
यतायमानानामपि तापदायिनीं भृशार्दितार्ति-
ग्लपितां गिरं प्रवः । कृपायमाणः - -
तूष्णीमकृतासिनां विभुः । धात्वर्थनिर्देशे
ण्वुल्वक्तव्यः ।
कृपायमानस्य - पापं कर्तुं यतमानस्य ।
ग्रमर्षितस्यापदि - ग्रक्षान्तस्य, भृशस्नेहयोगा
मिते नेहायाः क्त्वाभावः ।
विष्टरश्रवाः - विष्टरो वृक्षोऽवत्वस्तद्रूपत्वेन श्रूयत
इति । ग्रश्वत्थश्चास्मि वृक्षाणाम् ।

प्रवाय नीतिं सिचयं दिशेमुना प्रव्याय सम्यक्परिवीयवा
बभूव राजन्सहजोस्य देवकः प्रजाय सन्तं सुजनं निषेविता ॥
देवकस्यापत्यं स्त्री देवकी । ग्रत इञ् । संज्ञापूर्वको
विधिरनित्य इति वृद्धभावः । इतो मनुष्यजातिरिति ङीष् ।
शस्त्रापगोरं चलताम् = शस्त्राण्युद्यम्य । ग्रपगुरो
णमुलि इत्यात्वविकल्पः ।
द्राप्सीः स्म मा = मा हृषः ।
शङ्खमिन्दीवरदलप्रतिमं तनूः कलारमुग्रं करवालमादद
उत्तिष्ठसे कर्मधि किं नु गुप्सिते सन्दिह्य धर्मत्रयिगतक्षतजनः ।
संचीडतां नीतिरयूथिवेते मा वात्वरेथा त्ववातिष्ठतवरा ॥
ग्रत्वा = ग्रत्वरमाणः । त्वरेथात् इति यत्प्रत्ययः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

यः साधु मन्त्रमुपतिष्ठते इरे तद्ज्ञानपूतानाप वो पतिष्ठते।
चिते तदीये हुपतिष्ठते क्षमा सै तादृशस्योन्नपते कथं पुनः॥
= संनिधत्ते चन्नाशते

प्रनाहतामोद्यत गाम् - प्रसत्यार्थां वाचमुक्तः
विपश्चिद्दो न कुण्डमार्यं मतिमानुपार्च्छति।
प्रान्त नुतुनं विचकिरे = विविधमचेष्टन्त।
पारिषद्यचरितः - परिषादे साधु चरितं यस्य सः।
कृष्णाद्धि मन्त्र रुपच्चरे = स्वतः सतीं सातिशया-
मन्वरोत्।
धर्मे पुरोपक्रमते स मार्गे प्रतेप्रतिबन्धेनावर्तत।
उपपराभ्याम् इति वृत्यर्थे क्रमेस्तङ्।
कुस्तुम्बुरु = धान्यम्। रम्भो वैणवो दण्डः।
श्वःश्रेयसम् - मयूर व्यंसकादिः।
सर्विरादेर्यं जानते न सदं विपश्चयाः। घृतादिना
होम साधनेनप्रवर्तन्ते।
प्रणाय्यप्रहयः = प्रसंमतजनपक्ष्यः (वंसः)। प्रप्रेह
इति प्रीङ् प्रीतावित्यस्मर्थे क्यो ङीकृतो वासुदेवेनापि।
वैजनने मासे - ज्योत्स्नादिभ्य उपसंख्यानम् इति
मत्वर्थीयोऽण्।
तथा व्यथां मा = दुःखं मानुभूः।
प्रणाय्यो नारदः - प्रसंभति निःस्पृहः।
बाह्वोः - बहिर्वसिलोपश्च, (बहिर्देवपञ्चजनेभ्यश्चाते वक्तव्य
प्रव्ययानां प्रयोगे [illegible] स्वार्थिकत्वज्ञापनम्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

न शीयते [illegible] हृदयदेशभावपक्षः | सुहृदयशब्दात्ष्यञ्
प्रियमाम् — अहं प्रियो यस्य |
न भैषये नापि च गर्धयेत्वां शक्त्या जनं नाथयलाभगेहम्
उत्पथनायनायम् = उत्पथः पन्थानमतिक्रान्तो यो नायः (ञीनीभ्वोनुपसर्गे), तस्य नायम् (दुनो-रनुपसर्गे) |
श्येतायते यद्यशसा निलोकी दिगन्तमयेन तमोपहेन |
तामसी बुद्धिः (बहु०) — बुद्धिनिमित्तस्य ... इति पुंवद्भाव-प्रतिषेधः | प्रणाशिन्वाक्तिः — प्रणाशिन्वाक्तिर्यस्य न वोपधायाः |
पुलोमजाजानि मुदोऽवसायः | अवसानकरः |
साधिष्ठसन्तापक्नीतिशाली — पुंवत्कर्मधाय — इति पुंवद्भाव प्रतिषेधः |
ऊर्ध्वं मुहूर्तात् [illegible] क्षुण्या यदि .... निस्तण्ठि ...
लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके, इति लोडर्थलक्षणे भविष्यतिवा लिङ् |
पादविधाः — पश्चौ धावन्तः | माथोत्तरपदव्यनुपदं पद धावति |
हृत्तेरवसंसारमयापहर्त्री |
उदनुम्भः — मध्यमपदलोपी समासः |
परिमथ्यति स्म दैवाय — अप्रसूयति स्म |
येषां पराजेषत वीर्यभूम्ना |
स्वस्त्यस्तु तुभ्यं सहमर्त्यधाये | प्रभुत्वाशिषीति सह शब्दस्य प्रयोगाभावः |

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

न श्रीयते मे त्वयि रोमहर्षः | इति देशभाषाप्रयोगः |
सुहृदयशब्दात् ष्यञ्
प्रियमाम् - अहं प्रियो यस्य |
न भक्षये नापि च गर्धयेत्वां शक्त्या ज्वलं नाथपलाशयेह |
उत्पथनायनायम् = उत्पथः पन्थानमतिक्रान्तो
यो नायः (ञीणी प्रापणे), तस्य नायम् (दुन्यो-
रनुपसर्गे) |
श्येतायते यद्यशसा निलोकी दिगन्तमयेन तमोऽहिना
तामसी बुद्धिः (बहु०) - बुद्धिनिमित्तस्य --- इति पुंवद्भाव-
प्रतिषेधः | प्रणाशिन्या वृत्तिः - प्रणाशिन्या वृत्तिर्नस्य
न जोषधायाः |
पुलोमजा जानि मुदोऽवसायः | अवसानकरः |
साधिष्ठसन्तापवन्नीतिशाली - पृथक्त्वमेधाय -
इति पुंवद्भावप्रतिषेधः |
ऊर्ध्वं मुहूर्तात् क्षणया यदि --- निस्तण्डि ---
लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके इति लोऽर्थलक्षणे भविष्यतिवा
लिङ् |
पादविक्षेपाः - पदवीं धावन्तः | माथोत्तरपदव्यनुपदं
पद
धावति |
हृत्लेखसंसर्गमयाप्तदुर्वी |
उदकुम्भः - मध्यमपदलोपी समासः |
परिमुष्णति स्म देवाय - अप्रसूयति स्म |
ग्रहं पराजेषत वीर्यभूम्ना |
स्वस्त्यस्तु तुभ्यं सहमार्हियाय | पशुत्यागशीलीति
सहशब्दस्य प्रकृतिभावः |

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

निर्वंसनाद्दिव्यात्... वंसेन वंशेन युतः।

मितंपचं

मत्याः श्रुतीरधीतवन्तः — मतेर्बोधिस्य करणभूताः।

सब्रह्मचारी नवमेधरूच्याः सोदर्येदेश्याऽदृदृशमप्यासाम्।

.... प्रमोऽमः वश्चन ...

विगतमऽऽ व्यहः। व्येहपि पद्मान्यरूचन्।

प्रणिहोचकमानस्तु यानाशीलो हि जो हि यः।

याचमानः क्षमाद्यर्थान् स ह्ययायावरः स्मृतः॥

मामिडुहित्वां सइसा स वंसः।

विषडुहेऽयः। दाधेद्दाशेसदो रुः।

प्रनुरज्यन्मनसः — धुविरञ्जोः प्राचां श्यन्परस्मैपदं च

इति श्यमेर्वर्तरि —

प्रादीनवमाक्षु — प्रादीनवः क्लेशः।

सहोदराम् — सहशब्दोऽत्र समानार्थे।

प्रदः कृत्य — कर्तव्याकर्तव्यं निश्चित्य।

विमलात्मा — प्रपूर्णमन्यतामिन्नवेद्यप्रयाशुभाशुभ-

कर्मवासनालक्षणमलत्रयरहितः।

तिरोदधे नु स्तनयित्नुपद्याम्। पादाय इता।

शरीरावयवाद्यत।

व्यामोहमन्वनसितेन हृदा — व्यामोहसंवलेन

प्रदीप्य — दीप्तं इति दीर्घ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अद्यैत (द्यैतो) स्मर्यन्ति स्मृतिं स्मृतिं ।
मृत्युं विहन्तुं मम यस्यत स्म प्रज्ञा यि मां
यस्यत यस्यतेति । यस्यत यस्यतेति यस्यतस्म
सुस्थम् — सुः पूजायाम् ।
विहाय — न ल्यपीति घुमास्थेते ईत्वनिषेधः ।
स्तनन्धयी — धेटष्टित्वरणाङ्कीप् ।
प्रष्ठौहीः — वहश्चेतिण्विः । पञ्चमे पक्षेवा
वर्षे वहतीति ।

न तेस्त्यभिज्ञा सहबुष्टलाधिपं विनेषते सेयति राजकं भवान् ।
न वाभिजानासि विकत्थिनः सुरान्यदप्रतिस्तब्धपराक्रमो जणः ॥

भावितुं स खलु दुर्बचर्विता जेषितुं समुचितं च नाशकत् ।
येवणाद्दृढरजेवसंभ्रमान्नेवितरस्मृतिरवेषितो स्थात् ॥
इति धातुकाव्ये ।

बृहत्कथा श्लोकसंग्रहतः
सुभाषित कुसुमावचायः

प्रासादान्यत्र राजन्तः संतता हैमराजताः ।
नेरयैलासकूटेभ्यः स्पर्द्धयन्ति न नागराः ॥
हतं मृष्टिभिरत्यक्षं तुवाणां कण्डनं कृतम् ।
मया येन त्वया सार्द्धं नज्ञा प्रीतिरबुद्धिना ॥
अथ निर्भिद्यकं मद्यं मधु जातं त्वदोदयः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अहि घातय बालं मे सूचिं हिंस्रप्रमादिनम् ॥

अधीगर्थदयेशां कर्मणि इति षष्ठी

सुखस्य महतो दध्यौ स राजेन्द्रो गजेन्द्रवत्।

राजपुत्रेण लडितं केनान्येन यथा मया।

म्रियमाणे प्रजापाले म्रिये ह्यातरि बालकः।

गजेन्द्रात्समारोहन्वङ्गारूढो भवेन्ननु ॥

निर्जगाम प्रदात्स्वस्मादेकरात्रोषितो यथा।

मदीयेनाथ नागेन वेगेनापत्य दूरतः।

प्रहारः संनिपातो महान्दत्तो दन्तयोर्वनदन्तिना ॥

अहितादि हितानां च श्रूयतां देव मा कुधः।

अक्षिणी स्फ सुखदस्यास्य स्वस्येतीत्यवोदयत् (अज्ञ)

यदि सत्यैव वागस्य ततः सत्कारमास्यति।

विपर्यये खलीकारं मन्त्रादिकरणक्षितम् ॥

मध्यन्दिने पक्षेदालीं कुन्मन्तीं रविं प्रति।

.....

नीलकण्ठगलद्दाया (सा) प्रवृद्धा वृद्धिरस्मनाम्।

अथ शारिल्यमाह्वाय —

क्षमयित्वा च विपुलैः सम्प्रदानैरतोषयत्।

अमन्तत्वान्मित।

महासेनेन दुःखप्तः सभया वञ्चितः (विसंवादितः

= विफलीकृतः) तथा।

सिंहासनादवलुत्य jumping down from

पक्षान्तर —

स्वदेहं प्रापयामास पितृव्यचिकित्सितैः।

ढौकस्व [illegible]

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

न च ग्रामे यथातत्रैरत्नं मां बाधितुमर्हसि।

तस्यैव विग्रहं = प्रतिग्रहं।
Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
शरीरोपहिता माला येनेयं मालभारिणा (स्रग्विणा)
न शक्यः प्रतिसंहर्तुं शापवह्निरयाच्ययम्।
उत्सृष्टः कृतपुङ्खेन चान्यैकेनेव सायकः॥
उषिता वर्जिता दुःखैरुद्योगसमं समम्।
यानापहृतचेतस्त्वान्नाख्यन्न च कर्णयन् (=अनाकर्णयन्)
दैवाप्रहरणाख्यः (=श्रवणम्)
नानारत्नप्रभाजालकरालम्
तपोवित्ताः -
स्वीकृतास्च यया वध्यस्त्वया नः कथतामिनि।
अनाख्याने मुनेः शापो महापातकमन्यथा।
सुलभान्तो वरं शापो दुस्तरं न तु पातकम्॥
अनाग्जनपदस्यास्य नगर्याः पार्थिवस्य च।
क्षयमेवं यदि ज्ञास्यन्न कथा कथिता भवेत्॥
यो हि सप्तार्णवद्वीपां द्रष्टुमुच्चलितः क्षितिम्।
रत्नानि गणयेन्नरः कदा द्रष्टा समेदिनीम्॥
यच्च नो द्रविणं सारं तद्गृहीत्वा प्रजावती।
स्थिता न मृत्यमाणा वै बहुकृत्वः प्रयच्छति॥
भ्रातृजाया ततः सा नो व्युत्थिता दाक्षतास्र।
(प्रयोजनम्)
(इतिकर्तव्यतायां कर्मे प्रवर्तिगतम्)
आगमे कार्यमार्यया शाक्यताम् (=आगमन प्रयोजनम्)
ये चैतान्नु तिष्ठन्ति (=स्थलानि)
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

च॰ च॰ च॰ च॰ शाकानां तण्डुलानावपन्तीम्
तेषु निष्क्रान्तेषु

प्रप्रस्थावे पि भवतो मुखेनैतदनाकृतम्।
अस्थाने खल्विसर्गः।

पुत्रचिन्तैनं यदि सत्येन (सत्यतः) क्रीडयेत्।
त्वं लेखगमः पतिश्रीमिः सकलैव करालिता।
पतिपुत्रधनैर्हीनामादिदेश भविष्यतीम्।
न कश्चिद्दध्यामास वः प्रातरसमपि।
मामाकुध्य निरागसम्
मरणाय मनो दधे। मरणाय मतिं चक्रे = resolved to die.
प्रहं त्वाचरितापुण्या दुःखैरेव विमानिता (व्यक्ता)
यदाहको ब्राह्मणायोपपादितः (दत्तः)
एकदा तु चतुर्वेदः सान्तेवासी यदृच्छया।
सम्प्रेषितास्थानः = विसृष्टसदाः।
तस्मै: किल सम्प्राप्तः पुरुषो जायते त्रिभिः।
मनुष्यधर्मा = कुबेरः।

कोमलानिलनिक्षिप्तनलिनस्पर्शनोचिताः।
देवनिनादरसिताः सरसीषु शकुन्तयः॥

इयं मां बाधते श्रद्धा (दोहदः) सारा सम्प्राप्तताम्रस्ति।
पुनः पुनः विज्ञापस्व। अत एव दोहदवती श्रद्धालुर्भवति।
नलिन्यां क्रीडन्तः कुमारकाः।
सत्यरत्नं न मक्षोरिव।
प्रशोकैर्निपुतं दोषैरशोकैः संयुतं गुणैः।
प्रक्षमारोपि[illegible] स्यामनाहता।
मधुरं निस्वनेयुस्तां विद्या चोभवतीमिति॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

तस्यैव विग्राहं वा प्रतिगृह्य।
Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
शरीरोपहिता काला येनेयं मालमारिणा (स्वर्गिणा)
न शक्यः प्रतिसंहर्तुं शापवाहि मया व्ययम्।
उत्सृष्टः कृतपुङ्खेन चानुष्केणेव सायकः॥
उषिता वर्जिता दुःखैरहोरात्रसमां समाम्।
यावापहृत चेतस्त्वान्तद्वाक्यमवकर्णयन् (=अनाकर्णयन्)
दैवापहरणश्रावः (=श्रवणम्)
नानारत्न प्रभाजाल करालम् —
तयोचितः —
स्वीकृतश्च यथा वध्यस्त्वया नः कथ्यतामिति।
प्रत्याख्याने मुनेः शापो महापातकमन्यथा।
सुलभान्तो वरं शापो दुस्तरं न तु पातकम्॥
मनागजनपदस्यास्य नगर्याः पार्थिवस्य च।
कथयेयं यदि गुणान् न कथा कथिता भवेत्॥
यो हि सप्तार्णवद्वीपां भुङ्क्ते मुच्चलितः क्षितिम्।
रत्नानि गणयेन्नरः कदा ह्यहा सवेदिनीम्॥
यच्च नो द्रविणं सारं तद्गृहीत्वा प्रजावती।
स्थिता न म्रियमाणा वै बहु कृत्वः प्रयच्छति॥
भ्रातृजाया ततः सा नो पुत्रिता दाक्यताम्।
(प्रयोजनम्)
(इतिशब्दोऽयं कर्मप्रवचनीयः)
प्रागमे कार्यमार्यया शाक्यताम् (=प्रागमन प्रयोजनम्)
ये चैतान् पुत्रिणो (=पुत्रवतः)
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

चर्चा चक्रुश्च शास्त्राणां तद्वद्वाक्यवतीम्
तेषु निष्प्रतिवाक्येषु

अत्रस्थाने पि अयतो पुत्रेणैतद् नावृतम् ।
अस्थाने वाग्विसर्गः ।
पुत्र चिन्तैनं यदि सत्येन (सत्कर्मतः) क्रीड्येत् ।
त्वं लेखगमः पतिं श्रीमः सकलैव कराक्षिता ।
पतिपुत्रधनैर्हीनामादिदेश भविष्यतीम् ।
न कश्चिद्धरयामास वः भ्रातरमपि ।
मामाकुध्य निरागसम्
मरणाय मनो दधे । मरणाय मतिं चक्रे = मरिष्यामि इत्यर्थः
अहं त्वाचरितापुण्या दुःखैरेव विमानिता (व्याप्ता)
मयाढ्यो ब्राह्मणायोपपादितः (=दत्तः)
एकदा तु चतुर्वेदः सान्तेवासी बहुश्रुतः ।
सम्प्रेषितास्थानः = विसृष्टसदाः ।
तस्मै: किल सम्प्राप्तः पुरुषो जायते त्रिभिः ।
मनुष्यधर्मा = कुबेरः ।
कोमलानिलनिक्षिप्तनलिनस्वरबोधिताः ।
रसनिनादरसिताः सरस्सीव शकुन्तयः ॥
इयं मां बाधते मातृ (दोहदः) सारा सम्पद्यतामृषिः ।
पुनः पुनं विजायस्व । अत एव दोहदवती श्रद्धालुर्भवति ।
नलिन्यां अस्तृतक्रीडाः कुमारकाः ।
सत्यसत्यं न यक्षोऽसि ।
अशोकैर्नियुतं दोषैरशोकैः संयुतं गुणैः ।
अकुमारापि [illegible] स्यामनाहता ।
मधुरं निस्वनेयुस्तां विद्या घोषवतीमिति ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

जगत्प्रचलनाचार्यो नमस्वानिति ना चलत्।
येन स्ना[illegible] (तटस्था त्रापि) विमोहिताः।
मुहूर्तं प्रेरितवती गमनागमनश्रमम् (विनोदितवती)
उग्रसेनो महासेनः शत्रुसेनाम्बुदानिलः
(शात्रवीणां चमूनां विद्रावयिता)
क्वचिदागते काले सस्तृजं कुरुजार्जुने।
रसन्मयूरसारङ्गनेत्रमण्डूकमण्डले ॥
निवर्त्यतां परीहास: प्रस्तुतं वर्त्यतामिति।
रुमण्वता तु स तद्वाग: संनिपात्य (समानाय्य) प्रचोदिताः
प्रष्टव्यश्च त्वया नद्दं कीदृशी सा गुणैरिति।
(अहो संवादोऽधुनातन्या वाक्सरण्या)
संमीयते स्म नाड्रेषु दरिद्र इव भामुकः।
अलं त्रासमुपास्येव:।
प्रायता शीत निश्वासं, दन्तावरणसंस्कार शून्यम्।
दिनरात्रेषु यातेषु — —
भोः प्रश्न दयिता पत्ये (संबुद्धौ रूपम्) दहितः प्रक्रियतामिति।
क्षणरागा हि मानुषाः।
श्रिस्पिनः सह शाल्वेन जायन्त इति श्रूयते।
क्षिमेतदिति सन्देहदोलादोलमभून्मनः।
प्रालोक्यावन्तिवौशाम्ब्यां विप्रानोदकदानके
द्रष्टव्येषु तनूभूतभूतेषु बुबूहलम् ॥
क्वाग्निवेश्मानुपास्य (= प्रतीक्ष्य)
महाश्वाघो बुद्धः — दत्तः।
ततः स्मरसरे काले पुष्पयुक्ते निशाक्षते।
दिवाकरे मृदुकरे [illegible] प्रजायत ॥

समां समां विजायते
इति वत्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

पुत्रजन्म तदेन्दुस्य ... पुत्रजन्म च।
शङ्खजन्म च शत्रूणां समं समभवत्त्रयम्॥
(सहोक्तिरलङ्कारः)
चतस्रोऽपि विद्याः सर्वे च वाङ्मयम् -
चन्द्रो मे हृतो नेन तमयं दाक्ष्येताकिति।
दाक्षेर्दिक्कन्यकेति प्रयोगेषु बहुलं दृष्ट्वा
पाणिनेरनभिमतमिति।
यावद्यावद्धि शास्त्रज्ञाः शास्त्रार्थान्न प्रयुञ्जते।
तावत्तावद्भवन्त्येषां कुण्ठाः कर्त्येषु बुद्धयः॥
क्षितिराड्रिरसबुद्धयः।
प्रीतिनिर्वासितत्रपाः - हर्षावेशेन त्यक्त अप्रहसित-
लज्जाः।
अचिरस्थापितस्फीतमञ्जरीस्निग्धमूर्धजा।
निलीनकोकिलकुला तन्वी चूतलतेव सा॥
अन्तःपुरं महीपालः कुमारवटमप्यहृत्।
दीर्घकेशतां च निःशेषस्य बाला स्वं भवनं ययौ॥
अत्र ययाविति प्रथमपुरुषैकवचनं चिन्त्यम्।
रमणीयं मनस्तस्या भर्तुः (प्रह्लादनीयं, विनोदनीयम्)
वर्षाभिषेके निर्वृत्ते पूर्वेण समडम्बरे।
विकारानेनमाचारान् दृष्ट्वा।
क्रियाकर्तृस्थ क्रियताकिति = चिकित्सा।
नागरम्मन्यः।
प्रकृतिप्रेष्टमानसः। युक्तमयं न प्रत्याशिता।
चित्तापहारिणी यात्रा हृद्यचित्ता च बालता।
चित्तविद्या च वियेति दुर्घटस्त्रिकसंगमः॥
उर्वी राजमाकलयन्तु ... सुखात्मनः।
ग्रन्थमीदृशं सिध्यन्ति न शास्त्राणि तपांसि च॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

गोत्रदारता: कृता वयम्।
ततः पुस्तकावन्यस्तग्रन्थवज्रकीलेषु क्षयः।
सुखं सेवितुं नः व्यालो न बाह्यगण्यकदर्थनाम्।
क्रीडिष्यामश्च कान्तासु स्थलीषु मृगयामिति।

(प्रार्थे) अथ पुत्र किमास्यते।

जनसंघट्टनिष्पिष्टतुलाकोटिकमेखलम्।
राजमार्गमतिक्रम्य ----
स्रस्तेन मुकुटेन वः ....
ललाटमावृतं तेन तत्क्षमाप्यतां इति।
(क्त्वा प्रत्ययः)
स्वः सम्पादयिता क्रीडा या वः सा कथ्यतामिति।
(श्यन्नि लट्)
निरवेक्षितालोचनः सेनापतिः।
मृगान्निघ्नन्तो घातयन्तश्च ---
पत्रच्छेद्यं ततस्तस्याः सरितस्तरङ्गभङ्गि—
निम्नेन सलिलं याति।
न स्पृशन्ति भुवं देवाः।
दूरं पदानि मज्जन्ति पुलिनेषु विशोषतः।
न विद्यासिद्धिमाप्तवापि जायन्ते पङ्गुवृत्तयः।
परचित्तानुवृत्तिश्च स्वचित्तस्य च निग्रहः।
येयं नागरकैरुक्ता सा नागरकता मता॥
इदमासनं निरूप्यताम् निरीक्ष्यताम्।
सर्वं तद्ग्राहयामि स्म पुरुषैर्भूषणादिकम्।
अथ विस्रस्तहस्तेन दत्वा जानुनिपातनम्।
विनिश्वस्य [illegible]

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

तस्मादाशोपदेशोयं न नागरकदा मम।
Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
अब्रवीच्च दिनादस्मात्परेणाहमहर्निशम्।
अप्रमत्तो भविष्यामि - - - -

इति नवमः सर्गः।

इदमिह सम्पधार्यं युक्तः कोपानुबन्धः कर्तुं, युक्तं कोपानुबन्धं कर्तुमिति वा, उभयंवेति। इदं विज्ञेयम्— पूर्वत्र वाक्ये कोपानुबन्धस्य युक्तता विधीयते, युक्त इति कर्मवाचिना केन कोपानुबन्ध इति कर्मोक्तमित्यतः प्रतिपत्तिर्थं प्रथमा। उत्तरत्र तु कर्तुमित्यव्ययकृतो भाव इति कर्तुमित्यस्य करणमर्थः। भाववाचिना तुमुना कर्मणो नुक्त्वा त्कोपानुबन्धमिति द्वितीया। कृद्योगलक्षणा षष्ठी तु न, न लोकाव्ययेति तन्निषेधात्। युक्तमिति च कर्तुमिति विशिनष्टीति युज्यतेऽस्य क्रीवता। इत्युभयः प्रयोगः सुवचः।

तव प्रसादादिह प्रायः प्राप्स्यामि जीवितम् Mbh.
प्रायः = संभाव्यते, अवकल्प्यते। perhaps, in all probability.

चतुरङ्गबलो राजा जगतीं वशमानयेत्।
अहं पञ्चाङ्गबलवानाकाशं वशमानये॥

नेमिभ्यन्दः = [illegible]

एकेन मरुनिकुन्तेन सर्वं काण्डायितं विशातं स्यात्
शल्यं कृन्तति = कांटा निकालता है। (वज्र सूचि भाष्य)

प्रमत्त्या ऽन्यतमस्थानं भूक्ता = अनिमेषसन्धिपूर्वम्

आशासते इदमित्यस्य = प्रार्थयन्ते

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

३३. अन्वयः- अवन्ध्यकोपस्य आपदां विहन्तुः पुंस इति शेषः देहिनः स्वयमेव वश्या भवन्ति। अमर्षशून्येन जन्तुना ज्ञातहार्देन जनस्य न आदरः विदुषा वा न आदरः (अथवा) विदुषा न दरः॥ प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहः — इत्यमरः। युवादित्वादण्- हृदयस्य हृल्लेखयदण्लासेषु इति हृदादेशः। आपदां व्यसनानां विहन्तुः निवारयितुः अवन्ध्यकोपं राज्ञां न कोपि गणयति॥ शून (Sham-Gc) शूनायै हेतामिति शून्यम्- अत्र जन्तुपदमदातर्यर्थे विवक्षितं तत्र च नाभिधायकम् इति मम्मटः॥

३४. अन्वयः- लोहितचन्दनोचितः महारम्भः अयं वृकोदरः पदातिः एव भ्रमितः अन्तर्गिरि परिभ्रमन्.... लोहितचन्दनोचितः वाहिताग्न्यादिषु इ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

हृदयम् समुद्दीप्य वत्सा अन्यैरपहारणां पथ
अकीर्तिकरं केनापि न सुकरञ्च तथेद
मयीति बोध्यम् ॥ साधन here means
an ally.

३२. अन्वयः- हे नरदेव! एतर्हि
मनस्विगर्हिते वर्त्मनि विवर्तमानं
भवन्तमुदीरितो मन्युः शुष्कं शमीतरुं
उच्छिखोऽग्निरिव नृपं न ज्वलयति
समुद्दीपितः क्रोधः। उदर्चिषः = उच्छिखः
विवर्तमानम्- शत्रुकृतां दुर्दशामनुभव
न्तम्- हे नरनाथ! ससागरायाः भूमे
रधीश्वरो विश्वविजयिभिः क्षत्रियैराह
-र्तुमश्वमेधस्योर्ज्जस्वलस्य राजसूयस्य
अहर्ता भवान् नयाचीरधरोऽन्यै-
-र्वर्तयन् कृपणां दशां प्रपन्नोऽसि।
नृपम् इमां जुगुप्सितामवस्थां भव
यतस्ते क्रोधो न समुत्पद्यते ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

कुटिलप्रकृतयः स्वयमविश्वस्ता अपि
विश्वस्तवदात्मनः प्रदर्श्य उपायेन
आत्मीया भूत्वा आर्जवसम्पन्नानां
विश्वस्तानां विनाशं साधयन्ति।
शिलाधौताः शरास्तनुत्राणादिभिरसं-
रक्षितगात्राणां प्रविश्य मर्माणि यथा
निकृन्तन्ति क्रूरा निकृतिनो विश्व-
-स्तत्वादविहितात्मरक्षाणां सरल-
प्रकृतीनां तथा उच्छासयन्ति ॥

३१. अन्वयः - अनुरक्तसाधनः कुला-
भिमानी त्वदन्यः क इव नयः ---
आत्मवधूमिव परैः अपहारयेत् ॥
अनुकूलसहायसम्पन्नः, कुलजो कुल-
क्रमादागतां कुलीनाञ्च. शूरैः स-
न्धयादिभिः सौन्दर्यादिभिश्चानुरागि-
-णीम्। सत्कुलप्रसूताया अनुरक्तायाः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

हस्तेन अमलदिनि ॥ मदं स्रोतति इति मदच्युत् द्विप् तेन मदस्राविणा — अखण्डं अविच्छिन्नम्। लोकानेश्रुतैश्चन्द्र-वंशसम्भूतै र्भवतः पूर्वपुरुषैः कृत्स्नेयं मेदिनी पालिता ---- मदान्धः करी सुरभिकुसुमग्रथितां शोभनां मालां शिरसा धारणीयां करेणाकृष्य यथा दूरे निक्षिपति तथा त्वमपि ----- क्रोधाविष्ट कविमतिज्ञः चित्ररथात्मजं कुञ्जरो भवेति शप्तवान् किल ततो मातङ्ग इत्यभिधानं प्रवव्रत इति कथय-न्ति ॥

२०. अन्वयः- ये वाग्विषु वाग्मिनो न भवन्ति ते मूढधियः पराभवं व्रजन्ति। शठास्तथाविधान् अवज्ञेति शरीरान् तीक्ष्णाः शरा इव प्रविध्य आत्मीया भूत्वा -विनाशयन्ति निश्चितमेव ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तत्र पादाभ्यां यन्मर्दितं तदुत्साद नम्।
अभिधानकोव रति। उत्पलमालादि:। टी०
आन्दर्वक्रीडा पाशवक्रीडा।
आभिरम्युच्छ्रिता वेश्या — आभि: कलाभि
जातोत्कर्षा।
ऋतुर्थकमायुष्यम् — यतुर्थेह्नि श्मश्रुकर्म क्षुरेण।
तं स्वेदं कर्पटेनापनुदेत्।
अजीर्णे भोजनं यच्च जीर्णे न भुज्यते।
रात्रौ न भुज्यते यच्च तेन जीर्यन्ति मानवाः॥ टी०
दैवसिकीं च यात्रां तदानुभूय — प्रत्यहं क्रियमाणां शरीरस्थितिम्।
उदक देवेडिना। वेशनाडी स्मृता क्ष्वेडा सिंहनादश्च कथ्यते।' अर्थानुसारि लिङ्गम्
स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु सुतमुत्पादयेद्द्विज:।
तमौरसं विजानीयात्पुत्रं प्राथमकल्पिकम्॥ टी०
व्यवसित चारित्रा — स्वपण्डितशीला।
न धर्मपीडां करिष्यति। धर्मोपघातम्।
परिफल्गुदोषा टी०
अवगृह्य प्रभुत्वेन चरति — अवष्टभ्य स्वामिन व्यवहरति।
आयतिमन्तं = प्रभावयुक्तम्
अस्याहमेवं करिष्यामि I shall do
myself on him.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

शौर्यममर्षता शीघ्रता दार्ढ्यं चोत्साहगुणाः।
इत्येवमादिभिः कारणैः परस्त्रियमापे प्रकुर्वीति
प्रपूर्वः करोतिरभिगमे वर्तते। गन्धनावक्षेपण —
इत्यात्मनेपदम्।
सौरिकः, सौवर्णिकः गान्धिकः इत्यत्र सर्वत्र
तदस्य पण्यम् इति ठक्।
अमन्त्रं विस्रावि मित्रम्। पुरुषायितं व्यवायः।
संबाधकस्य स्वभावतः कृमिजुष्टत्वात्तत्र निसर्गसिद्धा
कण्डूतिः।

अग्निस्तृप्यति नो काष्ठैर्नापगाभिर्महोदधिः।
नान्तकः सर्वभूतैश्च न पुंभिर्वामलोचनाः॥

युगपदनेकार्थसिद्धिरपि इष्यते। यथा मेषयोरभिघाते
कपित्थयोर्भेदे मल्लयोर्युद्धे इति। न तत्र कारकभेद
इति चेदिहापि न वस्तुभेदः। तद्दीप्या यथा — स्त्री-
पुंसयोरपि न कश्चित्परमार्थतः कारकयोर्भेदः। अपि
तु द्वावेतौ कर्तारौ क्रियां निर्वर्तयतः। केवलं
करणाधिकरणादयो भेदा बुद्धिकल्पिता
व्यवहारार्थं व्यवस्थाप्यन्ते इति। Cf. Vākyapadīya
पुत्रस्य जन्मनि यथा
सकषायैरेव वाक्यैरेनं नुदतीव। स्नात्र्यैर्व्यथयन्ती

पितृपैतामहम् मित्रम् — पितामहादागतं पैतामहम्।
पितुः पैतामहम् — पितृपैतामहम्।
निष्ठीविका गौरवमङ्गरत्यादस्तन्द्रा प्रहर्षो हृदयव्यथा च।
तृप्तिश्च बीजग्रहणं स्वयोन्यां गर्भस्य सञ्चोनुगतस्य लिङ्गम्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri

अपाकृतीः क्रोधजान् विकारान्।
मन्युव्यवसायदीपिनोः - क्रोधोद्योगयोः
संवर्धिनीः गिरो वाचस्ताभिः जगाद॥
Calculated to excite to anger and
energetic action after taking.

२८. अन्वयः - भवादृशेषु ----
अधिक्षेप इव भवति, तथापि
निरस्तनारीसमया दुराधयः मां वक्तुं
व्यवसाययन्ति॥ त्यक्तशालीनता-
-रुपस्त्रीसमाचाराः। दुष्टा मनोरथाः
व्यवसाययन्ति प्रयोजयन्ति प्रेरयन्तीति॥
अहो बत दुष्करं कर्तुं प्रवृत्ताहं यद्भवन्तं
विदितार्यिलवेदितमं नीतिमुपदेष्टामि।
धृष्टता खल्वेवा यदुपदेशदानसाहसाङ्गी-
कारः।
२९. अन्वयः - अखण्डलतुल्यधामभि
---- अखण्डं चिरं धृता महो त्वया
यदद्य मानगर्वेण स्वयं इव आत्म-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

शौर्यममर्षता श्रीघृता दाक्ष्यं चोत्साहगुणाः।
इत्येवमादिभिः कारणैः परस्त्रियमापे प्रकुर्वीत
प्रपूर्वः करोतिरभिगमे वर्तते। गन्धनावक्षेपण —
इत्यात्मनेपदम्।
सौरिकः, सौवणिकः गान्धिकः इत्यत्र सर्वत्र
तदस्य पण्यम् इति ठक्।
अमन्त्रविस्रावि मित्रम्। पुरुषायितं व्यवायः।
संबाधकस्य स्वभावतः कृमिजुष्टवात्तत्र निसर्गसिद्धा
कण्डूतिः।

अग्निस्तृप्यति नो काष्ठैर्नापगाभिर्महोदधिः।
नान्तकः सर्वभूतैश्च न पुंभिर्वामलोचनाः॥

युगपदनेकार्थसिद्धिरपि इष्यते। यथा मेषयोरभिघाते
कपित्थयोर्भेदे मल्लयोर्युद्धे इति। न तत्र कारकभेद
इति चेदिहापि न वस्तुभेदः। तद्दीप्या यथा — स्त्री-
पुंसयोरपि न कश्चित्परमार्थतः कारकयोर्भेदः। अपि
तु द्वावेतौ कर्तारौ क्रियां निर्वर्तयतः। केवलं
करणाधिकरणादयो भेदा बुद्धिकल्पिता
व्यवहारार्थं व्यवस्थाप्यन्ते इत्यादि। Cf. Vākyapadīya
पुत्रस्य जन्मनि यथा
सकषायैरेव बाष्पैरेनं तुदतीव - स्तान्यैर्व्यथयन्ती

पितृपैतामहम् मित्रम् — पितामहादागतं पैतामहम्।
पितुः पैतामहम् — पितृपैतामहम्।

निष्ठीविका गौरवमङ्गरागस्तन्दा प्रहर्षो हृदयव्यथा च।
तृप्तिश्च बीजग्रहणं स्वयोन्यां गर्भस्य सद्योनुगतस्य लिङ्गम्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

सिद्धमेतादीति साधनम् ॥
Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
अत्र प्रत्युपसृष्टस्य ग्रहातेः प्राप्त्यर्थत्वाद् गति-
बुद्धि-इत्यादिसूत्रेण कर्मसंज्ञायां देवमिति
द्वितीयेति दक्षिणावर्तः ॥

५१. अन्वयः- सुदती सा पूर्वजनने यदैव
दक्षरोषात् शरीरं ससर्ज्ज । तदा प्रभृत्येव
वशूनां पतिं विमुक्तसङ्गः सन् अपरिग्रहोऽ
भूत् ॥ पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वेति निष्क्रमे
स्मिन्नादेशः । वयसि दन्तस्य दत इति
दत्रादेशः । वशूनां वत्सादेस्ताम्बपर्यन्ता-
नां जीवानां प्रभवानां वा । अपरिग्रहः -
अपत्नीकः, अथवा ममत्वरहितः । प्रकृष्ट-
दोषाकीर्णभूताः सन्तः सत्त्वजनो विषयेषु
दोषान् वक्ष्यन्तः सर्वतो निर्विद्यन्ते ॥
कथं सुदतीति ? नहात्र वधो गम्यते ।
अतः सुदतीति भाक्तम् । अत्राहुः शोभना
दन्ता अस्याः समस्ता जाता नतु न्यूना इति
कथमेतत् इत्यपि वधो गम्यत एवेति घोरमनोरमा ॥
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

५२. अन्वयः — कृत्तिवासा एतात्मा स तपसे गङ्गोत्यादि — "मृगनाभि मृग-मदः कस्तूरी च्याऽऽखोलकम्" — कस्तूरीगन्धवत्। कृत्तिवासा इत्यनेन तपःपारक्करभूतमजिनधारणमुक्तम्।

५३. अन्वयः - नमेरुप्रसवादयो विशेषणा न्यनुनाद्यमुदीर्ध्यैवान्वय उपन्यसनीया -नि, तेषां विधेयविशेषणत्वात्। तेषां तद्दिग्न्कालोचितं भूषणादिकं वर्णयति विशेषणत्रयेण। सुरपुन्नागकुसुमशेखराः॥

५४. तुषारसङ्घातशिलाः सुरागैः सुमप्लुषन् दर्पफलः विनिर्गतैः गवयैः कक्षचिद्दृष्टः कङ्कुमान् इत्यादि। तुषारसंघाता हिम -घनाः ते एव शिलाः। गोसदृशमृगविशे-षैः। कङ्कुमानित्यत्र मय इति मत्वर्थो वक्तव्यः। मरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा। प्रत्यये भावायां नित्यमित्यनुनासिकत्वं च न भवति। घञादेशे दकारोपपातनात्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

५५. अन्वयः- तपसः फलानां स्वयं विधाता ..... मूर्त्यन्तरं मूर्तिभेदम्। तपसः फलानां स्वयं विधाता' इति परमवारेण्यत्वे -न स्वतन्त्रत्वेन च स्वर्गादिप्रसिद्धफलापेक्षा विरहं द्योतयता विशेषणेनैकेनापीति निर्दिष्टम्- तच्च कामस्यानिन्तनीयत्वमु -पपादयति। प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते इति न्यायात् कामेनेत्युक्तम्॥

५६. अन्वयः- अद्रिनाथोऽर्घ्यं स्वर्गौकसाम् अर्चितं तामित्यादि- अर्घ्येण- पूजार्हादिकेन अद्रिनाथ इति। कथं नात्र पूर्वपदात्संज्ञायां अज इति णत्वम्? एकाधिकरणस्थनिष्ठ- शक्तिग्रहत्वादवासंज्ञात्वम्। अद्रिनाथादयो हि बहुषु व्यक्तीषु प्रयोक्तुं शक्यन्ते। वस्तुतस्तु अभिहितलक्षणो णत्वप्रतिषेधः सुभगादिषु द्रष्टव्य इति भाष्यवचनात्सर्वेऽ -वयवार्था अभिहितलक्षणाश्च सुभगादित्वात्समा -धेयाः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अभ्यङ्गः सुप्तप्रबुद्धः शुश्रूषमाणाम्
सेवमानाम्- सेवना हि सेव्ये दत्तकर्णी
मनोज्ञे। शुश्रूषाशब्दस्य श्रवणेच्छायाः
कार्यं लक्षयन् वादेर्चर्मणि रूढः॥
प्रतिकूलं अर्थयितुं शीलमस्येति -
इति प्रत्यर्थिनी सा भूता - इति समासः।
पुंवद्भावः। नलोपः प्रातिपदिकान्तस्येति
नकारलोपः। समासश्चात्र सुप्सुपेति
मल्लिनाथः। स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्
स्त्रियामित्यादेना पुम्वद्भावः। श्रेण्यादयः
कृतादिभिरिति तत्पुरुष इत्यन्ये। तुल्या
र्थैकभूतशब्देनास्वपदविग्रहे नित्यसमा-
सः इत्येके। वस्तुतस्तु प्रमाणभूत
आचार्यः पाणिनिदर्शनादिति भाष्यकार-
प्रयोगप्रामाण्यादेवात्र भूतशब्देन समासः॥
विकिरन्ते- कर्मणि लट्। विकारहेतौ
सति येषां चेतांसि तेनेति शेषः (विकारहेतु
-ना) नपुंसकेनेति हलीः। केचिच्चात्र
कर्मणि तृतीयां मन्यन्ते। तत्र प्रयोगश्चिन्त्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

इति मन्यते। अस्मिन्नर्थे सति णौ श्रन्थिग्रन्थि
- ब्रूस्तात्मनेपदान्कर्मकाणामुपसंख्यानमिति क्रीते
रात्मनेपदात्कर्मकत्वाद् यक्चिण् प्रतिषेधो भव-
ति। "आत्मनेपदविधानन्कर्मका ये धातवो
निर्दिष्टास्ते यदान्तर्भावितण्यर्थाः सन्कर्मका
भवन्ति ते इमे आत्मनेपदात्कर्मकाः" इति
हरदत्तः। यथा वेः शब्दकर्मणः, अकर्मकाच्च
इति सूत्रेण क्रीतिरात्मनेपदात्कर्मकः। तर्हि
अत्र कर्मकर्तृस्त्वस्वीकारे चेतांसि निर्भुर्व
-ते इति स्यात् नतु विक्रियन्ते ॥

५८. अस्मिन् पद्ये वार्वत्याः शिवाराधनप्रकार
उवर्ण्यते कविसार्वभौमेन कालिदासेन,
अतो विशेषणानि विधेयत्वेन योजनीयानि-
नियमविधेः - नित्यकर्मानुष्ठानस्य -
नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागनुसाधन-
मिति सिंहः। अहनि अहनि इति वीप्सायां
अव्ययीभावः। षाष्टिकष्टच् समासान्तः॥

सम्पूर्णः पञ्चमाङ्कटिप्पणः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
अन्वयः शुश्रूषमाणाम् शुश्रूषमाणाम्
सेवमानाम् - सेवना हि सेव्ये दत्तकर्णी
भवति । शुश्रूषाशब्दस्य श्रवणेच्छायाः
कार्यं लक्षयन् वादेचर्यामां रूढः ॥
प्रतिकूलं अर्थयितुं शीलमस्येति -
इति प्रत्यर्थिनी सा भूता - इति समासः ।
पुंवद्भावः । नलोपः प्रातिपदिकान्तस्येति
नकारलोपः । समासश्चात्र पुरुषोत्तमेति
मल्लिनाथः । स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्
स्त्रियामित्यादिना पुम्वद्भावः । श्रेण्यादयः
कृतादिभिरिति तत्पुरुष इत्यन्ये । तुल्या
र्थैकभूतशब्देनास्तपदविग्रहे नित्यसमा-
सः इत्येके । वस्तुतस्तु प्रमाणभूत
आचार्यः पावित्रदर्भपाणिरिति मध्यमकार-
प्रयोगप्रामाण्यादेवात्र भूतशब्देन समासः ॥
विक्रियन्ते - कर्मणि लट् । विकारहेतौ
सति येषां चेतांसि तेनेति शेषः (विकारहेतु-
ना) न विक्रियन्ते इति । केचिच्चात्र
कर्मकर्तरि लट मत्वा यद् प्रयोगश्चिन्त्य
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

इति मन्यते। तन्मते तनौ ऋणौ ग्रन्थि-
-ग्रन्थ्यात्मनेपदान्कर्म्मकाणामुपसंख्यानमिति करोते
रात्मनेपदात्कर्म्मकत्वाद् यत्कर्त्रीप्सितमेवोक्तो भव-
-ति। "आत्मनेपदविधानकर्म्मका ये धातवो
निर्दिष्टास्ते यदान्तर्भावितण्यर्थाः सत्कर्म्मका
भवन्ति ते इमे आत्मनेपदात्कर्म्मकाः" इति
हरदत्तः। यथा वेः शब्दकर्म्मणः, अकर्म्मकात्च
इति सूत्रेण करोतिरात्मनेपदात्कर्म्मकः। तर्हि
अत्र कर्म्मकर्तृस्वीकारे चेतांसि मिनुर्व
-ते इति स्यात् नतु विक्रियन्ते ॥

५८. अस्मिन् पद्ये वार्षिक्याः शिवाराधनप्रकार
उपवर्ण्यते कविसार्वभौमेन कालिदासेन,
अतो विशेषणानि विधेयत्वेन योजनीयानि-
नियमविधेः - नित्यकर्म्मनिष्ठानस्य -
नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागनुसाधन-
मिति सिंहः। अहनि अहनि इति वीप्सायां
अव्ययीभावः। पाद्यन्तष्टच् समासान्तः॥

सम्पूर्णः प्रथमाङ्कोऽध्यायः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

१. तुरासाहम्— क्वत्सीत्युक्ते गवायां सिवप्रत्ययानुपपत्तेरिति चेत् चिन्त्यमिति हरदत्तः। सहतेरीमभनार्थान्निवृत्तप्रेक्षणात् प्राकृते 'क्वे णीचि क्विब्विधौ' इति वा समाधेयमिति शब्दकौस्तुभे॥ अन्येषा मपि दृश्यत इति दीर्घ इति हरदत्तभट्टोजी।

२. आविरभूत्= प्रकाशोऽभूत्। साक्षात् प्रभृतीनि चेति वा गतिसंज्ञा। गत्युपसर्ग-संज्ञकैस्तिङन्तानां गवायां व समासः, प्रभवतीत्यादौ प्र इति पृथक्पदमेव। समासे हि सति कृत्तद्धितसमासाश्चेति प्रातिपदिकसंज्ञायां ङ्याप्प्रातिपदिकादिति सुब्लुप्तिप्रसङ्गात्, प्राकुर्वन् इत्यादिषु नलोपापत्तेश्च। वारुणीमदविशङ्कुसखा-विश्चक्रुवोऽनवदसाविव राग इति माघः, आविःशब्दस्य प्रवर्हेतः प्रयोगः कविस्वा-तन्त्र्यात् इति मल्लिनाथः। नेह दोषलेश-मपि पश्यामः। ते प्राग्धातोरिति सूत्रे हि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

द्विधा भवत्यातम्। प्रयोगानियमार्थं संज्ञानिमित्तमर्थ-
श्चेति। तत्रान्त्यपक्षे प्राक् चाप्राक् च प्रयोक्तव्याः।
प्राक् तु प्रयुज्यमानाः लज्जां लभन्त इति स्थितमि
ति शब्दकौस्तुभे भट्टोजिः॥

३. अध्यर्धाभि र्नाडिभरुपलक्षित इत्यन्वयः।
वाक्यार्थम्- कुक्षत्र षष्ठीसमासः? प्रतियत्नैवधा
ना च षष्ठी न समस्यते इति निषेधात् अध्यर्ध
-शब्देनोक्तेति हि शेषषष्ठ्या न समासः। तर्हि
कृद्योगा च षष्ठी समस्यत इति वक्तव्यात् कर्तृकर्म
णोः कृति' इति कर्मषष्ठ्या समासः। नच
समासनिषेधस्यानेन वैयर्थ्यं शङ्क्यम्। यतः
शेषषष्ठ्या समासे समासस्येत्यन्तोदात्तत्वेन
भाव्यम्। अन्यतस्तु गतिकारकोपपदात्कृदिति
उत्तरपदप्रकृतिस्वरत्वम्। अत एव स्वरे विशेषः॥

४. सृष्टेः प्राक् - अन्धारादित्यादिना अध्यूत्त
वदयोगेन वक्ष्यमी. गुणानां त्रयमेव विभागो
यस्य तस्मै -

५. यावत् [illegible] समाहारे द्वन्द्वैक
वद्भावः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

६. एतत्त्वं - धातु सृष्टेः केवलः त्वम्-
उदीरयन् विजृम्भयन् - तिसृभिर्
अवस्थाभिः हरिहरब्रह्मस्वरूपाभिः ॥

७. स्त्रीपुंसौ ससृक्षया भिन्नमूर्तिस्ते आत्म-
नागौ । आत्मा जीवे धातौ देहे स्वभावे
परमात्मनि इति विश्वः ।

८. अस्तं विभक्तं रात्रिरिष्टं राज्यहनी
अस्य तस्य । यद्यप्यचतुरादिसूत्रेण
रात्रौ च दिवा च रात्रिन्दिवमिति सप्तम्य-
-र्थे वत्तौ द्वन्द्व इत्युक्तं तथापि दोषा-
च मन्यमह्नि दिवामन्या रात्रिरित्यादौ
कर्मनदत्रापि प्रातेवादेर्कार्धर्चोक्तित्वं
कर्काच्चित्त्वयोगबलादाश्रयणीयम् ॥

११. संघातेन कठिनः (निरवेडसंयोगेन) -
सूक्ष्मः - अतीन्द्रियः । लघुः - उत्पतनयोग्यः
तूलादिवत् । अक्तरूपः कार्यरूपः । प्राकाम्यं
यत्रेच्छत्वम् । स्थूल इन्द्रियग्रहणयोग्यो घटादि-
-वत् ।

१२. नीयते तीर्यते विशेषो इति न्यायः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यश्चेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्। पुरा किल विश्व-
रूपाख्ये त्वष्टुः पुत्रे इन्द्रेण हते सति कुपितस्त्व
-ष्टा इन्द्रस्य हन्तारं वृत्राख्यं पुत्रान्तरमुत्पादयामि
-त्युदाहृत्य वृत्रासुरेण यागं कृतवान्। तत्र इन्द्रशत्रु-
र्वर्धस्वेति मन्त्रे इन्द्रशत्रुशब्दे तत्पुरुषसमासे
प्रयुक्तेऽन्तोदात्ते बहुव्रीहौ स प्रमादादाद्युदात्तः किल
उक्तः। अत एव बहुव्रीह्यर्थो लब्धः पूर्वपदप्रकृत-
स्वरेण। तेनेन्द्र एवास्य पुत्रान्तरस्यापि हिंसकः
सम्पन्न इति श्रुतीतिहासपुराणादिषु प्रसिद्धम्।
भाष्ये च पठितम्- 'दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो
वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो
यजमानं हिनस्ति यश्चेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्'।

१३. पुरुषस्यार्थः भोगापवर्गरूपस्तदर्थं वर्तते इति पुरुषार्थप्रवृत्तिनी। स्फुटमिति।

१४. वेधसामपि विधाता- दक्षादीनां स्रष्टा।

१५. शाश्वतः- शश्वेभ्योऽण्प्रत्ययः। अमया-
-नां भमात्रे टिलोप इत्यनित्यः। नाहिवृष्टि-
लोपविधानाज्ज्ञापकात्। प्लावादुठञ् इति
ठञि तु शाश्वतिकः। भाष्यकारवचनप्रामाण्या-
-त्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशाप्य इत्यनुवाद्यम् । अन्यत्र नास्तीत्यध्याहार्यम् - एवं तर्हि शाश्वते प्रतिषेधो वक्तव्यः । शाश्वतम् ॥ शाश्वतमिति चयुक्तेरित्यनुपपत्तिः । वामनवचः ॥

१७. चतुर्भिर्मुखैः समीहिता - नायं मल्लिनाथोक्तो भिन्नरूपसम्मतो विग्रहः । अतः चतुर्दिक्प्रदर्शि मुखं चतुर्मुखम् । शाकपार्थिवादित्वादुत्तरपदलोपः । नतु त्रिपदतत्पुरुषः । तस्य पारिमाण्यवचनाभावात् सर्वस्थाऽसम्भवात् । तथा च भट्टोत्पलैः - पारिमाण्यमात्रेण त्रिपदतत्पुरुषः । अन्यत्र तु द्विपद एवेति स्थितम् । सुप् सुपा' इत्येकत्वस्य विवक्षणात् । अत्र वार्तिकम् - उत्तरपदेनपरिमाणिना द्विगोः सिद्धमेबहूनां तत्पुरुषवल्लोपसंख्यानम् - द्व्यह- द्व्यार द्वयोः समाहारो द्व्यहः ।
जातः, द्विमासजातः । समाहारे तु चतुर्मुरनीति स्यात् ॥ प्रवृत्तिः प्रवाहः ॥
चतुष्टयी वैखरी [illegible] मध्यमा वैखरी इति । तस्यामनभिव्यक्तवर्णा ध्वनि-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

मात्ररूपा [illegible] परा [illegible] ।
तदनन्तराभिव्यक्तवर्णमात्रा पश्यन्ती द्वितीया ।
तया पदमात्रमयी तृतीया मध्यमा ॥

१८. प्राज्यविक्रमः - प्रभूतपराक्रमः । बीभृत्सम्भं स्वागतमस्तिति शेषः । युगानि इव बाहवो येषाम् । "बाहाधुडौ युगः पुंसि" इत्यमरः ॥

१९. अन्वयः - हिमाद्रिशुद्धप्रकाशानि ज्योतींषि इव वः मुखानि (यथापुरा) पुरा यथा आत्मीयां द्युतिं न विभ्रति इदं किं किन्निबन्धनमित्यर्थः । किंयिदिमित्यनेन वाक्यार्थः परामृश्यते ॥ तुषारेण मन्दप्रभाणि नक्षत्राणि ।

२०. तेजसां निर्वाणात् । सुरत्य देवत्य -प्रकरणादिन्द्रस्येत्यर्थः । अनुक्रीर्णम् - अप्रकाशितमविज्रृम्भितम् - कुण्ठिता अग्रयो यस्येति - मगनधारम् ॥ "स्त्रियः पालीशिन्कीरय" इत्यमरः ॥

२१. दुर्वारः दुष्प्रधर्षः । हतवीर्यस्य पीतनष्ट -शक्तेः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

प्रकाशित साधु: । अत्र भाष्यम्- एवं तर्हि शाश्वते प्रतिवेधो वक्तव्य: । शाश्व -तम् ॥ शाश्वतोमीति चयुक्तोरित्यनुपयोगि -वामनवच्च: ॥

१७. चतुर्भिर्मुरवै: समीरिता - नायं मिश्र-नाकोक्तो भिन्नरूपसम्मतो विग्रह: । अत: चतुर्दिक्प्रदेशे मुरवं चतुर्मुरवम् । शाक्-पार्थिवादित्वादुत्तरपदलोप: । नतु त्रि-पदतत्पुरुष: । तस्य परिमाणिवचनाभावात् सर्वस्थाऽसम्भवात् । तथा च भट्टोजि:- परिमाणिमात्रेण त्रिपदतत्पुरुष: । अन्यत्र तु द्विपद एवेति स्थितम् । सुप् सुपा' इत्ये-कत्वस्य विवक्षणात् । अत्र वार्तिकम् - उत्तरपदेनपरिमाणिना द्विगो: सिद्धये बहूनां तत्पुरुषवद्योपसंख्यानम् - द्व्यह-द्व्यार इव: स्वकारो द्व्यह:) त्रात:, त्रिमासत्रात: । समाहारे तु चतुर्मुरवीति स्यात् ॥ प्रवृत्ति: प्रवाह: ॥ चतुष्टयी प्रवृत्ति: - परा, पश्यन्ती, मध्यमा वैखरी इति । तस्यामनभिव्यक्तवर्णा ध्वनि-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

मात्ररूपा [illegible] [illegible] [illegible]

अत्र कर्णानिष्टदैन्यस्य पाशोः सम्भवात्
Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
दैन्यमिव दैन्यमिति कल्पनात् असम्भवद्
-वस्तुसम्बन्धो निदर्शनालङ्कारः॥

22. मनः शल्यं मनसः शल्यप्रायम् - अपविद्ध-
ग्रदः - त्यक्तगदः।

23. भूमिं विलिखन् - भुवं कर्षन्-
अलातमुल्मुकं ज्ञेयमिति हलायुधः।

24. चित्रन्यस्ताः - आलेख्यसमर्पिताः।
कृष्णं आलेख्यसमर्पिता इवात्यन्तदृश्यतां
गताः।

25. पर्य्याकुलत्वात् स्खलितगतित्वाद्धेतोः
ओघसंरोधः - प्रवाहप्रतिबन्धः। उत्ताना-
-वरोहात्।

26. शशिनकोट्यः - चन्द्रकलाः। पारिप्लव-
कुरवावतंसेषु जटानां मौलिषु जटाजूटेषु

27. लब्धास्पदतयः, लब्धावकाशा इत्य
-न्यत्र। उत्सर्गाः सामान्यशास्त्राणि-
कृतप्रतिष्ठाभङ्गाः, कृतविषयसङ्कोचरूपा
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.
बाधा इत्यन्यत्र। अपवादाः विशेषशास्त्राणि।

Digitized by Sarayu Trust. CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

२९. ... मृदुनानाकुसुमनिचयसम्मूहं तुल्य-
शोभिना नयनानां सहस्रेण।

३०. सहस्रान्नयनेभ्योऽधिकम् - चक्षुभूतः -
द्वा
चक्षुरस्त्वारोपस्य प्रकृतोपयोगित्वात्परिणामा
-लङ्कारः। कर्मं वचो याचस्यतेरयीति याचः।
नलुग्यं समासः। अलुगविधायकादर्थनादीतौ
सत्यम्। तत्पुरुषे कृतीति बहुलग्रहणादलुक्।
तिन दिवस्यौतवास्तोष्यती व्यारकातौ। याच्ञा:
यतीत्यादिना सत्वम्। ये तु तत्र ऋदसीत्यनु
वर्तयन्ति श्रियः पतिरित्यादिसिद्धये तन्मते
पारस्करादित्वात्सुट्। केचित्तु घानाधृक्षिनी
शुनासीरमरुत्वदग्नीषोमवास्तोष्पतीग्रहमेधा
ऋत्व चेति सामान्यापेक्षज्ञापकात् याच्ञा। अलुग्
कस्कादित्वात्सत्वम्॥ इति भट्टोजिः॥

३१. आमृष्टम् आश्लिष्टम् - हे भगवन् मद्-
गृहैश्वर्य्यसम्पन्न! रात्यसीति - वर्तमाने
ऽपि वचनभङ्गा भविष्यन्निर्देशः प्रसिद्धः॥

३२. उदीर्णः उद्गतः। व्यधत्त लोकानां धूमकेतु
-रिवोत्थितः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

३३. दीर्घिकासु - क्रीडावापीषु -
आगारे नगरे परमित्यमरः ॥

३५. कुसुमानां स्तेमं चौर्यं तस्मात्स्तेयादि-
योगात् दण्डाद्। साध्वसं भयं तस्माद्भेनोः
उद्याते प्रावृत्तगति निवृत्तोद्यानसञ्चारः
सन्नित्यर्थः। तापेसत्वे पि गमकत्वात्समा
-सः। तालस्य वनैरङ्क्ष्यते तालत्येव
वन्तमस्येति वा।

३७. सारितां वृत्तिः - प्रानिव्यक्तेः परियाय
- पर्य्यन्तम्।

४०. शाम्येत् प्रत्यपकारेण। नोपकारेण
दुर्जनः। अपकारोत्तरमपकारेण. अत्र
माधवः - वन्दीति। स्तोतर्य्यानन्त्यकृणा-
न्तः। हठहतमाहलाया नु इन्नीति सर्व-
धातुनिवयेनन्तात् सर्वतो ऽस्त्रिच्चार्षादेत्ये
के इति ङीषि सिद्धमिति ॥ सुरवन्दीनां
सुरग्रहस्त्रीणाम् - सुराश्च वन्द्य इति
सुरवन्द्यः - पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु
इति पुंवत्। बालानां नेत्रवारीणां शीक
-रान् बिन्दून् वर्षितुं प्रेमा। शीलम् इति तेषाम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

४३. आक्रीडिन्ते एव्विति आक्रीडाः, आक्रीडाश्च ते पर्वताश्च - पुमानाक्रीड उद्यानमित्यमरः।

४५. विमानानां पथि दिनलीभूते सति। व्योमयानानां मार्गे ऽवहतीभूते।

४६. नः मिषतां अस्मान् पश्यतामेवि। आच्छिद् नसि -द्यते आच्छिद्य गृह्यते॥

४८. प्रतिहतक्रियाः विफलप्रयोगाः। सारवन्ति मेघवन्ति। यस्मिन् हरिचक्रे नो विजयाशंका अस्तीतिति

५१. निष्कम्पशोभूषणम्। तटाघातं नदक्रीडाम् अनस्य शान्तये निवृत्तये - कर्म्मैव बन्धः तं छिन्दन्तीति नन्दी - धर्म्ममात्मज्ञानदनुभूतम् - ज्ञानाग्निः सर्वकर्म्माणि भस्मसात्कुरुते ऽर्जुनः, इति तात्त्विकज्ञानस्य कर्म्ममात्रनाश - -फलश्रुतेः॥

५२. सुरसैन्यानां गोप्तारं मं सेनान्यं प्रयोधाम -

५४. सर्ग एव व्यापारः - सम्पत्स्यते सेत्स्य -ति। गर्जिताद् गर्जितस्य वा अनन्तरं प्रवृत्ताम्

५५. विकटरोषे सत्रैधर्म्मस्य क्षयं दर्शयितुमसाम्प्रतम्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तिऽकृत्तद्धितसमासैः वारसंख्या नमित्यस्य
प्रायिकत्वात्कृत्यनियतेनाप्यभिधानम्-
भाष्ये ओम् प्रणव इत्याचक्षते इति प्रयोगो
पि प्रकृते प्रमाणम् ॥

५७. अन्वयः- संयुगे उद्यतं सांयुगीनं तं
निर्विकल्प्य नीललोहितरक्तसो ऽंशादृते
(अन्यः) कः प्रलहेत ॥ व्याप्रेमाणम्-
सांयुगीनः प्रतित्रनादिभ्यः खानीतिरक्तः
नीलः कण्ठे लोहितश्च वेशो विद्यते स्वामी.
रक्तस्य। वर्णो वर्णेनेति कर्मधारयः॥

५६. परि
प्रश्निच्छप्रभावार्द्धिः- अवागढमहिमाति-
शयः। अन्वयः। ते यूयं संयमास्तिमितं
शम्भोर्मन उमारूपेण अयस्कान्तेन लौह-
वत् आकृष्टुं यतध्वम्॥ समाधिनिश्च
-लं मनः। आकृष्टुम्-

६०- इन्द्वर्थे वा नतु अन्वर्थे।

६३. कार्यसंसिद्धौ विषये या त्वरा औत्सुक्यं
तया। त्रिगुणं दृढं वेगो यत्य तेन।

६४. अन्वयः- अथ स पुष्पधन्वा ललित-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

अयस्कान्तेन मणीनिवोर्वेण
लोहस्य अयोधातुमिव।
तेन तुल्यं क्रिया चेद्वातेरेतं नीतपत्यधो मुखः॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

योविद्रुलताचारुहस्तं नाम्नं दत्तवलय यदाऽऽह
कण्ठे आसज्येत्यादि। रतेः स्मरप्रिया तस्याः
वलयपदानि कङ्कणस्थानानि अङ्कोऽस्येह
घस्य स तथोक्तः।

सम्पूर्णा द्वितीयाङ्कटिप्पण्यः॥

अथ तृतीयसर्गटिप्पण्यः -

१. अन्वयः- मधोनोऽक्ष्णां सहस्रं निदधान्
निहाय तस्मिन् युगपत् पपात। प्रायः
प्रभूणामाश्रितेषु गौरवं प्रयोजनापेक्षितया
प्रयोजनापेक्षितया कार्यार्थित्वेन। प्रायो
भूम्ना। गौरवम्- आदरः। परतन्त्राः
प्रभवो न गुणतन्त्रा इति भावः॥

२. अन्वयः- स नासवेनासनसोन्मुखीमितो
निमीदीते विसृष्टभूमिःसन्। भर्तुः प्रसादं मूर्ध्ना
प्रतीतन्य मिव एनमेवं वक्तुं घात्रमत॥
दत्तावकाशः, प्रतीतन्य- तस्माद- मिथोऽ
न्योन्यं दृष्टिविनिमयस्य।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

३. हे [illegible] आज्ञायय तादीत्ति शेवः लोकेषु ते मत्करणीयमस्ति। सस्मरणप्रवृत्तमनुग्रहं आज्ञया संवर्धित-मिच्छामि। इत्यन्वयः। शीतलार, शीतयुं-निशेमेत्यर्थः। सापेक्षत्वे पि गमकत्वात्समास उत्तरवाक्ये मच्छब्दप्रयोगान्न पूर्ववाक्ये तच्छब्दप्रयोगनिर्बन्धः। आज्ञया नियोगेन।

४. अन्वयः- पदकाङ्क्षिणा केन नितान्त-दीर्घैस्तपोभिरभ्यलूया नीनेता। यावत् (स) आहितसायकस्यास्य मत्कार्मुकस्य निदेशावर्ती भवति॥ अभ्यलूया - ईर्ष्या द्वेषो वा। निदेशावर्ती - आज्ञावशः आहितसायकस्य = संहितबाणस्य। भवतीति वर्तमानसामीप्ये भविष्यन्नि-देशः॥

५. अन्वयः - तव असम्मतः कः पुनर्भव-द्वेशभयान्मुक्तिमार्गं प्रयत्नः। त आरेचित भूचतुरैः भुवनानां कटाक्षैः (न्चिरं) वशीचरं तिष्ठतु।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri

आरोचितानि: [illegible] पैर्धीतिताभि: ।
ईषद्भकीकृताभि: । चतुरै: मनोरमै: । निर्वाण
-पक्षम् ॥

६. अन्वय: - उद्यानतो नीतिमध्यायि-
तस्यापि ते द्विष: कल्यार्धधर्मो पुनरुद्ओच:
सिन्धोस्तटावेव वीडयामि वद ॥ शत्रेण.
प्रयुक्त: रागो विषयाभिलाव एव चरो येन.
सिन्धो:- नद्या: । वीडयति वातयतीति नया:
पक्षे ॥

७. एकपत्नीव्रतदु:खशीलाम् - कां नितम्बि-
नीम् - व्रतं पातिव्रत्यम् स्वयं गृह्णातीति
स्वयंग्राहा - विभाषा ग्रह इति णप्रत्यय: ।
गृह्णातीति व्युत्पत्तिमात्रपुरस्कारेण कानेना
-यं प्रयुक्त: । निरङ्कुशा: कवय: इतिवत्कीत्
अन्ये च गौरजनात्कर्मणो घञ् इत्याहु: ॥

८. सुरतापराधात् - अन्यासङ्गात् - पादा-
नत: प्रणत: ।

९. विप्रलब्धहतपुत्रधात्री: । उदास्ताम् ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

१०. अन्वयः- तत्र प्रतीयमानम्

अन्ये धनिनो मम के। न केवलमत्यर्थः।
हरः पिनाकी चेत्यतिदारुणः। किं शब्दः
कुत्सायाम्- कुत्साप्रश्नवितर्केषु किं किराऽ
इष्यते इति शाश्वतः॥

११. अन्वयः- आरवण्डल उत्तेदशाद् पादं
आक्रान्त्या। आक्रमणेन सम्भावितं पाद-
पीठं यस्मिन् तथा तथा। तत्रीस्तेऽर्थे
मनोऽभिलषितेऽर्थे इत्यादि॥

१२. अन्वयः- हे सरवे! सर्वमेतत् त्वयि
उपपन्नम्। मम कुलिशं भवांश्च उभे
अस्त्रे - इत्यादि- कुण्ठं प्रतिबद्धप्रसरम्।

१३. हे सरवे ते तव सारं बलमवैमि वेद्मि -
अतः खलु - अत एव। कृशेन भूधरताम्
अनेन त्वेव इत्यादि- उद्धरणाय - क्रियार्थो
- पपदस्यानि न इति चतुर्थी॥

१४. प्रतिपन्नमल्पं - अङ्गीकृतप्रायम्।
ईप्सितमेतदेव निबोध - हृदयस्थं बुध्यस्व।
शंस स्तुतानित्यस्य ग्रहणम्। आङः शासि इच्छा-
मिते तु आत्मनेपदी आशास्येषु स्वतन्त्रः पठ्यते॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

१५. अन्वयः- हि अमी देवा: तस्याम् भवत्यं वीर्यप्रभवं सेनान्यमशंसन्ति। ब्रह्माऽभूरित्यादि ब्रह्मणां सद्योजातादिमन्त्राणाम्- अङ्गानां हृदयादिमन्त्राणाम् भूः स्थानम्। नश्चो भाषायां प्रयोगो वार्तिककारमतेन साधुरिति कैयटः॥

१६. अन्वयः- यतात्मने तस्मै हिमाद्रेः प्रयतो तनूजामित्यादि। यत अनाकुल आत्मा बुद्धिर्यस्य, नियतचित्तस्य। योक्तृ- यतश्च निर्धारणे इति सप्तमी। नेतुं पीतेदायिनीं कर्तुम्॥

१७. अन्वयः- नगेन्द्रकन्या च गुरो र्नियोगा -त् अधित्यकायां तपस्यन्तं स्थाणुमन्वास्त इति .... स वर्गः सप्तर्षीणामधिः- सोऽस्मद्गो- गणा: सप्तर्षीणामधिः मम गुरुश्चर:॥

१८. अन्वयः- तद् सिद्धौ गच्छ... अयमर्थो ऽर्थान्तरमाक्षिपन् बीजाङ्कुरः उदयात् प्राक् अम्ब इव त्वामुत्तमं प्रत्ययमपेक्षते॥

अर्थान्तरमाक्षिपन्- साध्यः। प्रत्ययोऽधीन -शायश्च स्थानेऽधमालहेतुषु — अत्र कारणे ऽर्थे प्रयुक्तः। अन्तरलक्षणेऽपि यथा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अलं विग्रहे [illegible] पार्वती सादिन-
-ध्वमपि त्वां विना नैतत्लभ्यादेवेत्यनीति
भावः ॥

१९. अत्यगाति स्तवैव नामेति मैत्रेयीयम्-
अन्यसाधारणं न भवतीति स्वभिन्नकरणा
-योग्यम् । अप्यप्रसिद्धे यशसेहि पुंसामनन्य
साधारणमेव कर्म्म ॥

२०. अहो बत इति सम्बोधने - अहोवतानुकम्पा-
-यां खेदे सम्बोधने विस्मये - इति विश्वः ।
आश्चर्य्यं विक्रमो सि । आश्चर्य्यं स्पृहणीय-
-श्चेति नानार्थकोशः ॥

२१. अन्वयः - हे मलय ! असौ मधुश्च ते
साहचर्य्यादनुक्तोपि सहाय एव । समीरणो
हुताशनस्येति नोदर्थिता भवेति केन या-
दिश्यते । अत्र मधुसमीरणयोरुक्तिमन्तरेण
सहायताकरणं सामान्यधर्म्मः । तत्र नान्य
-ज्ञेय वस्तु प्रतिवस्तुभावेन पृथग् निर्दिष्ट इति
प्रतिवस्तूपालङ्कारोयम् ॥

२२. शेषामिव - प्रसादत्तां मालामिव -
प्रसादान्निर्जनिर्मास्मदाने शेषेति कीर्तिता
इति विश्वः ॥ प्रोत्साहनार्थेन ताडनेन ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

शेवामिवाज्ञामित्यत्र साधकबाधकप्रमाणाभावात्
उभयोत्प्रेक्षयोः सन्देहसङ्करः। यदि सर्वो शेवायि
दत्ता तदा तामाज्ञामिवेत्युपमा। अथ न दत्ता तर्हि
शेवात्वेनोत्प्रेक्षिता। शेवादानन्तु सन्दिग्धमिति॥
आस्फालनमुद्धर्वणार्थम्॥ to cheer up.

२३. अन्वयः स अभिमतेन सरक्षा साधनेन ---
साशङ्कम्- संकटमापतिततमे सम्भ्रमम्-
शीर्त्वा मृत्वा सर्वथा देवकार्यं साधयिष्या-
मीति कृतनिश्चय सन्नित्यर्थः॥

२४. अन्वयः- तस्मिन् वने संयमिनां मुनीनां
तपःसमाधेः प्रतिकूलवर्ती मधुः सङ्कल्पयोनेः
अभिमानभूतमात्मानमाधाय जजृम्भे॥ समाधि
-मतां वाचंयमानाम्। तपोलक्षणः समाधिः
चित्तैकाग्र्यम्- सङ्कल्पयोनेः- मनोभवस्य-
कुसुमपल्लवकोकिलकूजितादिलिङ्गवातुल्येन
प्रादुर्भूत॥ आत्मानम्- स्वरूपं स्वभावम्॥

२५. अन्वयः- उषारश्मौ तमसं विलङ्घ्य
कुबेरादेशं गन्तुं प्रवर्तते (लाते) स दोलेणा दैर्
इत्यादि। तमसं- दोलेणायनकालं सक्रम-
कालश्च- अन्धाण्डे मोतक्रम्य॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

ग्रन्थं चलितुं समर्थान्तरम्। उष्णारश्मौ सूर्ये लाहलिनि च नायके। स्वभर्तरि लक्ष्मयो-
-ल्लङ्घनेन परानुरागसक्तीति प्रवृत्तेलीति स्त्रियो
दाक्षिण्यादनुक्तिश्चेदा दुःखान्निश्वसन्तीति
भावः। मुखेनाग्रभागेण वक्त्रेण वायुं
प्रेरयामास। उत्तरायणेलीति मलयानिलाः
प्रवृत्ता इति भावः॥ अत्रोदीच्यां वरपरिग्रह-
भूतप्रतिनायिकात्वम्, उष्णारश्मौ नायकत्व-
-मारोप्यते, गमने नायकव्यापारविशेष:,
एवमन्यत्रापूह्यम्। अतः समासोक्तिरलङ्कार
इत्यठणागिरिनाथः। मल्लिनाथस्तु -
केवलविशेषणसामर्थ्यादेवाप्रस्तुतप्रतीतौ
समासोक्तिरलङ्कार इच्छते। अत्र तु विशेष्यसाम-
-र्थ्यादपि नायिका प्रतीयते। तस्माच्छब्दश-
-क्तिमूलोयं ध्वनिः॥ गन्धवहः- वहतीति
वहः- पचाद्यच्। ततः कर्मणः शेषत्वविवक्षया
षष्ठीसमासः। अन्यथा कर्मण्यणीति गन्ध-
-वाह इति स्यात्। तथा च -
साध्वस्य मङ्गलनमम्बुजलोचनायाः वक्षोजयोः
कनककुम्भविलासभाजोः। आलिङ्गतीति प्रसभ-
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.
मक्षामदोषमलमादधन्यत्तमेव मलयाच्चलगन्ध-
-वाहः॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

श्लो २६. अन्वयः — अहो लयः त्वदन्धात् प्रभृत्येव तथल्लवीन कुसुमानि अलूत। प्रकाण्डात्- भाष्यकार वचनात्प्रभृतियोगे पञ्चमीति कैयटः। भाष्यञ्च मूलात्प्रभृत्यग्रात् वृक्षांस्तक्षणुवोत्तरतीति कार्तिक्याः प्रभाति अग्रहायणी माल इत्यादि। अजीजनत्- आशीर्लिङि तो नूपुरो यस्य तेन- शीङ्जिधातो - रुत्कर्मकात्कर्तरीक्तः ॥ पादाहतः प्रमदया विकलत्यशोकः शोकं महातिबकुलो मुख शीधुसिक्तः। आलोकितः कुरबकः कुरुते विकाशमालीडितासितलक उत्पलिन्दो वि - भाति ॥

पद्यः

२७. अन्वयः — प्रवालोडुम्बराहृत्यचे नवकृत - वाणे समाप्तिं नीते सति लय इत्यादि। पल्लवाङ्कुरा एव आरुणा पत्राणीव पक्षा यस्य तस्मिन्- अत्र प्रवालपत्रेत्यायेन - देशविवर्त्तिरूपकं मधोरेवुकारत्वं रथयत् नामाक्षराणीवेत्युत्प्रेक्षायां निमित्तमात्येन देशविवर्त्तिरूपकोत्थापितोत्प्रेक्षा ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

२८. अन्वयः- [illegible] वर्णप्रकर्षे लीलानिर्गन्धतया चेतो दुनोति स्म। प्रायेण विश्वसृजः प्रवृत्तेः गुणानां सामग्र्यविधौ पराङ्मुखत्वी ॥ सांकल्यसम्पादनविषये। सर्वत्रापि वस्तुनि क्वाप्यचिद् वैकल्यं तस्या-दयाते यथा चन्द्रे कलङ्कः।

२९. अन्वयः- अविकाशभावाद् बालेन्दु वक्त्राणि। आतैलोहितानि पलाशानि बलतेन समागतानां वनस्थलीनां सद्यो नवक्षतानीव बभुः ॥ सद्यो पलाशानि-पुराणीक्वातितलौहित्याभावादिति भावः ॥ पलाशो किंशुकः वर्ण इत्यमरः ॥

३०. अन्वयः सुस्पष्ट एव लग्नद्वितीया एवाञ्जनभक्तयः रुजलरचना लतामिश्चित्रे चित्रवर्णे। तैलकं पुष्पावनद्धोवमेव तैलकं वैशेषिकम्। रागेण- रक्तेन। तेनैव लाक्षारागेण- रक्तवर्णेन लाक्षारागेण च रागो लाक्षारसे पि चैति मेदिनी:। भक्तिर्नि-वेशो भागे रचनायामिति शब्दार्णवः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

३१. अन्वयः- क्रियालुभिः किन्नरीणां रजःक्लौ-
विर्द्धौतदृष्टिपाता मदोद्धता मृगाः पत्र्यनिलं
मर्मरपत्रमोक्षा वनस्थली निर्विचेरुः॥ दृष्टीनां
पाताः भ्रमाः येषान्ते। मर्मरशब्दवन्तो जीर्ण
पर्णपाता यासु। मर्मरः शुष्कपर्णानामिति
यादवः। अयञ्च शुल्लादिशब्दवद् गुणीनि
वर्तते॥

३३- अन्वयः - हिमकषायाद् विशदाधराणा-
मापाण्डुरीभूतमुखच्छवीनामित्यादि-
विशदा नीलजाः। अफालस्तत्कषायगमात्
निर्मलोऽधरो यासाम्- हिमस्य तुषारस्य-
स्वेदोऽम्भः- उद्भूतस्वेदः, घर्मः। स्वेदाविन्दवः
किन्नरीणां पत्रभङ्गातिलकेषु विच्छिदुर
तामजनमन् इत्यर्थः॥

३२. अन्वयः- चूताङ्कुरास्वादकषाय-
कण्ठः पुंस्कोकिलो मधुरं चुकूज यत्
तदेव --- कषायकण्ठो रक्तकण्ठः-
रक्तत्वं च सुस्वरता। पुंग्रहणं प्रागल्भ्ययोन
-नार्थम्- अनेन कोकिलालापस्योद्दीपनत्वं
प्रतीयादितम्॥ त्यजत मानमलं वत विग्रहैः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

न पुनरेति यातं वयः। परमतामिरितीव
निनेदिते स्मरमते रमते स्म वधूजनः,
इति च रघौ ॥

२४. अन्वयः- स्थाणुनौकलत्वात्त्वेन आ-
-कालिकीं तां मधुप्रवृत्तिं वीक्षेत्यादि।
समकाल आद्यन्तावत्या:, अकाल-
भवत्वादुत्पत्त्यनन्तरविनाशीत्यर्थः
आकालिकडाद्यन्तवचन इति समानका-
लादिकट्प्रत्ययः प्रकृतेराकालादेशश्च
निपातितः ॥ नित्यद्वैकारणाम् ॥

२५. अन्वयः- आरोपितपुष्पचापे रतीद्वितीये
मदने तं देशं पवने सौते द्रुमाणि कुसुमागत-
स्नेहरसानुविद्धं क्रियया विभ्रु: ॥
आधिज्यकौसमकार्मुके- स्फोटसारी।
अङ्गमाने च मिथुनाने। अनुविद्धं सम्पृ-
क्तम्। भावं शृङ्गारभावम्- क्रियया
कार्यभूतया चेष्टया-

२६. ईदृक्: त्वां प्रियामनुवर्तमानः लब्-
ऊसुमैरुपात्ते मधुवयौ। शेषं स्पष्टम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

स्पर्शसुखेन- अकम्पडुयत् कम्पितवान्।

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

३७. अन्वयः- ततः करेणुः पद्मेन पद्मगन्धि जलं गजाय ददौ॥ पद्मेन करेणुः तस्यो गन्धोऽस्त्येव। पुरा नार्पितं जलम्। सन्तोषयामास॥

३८. अन्वयः- किमुस्वः श्रमवारिलेशैः किञ्चिदुद्भासिततनुलेखं पृथ्वासनाघूर्णितनेत्रशोभि प्रियामुखं गीतमध्ये चुचुम्ब॥

स्वेदोदबिन्दुभिः। किञ्चिद् निश्लोषितं विशेषणं यस्य तत्। पृथ्वीजनमयेनोक्ता-ष्यां नयनाभ्यां शोभत इति तथोक्तं प्रियामुखं चुचुम्ब। चुबि वक्त्रसंयोगे परस्मैपदी. अन्योदित्त्वाद्घातनत्वेन चारितार्थ्यात्कर्तृस्थं शापनत्वम्। नाभ्यानुक्तस्य शापनत्वम्- अतः स्वार्थेणित्यायमाद्येवेति नागेशः॥

अत्र केचिन् 'चुचुम्बे' इति पठन्ति कर्मकीर्तेहेतौ च तमर्थयन्ते- तन्न। तत्र (कर्मकीर्तेहेतौ) वर्तमानाद्धातोः कर्तरीत्यर्थे वीनेगमनादेर-हात् तत्कर्तृमात्रे प्रत्ययौचित्येन द्विवचन-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

बहुवचनान्तेनोदाहरणानि। नत्वेकवचना
-नानि। अत एव सूत्रेऽत्र एकवचनान्तानि
नोदाहृतानि। तासत्यो रीति सूत्रवदुदाहृतं
सीतेले इति तु छान्दसम् इति शब्देन्दु शे-
खरे नागेशभट्टः॥

२६. अन्वयः- पर्य्याप्तपुष्पीते---

पर्य्याप्ताः समग्राः पुष्पस्तवका एवस्तना
यासां तस्याः सकाशात्। स्फुरन्तः प्रवालाः
शोभमाना एव ओष्ठा यासान्ताः।

४०. अन्वयः- तस्मिन् क्षणे हरः श्रुताप्सरो
-गीतिरपि प्रत्यक्षानपरो बभूव। आत्मेश्वरा
-णां विघ्नाजातु समाधिभेदभ्रमो न भवेत्॥
प्रत्यक्षाने आत्मानुसन्धाने परः। ईश्वराणां
नियन्तृणां योगिनामित्यर्थः। ध्याने त्रये
प्रत्यक्षानं नित्यानित्यविचारणे। इति
शाश्वतः॥

४१. अन्वयः- चापलाय मा(अवत) इति
व्यनैषीत्। "संज्ञा स्यात्चेतना नाम
हस्ताद्यैरर्थसूचना" इत्यमरः। इङ्गित्या
अङ्गुल्याः संकेतेन सूचनया। हेमवेत्रः हेम-
दण्डः॥ [illegible] दिग्गजोऽयमदत्येति-मनुशी-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

४२. ~~दीक्षा सातत्यं दीक्षातत्परैरेवं~~ --- सर्वमेव दानं तच्छास्त्रात् चिकीर्षितारम्भमिव अवलम्ब्य ॥ निश्चलमङ्गं - आलेख्यविन्यस्त क्रियम् ॥

४३. अन्वयः- कामः प्रयाणे परः शुक्रमिव तस्य दृष्टिप्रयाते पौरोहित्य प्रान्तेषु ललाट-नमिलशारवं भूतपते ध्यानास्पदं निवेश ॥ प्रदोषतः शुक्रो यस्मिन् देशे तमिव। प्रयाणे यात्रायाम्। संसक्ता अन्योन्यसंश्लिष्टाः। समाधिस्थानम् ॥ दृष्टिप्रयातः- दृष्टिविषयः। तरं तूलं तरं कक्षः प्रयातो। रोध उच्यते इति हलायुधः ॥

४४. अन्वयः सुस्पष्टः। निकटभावी गात्रभ्रंशो यस्य स। साध्वसेन आस्तृताम्। देवदारुद्रुमोत्सङ्गविशेषलक्ष्य वेदिकायां तन्मूलस्थापिण्डिकायाम् ॥ अत्र भाष्यम्- इषुकादिप्रकरणे तन्त्रादीनां कक्षासि बहुलम्" इति वार्तिकव्याख्याने तन्त्रं प्रवेम। तन्त्रं प्रवेम। विष्वं पश्य। विष्वं पश्य। स्वर्गं लोकम् स्वर्गं लोकम्। अग्नये स्वाहा। सोमाय स्वाहा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

इत्यामुराहरति ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

४५. अन्वयः- वर्ष्मऽभ्रुवन्धोति ---- उत्तानपाणिद्वयसंनिवेशात् अभ्रूमध्ये प्रकुल्लराजीवनमिव (स्थितम्) । वीक्षणेन । निश्चलोत्तराङ्गम्- उत्तान ऊर्ध्वतलो यः पाणिद्वयस्य सन्निवेशः संस्थानम् ॥ वैजयन्तीकारः - प्रोक्ता नहीतिका तका । वर्ष्मोत्तिका परिकरः वर्ष्मऽभ्रुवोति व्यक्तते इति हलायुधः ॥

४६. अन्वयः- सम्यक् स्फुटः । भुजक्रमेन उन्नमय्य नद्धो त्रयात्मूहो येन- कलापो भूषणे वर्हे तूणीरे संहते ऽथे चेत्यमरः । कृष्णत्वन् अनेन ग्रन्थियोगेन वहिस्ता आसीत् ॥ अक्षसूत्रम्- जपमाला ॥

४७. स्निग्धोत्पक्ष्मा ईषत्पक्ष्माणः स्निग्धपक्ष्माणः स्निग्धाश्च ते पक्ष्माणः कनीनिकाः येषां ते- भ्रूविक्षेपे- नासाग्रनिवेशदृष्टिम्-

४८. अन्तश्चराणां मरुतां निरोधात्- आविद्यमानमर्वाक्स्रोतम्- अनुद्भतवीचि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

को हृद्य हुआ। निर्वाणदेशे -

४८. धीरोल्किनमनाध्वेदेण ग्रामवधै :
धीरलः समागतैः तेजः कणैः विलतन्-
समधिवक्कोमलां नवशाधोल्कलां ज्ञापयनम्

५०. अन्वयः- स्मरत्तपामृते मनसाप्यधृष्य
-मयुग्मनेत्रामित्यादि। विधमास्त्रम्।
मनसाप्यनाक्रमणीयम्। विश्लक्षपातिः।

५२. अन्वयः- अक्ष निर्वाणभूयेष्ठंमत्यवीर्य्यं
वकुर्वाणेन संधुक्षयन्तीन वनदेवतास्यो
मनुप्रयाता स्थानरराज कन्यादृश्यत॥

निर्वाणेन नाशेन भूयेष्ठं नष्टप्रायम्
संधुक्षयन्ती - पुनरुज्जीवयन्ती.

५४. आवर्जिता ईषदानमितवपुः। पल्लवेनो
किलालमवनती - घर्मार्ताः पुष्पस्तनकाः
कुसमगुच्छाः। लता वल्लीन-

५५. अन्वयः - स्थानादिदा स्मरेण .....
नितम्बात् स्खलतां केशरदामकाञ्ची पुनः
पुनरवलम्बमाना- धारयन्ती- निसेवमो
-ग्य मह्यमिवेदमना गमेन।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

५६. अन्वयः- सुगन्धिनिश्वासावि-
वर्द्धितश्रमेत्यादि। प्रतिक्षणं
स त्वरया चपला दृष्टिर्यस्या सा।
बिम्बाकारोधरः बिम्बाधरः।
बिम्बाधर इतिवत्तौ मध्यपदलोपिन्या-
मिति वामनः। अन्यका अधरबिम्ब
इतित्यात्। लीलया अरविन्देन।
अश्वधात्रादिवत् तात्कर्म्यार्थे षष्ठी-
समासः। न तु मनुष्यीत्यपत्यः। प्रकृति-
विकृतेरभावात्॥

५७. अन्वयः- सर्वावयवानवद्यामित्या
दि- पुराशङ्कांसे भूयोपि चक्रमे - सर्वाव
यवेषु अगर्ह्यामू- लज्जानिमित्तं न्यूनता
-मावहन्ती॥

५८. अन्वयः — उमा च भविष्यतः
पत्युः शम्भोः प्रतीहारभूमिं तमात-
साद। स च अन्तः परमात्मसंज्ञं
परं ज्योतिः इच्छा योगाद् उदारराम॥

५९. ततः चोलप्य (नालुके:) (अधः)
न कणाग्रः अधः भूमेरधः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

आतिथ्यत्वेन धृतः स्वीयवेशनमूभागतेभ्यः
प्राणोऽनिले वले। हड्डायो पूरिते गन्धरले
प्राणास्तु जीवते इति हेमचन्द्रः॥ अतोयं
नित्यबहुवचनान्तः पुंल्लिङ्गश्च।

६०. तस्मै भगवत इति क्रियाग्रहणाच्चतुर्थी।

६१. प्रीतीयातपूर्वं मन्दीर्यीते त्यन्वयः।
स्वहस्तोपचितः। शिशिरात्मजस्य नलस्य
सम्बन्धी। पल्लवनञ्जलिमिश्रः = किसलय
रूपकलामिश्रः। पुष्पोच्चयः - हस्तादाने
वैरल्येण इति धात्विषयत्वात्कर्मीनामयं
प्रामादिकः प्रयोग इति वल्लभः। भिन्नोन्यः।
सञ्जातः कुल्लो वर्ण इति हेमचन्द्रः॥

६२. मूर्ध्ना नमश्चक्रजाय प्रणामं चकार।
क्रियाग्रहणात्सम्प्रदानत्वम्।

६३. अन्वयः- ता भवेन अन्यभजं पतिमा-
-मुद्वहे इति तथ्यमेनामभिहिता। हे ईश्वर-
आहृतयः कदाचित् लोके विपरीतमर्थं
न प्रकाशन्ति। अन्यां न भजतीत्यनन्यभज-
-म्। सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पूर्वपदस्य पुंवद्भावः।
विलंबायै नमोऽधीयम्॥ बोधयन्ति॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

६४. अमन्दभावः — मदनोऽपि वाणावेधसमयं प्रतीक्ष्य शैलसुतो जिनमध्यं विवासुः गौर्म्याः सन्निधाने पद्मोद्भवे कृतलक्षः सन् चापज्यामत्यन्तमाचकर्ष ॥

६५. अथ त्रौरी तपोवनेन गिरिशाय ताम्रचूडेन कुरुते — बालामुपनिन्ये इति योजना कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानमिति चतुर्थी यद्यप्यत्र ददातिकर्मणा इति वर्तिकाशब्दैः भरिक्तं तथा तत् अर्घ्यकरम् । अतएव तस्मै ददाति अर्घ्यपाणि उपनयति इत्यादि ॥

६६. अन्वयः — त्रिलोचनश्च पत्नीप्रियत्वात् तां प्रतिग्रहीतुमुपचक्रमे । पुष्पधन्वा च सम्मोहनं नाम अमोघं वाणं धनुषि समधत्त ॥ अर्धाङ्गप्रियत्वात् । पत्न्यधिनः प्रिया यस्य तस्य भावः तत्ता तया हेतुना ।

६७. हरस्तु चन्द्रोदयारम्भे ऽम्बुराशेरिव त्रैलोक्यक्षोभलुप्तधैर्यः इत्यादि चन्द्रोदयारम्भे — सुधाकरोऽस्तकाले नयनानि निपातयामास ॥

६८. [illegible] सन्दोमलनीयसदृशैः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

पुलकितैरिति सर्वत्र। दीर्घमिति वर्णे साचि तिर इत्यमरः।
साची कृता - क्वौ चेति दीर्घः। अव्ययस्य
दीर्घत्वं नेति पक्षे साचीति दीर्घान्त एव
पाठः। वस्तुतस्तु "अव्ययस्य दीर्घत्वं नेति कै-
यटेन। तन्निर्मूलम्। स्वस्ति स्यादीति तु महा-
भाष्यया चेरभावात्तिद्धम्। स्वस्तीत्यादि
त्याये पक्षे स्यादीति चेदस्तु॥" भट्टोजिः॥

७०- दक्षिणनेत्रप्रान्तसंलग्नमुष्टिम्। मण्डली-
कृतलौम्यकोदण्डम्। अवनतबाहुमूलम्।

७१. ३ तयत आस्कन्दनेन प्रवृद्धकोपस्य
"अतार्कितेतु सहसा" दुष्प्रेक्षं दुर्दर्शम्॥

७२. अन्वयः- हे, प्रभो क्रोधं संहरसंहर
इति मरुतां गिरः रथे यावच्चरन्ति तावत्
भवतेऽजन्मा स वाहैरित्यादि॥ विनतेय-
चापले द्वे भवत इति वक्तव्यमितीङ्गितानि॥

७३. वध्वीयनाचीमरन्ध्रः- अतिदुःसहान्
विभवसम्भवेन करणानां आपारं यौत
नश्रता मोहेन रतेः रणपरान्तभर्तृचेष्टा सम्यक्
उपकृतेनासीत्। मोहेन दुरनुसंवेदनाभा-
वात्तस्योपकारकत्वोक्तिः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

अभिमुखः स्वीभवने सङ्के आक्रोशने पिच-
इति वैत्रयन्ती ।

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

७४. अन्वयः — तपस्वी भूतपतिस्तपसो
विघ्नं तमाशु वह्नी वनस्थोतामिवावगम्य
इत्यादि । अन्तरायभूतम् । तपोनिधः ।
आज्ञानि दीक्षामिव नक्षे ॥

७५. शैलात्मजा निर्वर्तयाहा सती
पक्षाच्छिदं गगनस्थामिमुरवी जगामे-
ति सम्बन्धः ॥

७६. अन्वयः- सपदि अद्रिहिमवान्
रुद्रक्रोधज्वालेन मुद्रितनेत्रां दयार्द्रां
सुतां अज्ञाभ्यामादाय दृक्तयोः सं-
सक्तां नलिनीं धारयन् देवहस्तीव
रयेणापतीकृतशरीरः सन् पन्था-
नमुद्दिश्य जगाम ॥ पन्थानं प्रतिगता
प्रतिपथा । प्रतिपथा प्रतिर्यस्य स
तथोक्तः ॥

सम्पूर्णा स्तुतीयस्तर्कतीर्थः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अथ चतुर्थ सर्गाटिप्पणम्य: ।

१. अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवधू: अतिशयवेदनं नववैधव्यं व्रतिपादयिष्यता विधिना विबोधिता ॥ मोहो मूर्च्छा परम् अयनम् आश्रयो यस्मा: मोहैकशरणा । परायणमभिप्रेते तत्परे परमाश्रये इति यादव: । व्रतिपादयिष्यता अनुभावयिष्यता, कठिनहृदयम् ॥ ३ ज्ञानयुक्ता अन्धीरे ॥

२. प्रियं कामं अतसयोरन्तर्हितगतयो: नित्यं दिहृक्षमाणयोरित्यर्थ: । तयो: लोचनयो: दर्शनक्रियापेक्षया सम्बन्धे बली ।

३. अन्वय:- आर्ये जीवितनाथ! जीव- -सि इत्युक्तिमात्रेण तथा अभिधाय पर: ॥ दीप्तौ प्रत्युक्तौ केवलं हरकोपानल मात्मा ददहो ॥ प्राणेश्वर!

४. वैक्लव्या- दीप्तिलुण्ठनेन । वैवस्विनेऽ- -हा, वारिदेवतावती ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

५. अन्वयः - तेन यत् करणं कानिमत्तया विलासिनामुपमानमभूत् । तादृदामित्योदि। करणं साधकतमे क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपीति अमरः। विदीर्घ्ये दिवादेराकृतिगणात्वात्। दिवादिस्तु श्यादिर्यदाकृतिगणः। तेन क्षीयते मृग्यतीत्यर्थेसाढ्रे रित्याहुरिते महोज्ञः। वस्तुतस्तु दद्यत दृणाते दीर्यते वेति भाष्यकारप्रयोगाद् दधातु दैवादिकोप्यस्तीति बोध्यम्॥

६. अन्वयः- कृतसेतुबन्धनो जलसंघातो नलिनीमिव त्वदधीनजीवितां मां क्व नु विनिन्दीर्घ्ये क्षणभिन्नसौहृदः (सन्) विद्युतोसि॥ त्वदायत्तप्राणाम् क्षणेन भिन्नं त्यक्तं सौहृदं सौहार्दं येन सः। सु शोभनं हृदयं यस्य स सुहृद्यः। ततः स्वादिषु पाठाद् हायनान्तयुवादिभ्योणीति अण्। नतु सुहृच्छब्दात्। तत्र हि सि हल्लोपगर्भे सिच्यन्तेपूर्वपदस्य चेति उभयपदवृद्धौ सौहार्दमितीत्स्यात्। अत्र नामनः - "सौहृदसौहृदश्रीकावाढ्यौ। हृद्भगसिन्धवन्ते॥"

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Satya Vrat Shastri Foundation and eGangotri

अन्ये तु [illegible] इत्यपपाठोऽनुत्तापकादैरूप्यम्।
अन्यथा एकतरस्य पाठवैयर्थ्यम्। बहुलग्रहणा
-द् सुहृदयशब्दे नोभयपदवाच्यरीतीरे॥

७. अन्वयः- त्वं मे विप्रियं कृतवान् नासि।
मया च ते घातिकूलं न कृतम्। अकारणमेव
विलपन्त्यै रत्नये किं यशो न दीयते॥

८. अन्वयः — हे स्मर! श्रोत्रस्खलीलतेषु
मेखलागुणौ बन्धनं स्मरसि उत। च्युत-
केशरदूर्वितेक्षणान्यवतंसोत्पलताडनानि वा
स्मरसि॥ नामजल्पितेषु, परनायिका-
नामग्रहणेषु इत्यर्थः। श्रोत्रं नाम्यचरो
कुले इति विश्वः। मेखलागुणैः रसना-
दामभिः। भयैः विकल्पैः कलुषिते नयने
येषु तानि।

९. हृदये वससीति स्मरवाक्यानुवादः।
परस्य रञ्जनार्थं यदसत्यभाषणं स उपचारः॥
उपचारपदम्- उपचारस्य प्रलादनस्य पदं नस्तु
इति- प्रलादनाराधनोपचाराश्चेति हलायुधः॥
इदमुपचारपदम्। न चेत् त्वमनङ्गः कथं
रतिरक्षता इति सम्बन्धः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

१०. परलोकं यातं नवप्रवासिनः -
अचिरप्रोषितस्य। एष जनः, एष
लोको दैवेन प्रतारितः॥

११. हे प्रिय! घनशब्दविह्वलाः प्रियाः
कामिनां बलात्कारं प्रापयितुं क ईश्वरः।
घनगर्जितभीताः। राज्यन्धकाराकृते।

१२. अन्वयः- रक्तानि नेत्राणि चालयन्
प्रतिपदं व्याजहरान् विपर्यासयन्
प्रमदानां मोदमत्तताविकारः अधुना
त्वयि अस्ति अनुकृतिमात्रम्। स्त्रीणां
अधुना विडम्बना दारुणैव॥

१३. अन्वयः - (हे) अनङ्ग! प्रियसखस्य
ते शरीरं कृशावशेषां यातं ज्ञात्वा
सखेऽमः सुधाकरः कृष्णापक्षे गते पि
कार्श्यं दुःखं यका त्यक्तुं॥
बहुलं पूरयितुं न हि शक्तः पावके दीप्तो
कृष्णापक्षे इति हेमचन्द्रः॥

१४. अन्वयः - हरितताम्रचारुनखानः
कलपुंस्कोकिलशब्दसूचितो नवचूतप्रलवः
सम्प्रति [illegible] वसन्तं नामिव्याति वद॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

हरितन्त्रयतिलक्ष्य, मणौ मणौ नेति तत्पुरुषः।
न धरेत्ता विन्दुनादेनानुस्वारेण तः सन्।
बन्धनं वन्धम्॥

१५. अन्वयः- त्वया नेत्रश्रो धनुषो गुणाकृष्य
मे मोजितेयमालिवाङ्मेरित्यादि।
बहुशः। मोर्वाग्निर्यः। दुर्मदुःखानाम्।
"दुरस्तु गर्हितो श्रेष्ठे गुरौ पितरि दुर्धि"
इति शब्दार्णवः॥

१६. अन्वयः- तावत् पुनरपि सुन्दरं शरीरं
प्राप्य उक्तितः त्वन् स्त्रियोक्तिषु स्वभाव-
प्रगल्भां कोकिलां सुरतदूतीकलासेषु
आत्तादरम। ईवन्तस्यापि दूतीशब्दस्य ङ्यो
-रुक्प्रत्ययाद ह्रस्वः॥ तस्य ङ्याप्योः संज्ञाछन्दो
सो र्बहुलम् इति ह्रस्वः॥

१७. अन्वयः हे स्मर! शिरसा प्रणम्य -
रहः एकान्ते सुरतानि च लब्धुम्

१८. अन्वयः— (हे) रतिकुशल! त्वया मम
अङ्गेषु स्वयं रचितं मार्दवं कुसुमशलाघनं
इदमवतिष्ठते। तत् तत् सुन्दरं वपुर्न दृश्यते॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

१९. तामिमं रामं मे चरणाभिति सम्बन्धः।
'वीरकम्मे वसाधनम्'। रायेतलासारागम्।

२०. अहं शालभमार्गेणागत्य पुनस्ते उत्सङ्गावतिनी भवामि। हे प्रिय! स्वर्गे चतुरैरप्सरोगणैर्मावन्न विलोभ्यसे विलोभयिष्यसे। यावत्पुरा-निपातयो र्लट् इति लट्॥

२१. अन्वयः- हे रमण! त्वामनुयामि यद्यपयनुगोमव्यामेव (यद्यपीत्यवधारणे इति केशवः) किन्तु रतेः मदनेन विना-कृता .... इदं वचनीयं मे अवस्थितं सुस्थिरमभूत्। विनाकृतेत्यत्र सप्तम्यै ति समासः।

२२. परलोके अन्तरितस्य व्यवहितस्य-कौलीनं जनवादः स्यादिङ्गानं वचनीयता इति हलायुधः॥ पूर्वसम्भावितां दशां गतोसि। गति र्बहुत्वणे ज्ञाने यात्रोपाय-दशाध्वसु इति हेमचन्द्रः॥

२३. अन्वयः- हृदयकामः कुसुमायो-जितः कामी कस्ते सखा मधः कृतु।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

(अपवर्ग) [illegible] विलसनेन विनाकृता
---- गतिं न गमितः खलु (न प्रापितः किम्)॥
"जिज्ञालानुनये खलु"—

२५. घोरदेवताक्षरैः - विलापवचनैः।
आतुरामापन्नाम्। "अभ्युपपत्तिरनुग्रहः"
इत्यमरः। "विवाक्ते दिग्धोलिप्तौ"—

२६. स्तनसम्बाधं - कुचौ घोरीकृत्य,
उरो ऊधान वक्षश्च ताडितवती।

२७. अन्वयः- कुरबकता सा रतिः एतया
- च च। चकारः पूर्वोक्तसमुच्चयार्थकः। हे
वसन्त इत्यादि। कराग्रो नख्म चूर्णी-
कृतं नख्म। कपोतकर्बुरं पारावतशबलम्

२८. अन्वयः- नु सहचरेणानया वसन्तेन
सुरासुरसोहितं जगत् मृणाललूत्रमौर्वीकृ
त्य सुकुमारकुसुमबाणान्य ते धनुषः-

२९. निर्वर्तित इति भविष्यत्सामीप्ये
वर्तमानप्रत्ययः।

३१. अन्वयः— नु वसन्त! कामवधे
मां विमुञ्चता विधिना ---
अनङ्गदीपितेन [illegible] प्रजाग्नेः पतनाय
नगरी॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

३२. अन्वयः- तद् (तस्मात्कारणात्) अनन्तरं भवता इदं बन्धुजनप्रयोजनं क्रियताम्।

३३. विचेतनैरपि प्रतीयते हि। अलवणा अवाग्, अनुदरा कन्या- इति वदत्पत्नीमिप्रायेण। विचेतनैरपीति निर्देशः॥

३४. अन्वयः- अमुना प्रसीदतिना सुन्दरेण ---- नूतनपत्रतल्पे यथा तथा वहो शरीरं निधास्यामीति।

३५. हे साधो! --- काष्ठक्यं कुरु।

३६. दक्षिणवातवीजनैः- मलय-मारुतसच्चालनैः॥

३८. पाठानुवर्ती अन्वयः। शरीरस्य विसर्गाय।

४०. अन्वयः- हे कामप्रिये! तवत्तो चिरात् (चिरं चिराय) दुर्लभे न भविष्य-ति।

४२, ४३— धर्मेति। याचितः त तपला तत्प्रणीतेति हर —— सङ्गमयिष्यतीति

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

स्मरश्मशानस्थावलानदीयोनीं वाच्यव्याह ।
वशिनो जितेन्द्रियाः ॥

४४. अन्वयः- हे सुन्दरि! भावेष्यन् प्रियेण
सङ्गमो मत्स्य तदिदं वपुः परिरक्ष।
कृत्यलुटो बहुलमिति कर्तरि तक्तत् ॥
रविर्यातअला तपात्यये पुनरोघेन हि मुज्यते
नदी ॥ घ्रुवं तपात्यय इते हलायुधः ॥

४५ - किमपि भूतं कोऽपि त्वाणी।

४६. अन्वयः- अक्ष्व्यलनकुशा मदन-
वधूत्पलवानं किरणवीरक्षयधूलरा
दिवातनस्य शशिनो लेखा प्रदोषोमव
वीरपालमाम्यभूत इति ॥ उपलवानं
-पलवावलने विषदबोधम्- "प्रदोषो रजनीमुखम्-" ॥

सम्यूर्णश्चनुर्थसर्गटिप्पण्यः ॥

अथ पञ्चमसर्गटिप्पण्यः—

१. अन्वयः- पार्वती तथा समक्षं मनोभवं
दहता पिनाकिना [illegible] मनोरथा लती---

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

"प्रियेव सौभाग्यफला हि चारुता" —

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

प्रियवल्लभ्यं फलं यस्याः सा

२. अन्वयः - सा एकाग्रतामवलम्ब्य त्वस्य सकलसौन्दर्यं कर्तुमियेष। तादृशः पतिः - मृत्युञ्जयस्त्र्यक्षः।

३. मेना हरासक्तचित्तां तपश्चरणाय कृतो-द्योगां सुतां श्रुत्वा, एनां पर्वतीमालिङ्ग्य (नद्याला पौरस्त्य) तपसो निवार-यन्ती उवाच।

४. अन्वयः - हे वत्से! मनीषिताः देवताः गेहेषु सन्ति। तपः कुतावत् वपुष्यं कुरु? मृदुलं शिरीषपुष्पं भ्रमरस्य पदाघातं सहते पतत्रिणः पुनः न सहेत॥

५. अन्वयः - इत्यनुशासती मेना... ध्रुवेच्छां स्थिरसंकल्पाम्-

कं ईप्सितार्थे स्थिरनिश्चयं मनः पयश्च निम्नाभिमुखं पतोपमेत्॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

निम्नप्रवणोपमदत्र द्रष्टव्यौ मीनावेवं मनो

दुर्वारमौन भाव: ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

६. अन्वय:- कदाचित् मनोज्ञवनीलो मनोरथश्च पितरमालस्यसरवीमुखेन कलोदयाय तप:समाधये ---- आलस्य-सरवी आलसरवी तेन मुखेन मुख्याय: तेन मुखं वि:सरणं यत्र प्रारम्भोपायपोरपै- इति विग्रह: ॥

७. अन्वय:- अथ गौरी अनुरूपौमौन-वेशतोविणा --- पश्चात् घनात्तु तदा-रब्धया प्राप्तिं शिखरं जगाम ॥ योग्येन आग्रहेण युक्तीति। शिखरोण्डमत्, तनु हिंस्त्रप्राणेप्रचुरमिति भाव: ॥

८. अन्वय: सुस्पष्ट:। अहार्यनिश्चया मिलोलयष्टिप्रोल्लुप्तचन्दनम् - चलाभि: च यष्टिभि: प्रोतैसरै: प्रमृष्टं स्तनान्तर्गतं चन्दनं येन तत्तथोक्तम्। पयोधरो-त्सेध:- स्तनोच्छ्राय:।

९. अन्वय:- तदाननं प्रोतसैद्धै: शिरोरुहै: यथा [illegible] तथैवं मधुरमभूत्।

CC-0. Dr. K. Sarva Rao Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

वक्त्रं वरचरद्रोणीभरेण न तथौवला-
संगमपि प्रकाशते ॥ सरोसिजमनुविद्धं
शैवलेनापि रम्यमित्येतदभिज्ञानशाकुन्तलोक्तं
स्मारयति कविसार्वभौमः ॥ प्रालेयैः
भूषितैः - "प्रसिद्धौ स्फातभूषितौ" —
रोरुहनीतिरुहाः - इगुपधेति कः ।
शिरसि रुहाः इति शिरोरुहाः ॥

१०. अन्वयः- सा प्रतीक्षणं कृतरोमवैक्लव्यां
यां मौञ्जीं व्रताय बभार तत्पूर्वानिबद्धया
तया अस्या रसनागुणास्पदं सरोजमकीर्॥
तेन पूर्वं बद्धं यस्य तत्पूर्वं यथा तथा
निबद्धया. कृतरोमकं (वाक्यशात्)
रसना शुद्धघण्टिकौ यस्याः ।

११. तयेति - कुशाङ्कुराणामादानेन
लवनेन परिक्षता व्रणिता अङ्गुलयो
यस्य. अक्षसूत्रप्रणयी कृतः = जपमाला
सहचरः कृतः, तद्युक्तः कृत इत्यर्थः ॥

१२. महामूल्ये शयने लुण्ठनेन - दूयते स्म
खिद्यते। निवेदुली(च) - उपाविश्य।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

बाहुलतोपधानीनी - बाहुलतामुपधत्ते उपधानी-
करोति। "उपधानन्तूपबर्हः"—

अन्वयः- नियमस्थया तया क्षये ये क्षमं
प्रत्यर्पितं निक्षेपः अर्पितमिव। इतरत्स्प
-ष्टम्। विलास एव चेष्टितम्। निक्षेपः
स्थास्य एव चेति कोषः।

१४. अन्वयः- ता अलिन्दिता तती त्वयेव
..... ग्रहीये यक्ष्मात्प्रजन्मनां मेवां
पुत्रवात्सल्यं नापाकरिष्यति॥ अग्र-
गातानाम्। घटावेव स्तनौ: तयो:
पत्त्रवणौ: पत्त्रलतयोर्मि:॥

१५. अन्वयः- अरण्यवीक्षाञ्जलिदान-
लालिलाः तथा विश्राश्वसुः मया
कुतूहलात् तदीये नेत्रे: लोचने
सरवी नां
स्वा पुरः उपमिमीत॥ हरिण
सम्बन्धिभि नेत्रैः करणैः स्व स्वकीये
लोचने - अमिमीत = अक्षीपीरमाण-
तारतम्यस्थानाम् मानं चकार। केचित्तु
ता पातीति तदीये नेत्रैः कुतूहलात् पुरो
अग्रे वर्तमानानां सरवीनां लोचनेऽमिमीत

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

वक्त्रं सरःपङ्कजैरिव न तथैवला-
संगमपि प्रकाशते ॥ सरोरुहमनोविद्धं
शैवलेनापि रम्यमित्येतदङ्गुलालोक्तं
स्मारयति कविसार्वभौमः ॥ प्रालेयैः
भूषितैः - "प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ" —
रोरुहन्तीति रुहाः - इगुपधेति कः)
शिरसि रुहाः इति शिरोरुहाः ॥

१०. अन्वयः- सा प्रतीक्षणं कृतरोमवैक्लव्यां
यां मौक्त्रीं व्रताय बभार तत्पूर्वानेवद्धया
तया अस्या रसनागुणास्पदं सरागमकीः ॥
तेन पूर्वं बद्धं यस्य तत्पूर्वं यथा तथा
नेवद्धया. कृतरोमाञ्चां (पक्षक्षात्)
रसना गुद्रघण्टिकौ इति क्वाडिः ।

११. तयेति - कुशाङ्कुराणामादानेन
लवनेन परिक्षता व्रणिता अङ्गुलयो
यस्य. अङ्गुलिव्रणयी कृतः = जपमाला
सहचरः कृतः, तद्युक्तः कृत इत्यर्थः ॥

१२. सहामलकं शयने लुण्ठनेन - दूयते स्म
विमर्दे । निवेदुली(च) - उपावेदच्च ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

बाहुलतोपधानीती — बाहुलतामुपधत्ते उपधानी-
करोति। "उपधानन्तूपबर्हः"—

अन्वयः- नियमस्त्रिया तया क्षये ये क्षमं पुनर्ग्रहीतुं नेक्षेयः अर्पितामिव। इतरत्स्य-दृम्। विलास एव चेष्टितम्। नेक्षेयः स्काप्य एव चैति क्रोधः।

१४. अन्वयः- ता अलिन्दिता तती त्वयैव ..... ग्रहीत्वै एकमात्मजन्मनां मेवां पुत्रवात्सल्यं नापाकरिष्यति॥ अग्र-जातानाम्। घटावेव स्तनौ: तयो: पुत्रवणौ: पत्युतपयोमि:॥

१५. अन्वयः- अरण्यवीक्षाञ्जलिदान-लालिलाः तथा विश्राश्वसुः यथा कुतूहलात् तदीये नेत्रे: लोचने सरवी नां स्व पुरः अमिमीत॥ हरिण सम्बन्धिभि नेत्रैः करणैः स्व स्वकीये लोचने - अमिमीत = अक्षेपीत्माण-तारतम्यस्तानाम् मानं चक्रार। कैश्चित्तु ता वर्तिती तदीयै नेत्रैः कुतूहलात् पुरो अग्रे वर्तमानानां सरवीनां लोचनेऽमिमीत

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

व्रतस्नानानामस्मिन इत्याहुः ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

१६. अन्वयः सुस्पष्टः। कृतामिमेकां कृतस्नानाम्। त्वगुत्तरालङ्कारवतीम् त्वचा वल्कलेन उत्तरीयवतीम्।

१७. अन्वयः- विरोधि---- तत् तपोवनं च पावनं नम्र। पावयतीति पावनम्। नवानभिज्ञानामभ्यन्तरेषु समृता: सिञ्चता। अनला। अग्नयो यस्मिन् ॥

१८. अन्वयः- सा देवी यदा पूर्वेणानुष्ठीयमानप्रकारेण। तपोनियमेन ----

१९. या कनुकुलीलयापि क्रमं ययौ धुनमल्या वपुः काञ्चनपद्मेन घटितम्, अत एव सुकुमारमपि सुसार च (कठिनञ्च) ॥

२०. अन्वयः- शुचौ शुचिस्मिता (विशदमन्दहासा) सुमध्यमा पार्वती दीप्तिमतां पुष्पवतीनां मध्यगता

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

सती नेत्रोपघातिनीं प्रभां (सावित्रं तेजः)

२१. अन्वयः - सवितृ र्गभीस्तीभिः साध्वी अतितप्तं तदीयं मुखं --- अस्य मुखस्य दीर्घीभवो रपाङ्गयोः केवलं (नेत्रान्तयोरेव) शनैः शनैः मन्द मन्दं श्यामिकया कालिम्ना पटं कृतम् ॥

२२. अन्वयः - अयाचितोपलब्धितं (अप्रार्थितोपनतं जलं, रसात्मकत्वेऽपि तोयस्य अमृतमयत्वं तीरेशस्य। वारणावधूर्भूत्वा पिबेत्। दक्षाणां दक्षे जीवनोपायः तद्भूमितिरिक्तं साधनं यस्य स तथोक्तः।

२३. अन्वयः - विविधेन नभश्चरेण (खेचरेण) आदित्यरूपेणेत्यर्थः। इन्धनसम्भृतेन (काष्ठसमिद्धेन) तेजसा तप्तायसे (पात्रविशेषे) खीः। "ग्रीष्मोष्मनाम्नी क्रमाणं" इति यादवः॥

२४. अन्वयः - पक्ष्मोदबिन्दवः पक्ष्मसु क्षणं स्थिता इत्यादि।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

लिप्यते। इति वक्षणां सान्द्रत्वं
क्षणमीति स्नैग्ध्यञ्च गम्यते।
ताड़िताधराः - अनेन अधरस्य
मार्दवं गम्यते। पयोधरयोः स्तनयो
रत्सेधे उपरिभागे निपातेन चूर्णिताः
जर्जरिताः कुचकाठिन्यादीत्यानः॥
नाभिरक्षीत्यय इति स्त्रीत्वम्। लिङ्गा-
दिष्वं लोकाश्रयत्वाल्लुक्स्येति भाष्या
-त् पुंस्त्वमपि साधु। अतः एव
नाभिर्मुरमन्थे चक्रमध्यक्षीत्रययोः
पुमान्। द्वयोः व्राणेप्रतीके स्यात्
स्त्रियां कस्तूरिकामद इति मेदिनी॥
२५. अन्वयः - निरन्तरासु अन्तर-
वातवीथिषु अनेकेतनालिनीं
शिलाशयां तां महतस्तपसः लोके
लिखिताः धृताः विद्युद्भिः खलोकनैः
कलोकयन्तिव। नीरन्ध्रासु।
अन्तरे मध्ये वातो यासां तादृश्यः।
२६. अत्यन्त हिमोत्किरा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri

नेला: महत्व सती ऽपलाततत्परा परस्परम्
आक्रीडिने (अन्योन्यमाक्रीडिशीने) प्रवो-
विक्षुब्धे चक्रवाकयो: मिथुने कृपावती
(सती) निनाय ॥ उदवाले तत्पर: ।
षेवंवासनाहनीधिषु योन्युदात्तेश: ॥
परस्परम्- कर्मधारयेतरे सर्वनाम्नो द्वे
वाच्ये इति द्वित्वम् । समासवच्च बहुलमे
दीति वक्तव्यम् । बहुलग्रहणादन्यपदयो र्न
समासवद्भाव: । असमासवद्भावे पूर्वपदस्य
सुप: पूर्वसवर्ण: । क्त्वाप्रत्ययेषु चेति सत्वम्
अन्योन्यसंश्रये तीदिति भाष्यकारप्रयोग-
प्रामाण्यात्पुन: समास: । परस्परा क्रीडिने ॥
२७. अन्वय:- सा निशि यद्यस्मिन्
-नो प्रवेपमानाधरयत्रशोभिना मुखेन
इत्यादि । प्रवेपमान: अधर: ओष्ठ
एव पत्रं दलं तेन शोभते -
२८. पुराविद: पुराणज्ञा: । तपस:
परा काष्ठा हि - परमुत्कर्षो हि - काष्ठो-
त्कर्षे दिशतौ दिशा - इत्यमर: ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

२९. अन्वयः- मृणालिकापेलवं स्वमङ्गमेवमादिभिः व्रतैरहर्निशं श्लपयन्ती सा ।

एवमुक्तप्रकारतोयाजिनमध्यवास-व्रतमादिर्येषां तैः व्रतैः । दूरमधश्चकार- अत्यन्तं तिरश्चकार ।

३०. अन्वयः- अथ अजिनावाक-धर .... कार्श्यकुटिलैः शरीर-बन्धैः प्रथमाश्रमो यथा तपोवनं विवेश ॥ यथाशब्दश्चार्थे ॥

अजिनावाढ्यो धरः । अजिनं चर्मणो चित्यात्कृष्णासारस्य चर्म्म । शरीर-बन्धैः गृहीतशरीरैः- वाहिताग्न्यादि-षु पाठात्साधुः ॥

तत्सादृश्यमभावश्च तदन्यत्वं तदल्प-ता । अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः । यथा-अब्राह्मणः अपापम् । अनश्वः । अनुदरा कन्या । अपचीलः । अधर्म्मः ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS and eGangotri

अथ किरातार्जुनीये शब्दार्थविमर्शः ॥

प्रथमः सर्गः —

२. अन्वयः — कुरूणामीश्वरस्य त्रिदशपतेः पालनीं प्रजासु वृत्तिं वेदितुं समयुक्तौ वर्णिलिङ्गिनौ स वनेचरः द्वैतवने युधिष्ठिरं समाययौ ॥ पालनीं प्रतीक्षापीन्द्रामुप्रजारागमूलत्वात्सम्यक् । वर्णिः प्रशस्तिरस्यास्तीति वर्णी तस्य लिङ्गः सत्यास्तीति वर्णिलिङ्गी । ब्रह्मचारिवेषवान् । विदितः — (१) विदितं वेदनमस्यास्तीति विदितः परोक्षानुसन्धानवान् इत्यर्थः । अर्श आदिभ्योऽच् इत्यच्प्रत्ययः । पीता गावः, मुक्ता ब्राह्मणाः, विभक्ता भ्रातर इत्यादिवत्साधुत्वं तु कृतीदृक्तः, सन्निर्मङ्क्ष्यस्तस्य विधानाभावात् । (२) अथवा उत्तरपदलोपो द्रष्टव्यः । विभक्तधना विभक्ता इत्यादेः । अत्र लोपशब्दार्थविदिति [illegible] । ग्रन्थार्थस्याप्रयोग

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

एव लोपो ईष्यते: । विपन्ना आतर
इत्यत्र धनस्य पर, विपन्नत्वं तद्भात
-वूपचर्म्यते । (२) अथवा विदितो विदि
-तवान् सकर्मकादप्यविवक्षिते कर्म्मणि
कर्तरि क्त: । आशित: कर्ता इत्यत्र
यथाहु: । धातोरर्थान्तरे वृत्ते धात्वर्थे
-नोपसङ्ग्रहात् । प्रसिद्धेरविवक्षात:
कर्म्मणोऽकर्म्मिका क्रिया इति ।
क्रमश उदाहरणानि — (क) नदी प्रवहति-
(ख) प्राणिति, जीवति, शक्यते । (ग)
मेधो वर्षति (घ) सञ्जूते, हरि: पश्यति ॥
युधिष्ठिर :- वाक्येन सेतानवगमान्नित्य
समासोयम् ॥

इदमत्र कथावस्तु सम्यगवधेयम् —
अक्षक्रीडायां निर्जितो युधिष्ठिर :
यत्या प्रतिमिश्च सह द्वैतवनं समाक्रामत
दुर्योधने प्रजा अनुरक्ता नवेति वृत्तान्तस्य
परिज्ञानाय प्रच्छन्नवेशं कश्चित् निरातं

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

हस्तिनापुरं वैरमत ॥

२. अन्वयः - कृतप्रणामस्य सयत्नेन जितं महीं महीभुजे निवेदयितुं व्यवस्तस्य मनः... मनसि न चचाल - यद्वा मनश्चलनयोः। अमौढ्यमप्रान्त्यमूढत्वाभावित्वमसम्मूढकत्वं चेति चतुर्गुणा इति नीतिवाक्यामृते। जितां स्वायत्तीकृतां अधिकृतां। चचाल = उद्विनिजे चकम्पे। कृतानतेः।

३ अन्वयः - स हसीति.... विधातुं आधारं कर्तुमिच्छतः। औदार्यमर्थ- deficiency of meaning सम्पत्तिः - सुष्ठु भावः सौष्ठवं शब्दसाम्य- elegance धर्म्यं - उक्षाव्यादित्यादन्प्रत्ययः। तयोर्द्वन्द्वः सौष्ठवौदार्ये - अत्र औदार्यशब्दस्य अन्यायदन्तत्वेपि लक्षणहेत्वोः क्रियायाः इति अल्पस्वरत्वादपि हेतुशब्दस्य पूर्व- निपातमनुचिता सूत्रकृतेन पूर्वनिपात- शास्त्रस्यानित्यत्वज्ञापनान्न पूर्वनिपातः सौष्ठवम् - प्रणश्यत्यनेनेति नयोक्तनोक्षाव्यादि- भ्योत्वन् भावकर्मणोः - निर्निश्चितार्थः well-defined in sense.

ज्ञापकस्य सामान्यापेक्षत्वात्

उदारो दारुमहतो:— Here उदार has been taken to mean weighty in sense, or meaning.

का नाम प्रबन्धाभिरामता इत्यत्र आशयिमतोपन्यास:—

स्तुवन्ति गुर्वीमभिधेयसम्पदं
विशुद्धिमुक्तेरपरे विपश्चित:।
इति स्थितायां व्रतिपूरुषं रुचौ
दुरुत्तरा: सर्वमनोहरा गिर:॥

माघोपि मतमेतदनुमोदते शब्दान्तरै:
'नालम्बते दैर्घ्यिकतां न निबीदति पौरुषे
शब्दार्थौ सत्कविरिव द्वयं विद्वानपेक्षते'॥

४. हे नृप! क्रियासु युक्तैरनुजीविभि:
चारचक्षुष: प्रभवो न वञ्च्यन्ते---
निग्रहानुग्रहसमर्था: स्वामिन:। चारा एव
चक्षूंषि चारचक्षूंषि तद्वद्भूतां पदे पदे वि-
निपात इति भाव:॥ क्षान्तं सोढुम्
चारचक्षुष:- प्रणिधिनेत्रा:। हितं पथ्यम्
श्रवणपरुषम्- कर्णकटोरम्॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

प्रायेण हितं तत्त्वं नौषधमिव कटु भवति
अतः अप्रियमपि मे वचनं भवतै स्वदता
नूः परिणामसुखावहत्वात् ॥ चराः -
चरन्तीति चराः - वचाधच् -

५. अन्वयः - योऽधिपतिं साधु न शास्ति
स किंसखा, यः हितात् न संशृणुते
स किंप्रभुः। साधु न शास्ति - हितं
नोपदिशति - does not give wholesome
advice. संशृणुते - सम्पूर्वाच्छृणोतेः
रुदन्मित्यादात्मनेपदमकर्मकत्वं वै-
नादिकम्। शेतेमासीत्तं धातिमितियावत्॥

६. मया निदिष्टं निगूढतत्त्वं नयनार्थं अवेदि
इति यत् अयं तवानुध्यानः॥ निगूढ-
तत्त्वं संवृतयाथार्थ्यम् - अबोधविप्लुता
अज्ञानोपहताः। अयमिति वेदनमित्यर्थः
विधेयप्राधान्यात्पुंल्लिङ्गनिर्देशः।
सन्ध्यादिमाङ्गल्यप्रयोगबन्धुरा दुःसञ्चारा
खलु अतिगहना नीतिमटवी। तत्र
प्रेक्षावतामपि पदे पदे स्खलनी गतिः
विभ्रमो भवति। किं पुनर्मोहान्धितदृशा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

-द्र। सिद्धयन्ति कर्म्मसु महत्स्वपि यत्-
-निमोद्यमाः सम्भावनागुणमवेहि तमी-
-श्वराणाम् ॥ इदमेतदर्थः शब्दा यच्छब्द-
विशेषाकाङ्क्षत्वप्रतीयमाने तच्छब्देन समानार्थ
तया प्रयुज्यन्ते।

७. अन्वयः- सुयोधनो नयासनस्थोपि
वनाधिवासिनो भवतः पराभवं विशङ्क-
-मानः — इत्यादि — वितर्कयन्,
उत्प्रेक्षमाणः। जगतीं महीम् जगतो
विष्टपे महां वा तुच्छन्दोविशेषयोः —
इति वैजयन्ती। समीहते आप्रियते
अवस्यति चेष्टते नन्दादन्त इत्यर्थः।
बलवत्स्वामिकुपरिक्षुद्रागमं च धनं
अज्ञानत्य कुतो मनः समाधिरिति
भानः ॥

८. अन्वयः सुस्थः। उत्कर्षमापादयन्
विरोधो वैरम्। महात्मभिः उत्कृष्टस्वभा
-वैः महद्भिः। अवक्रिगोवया - गुणैः
अवन्तमात्मानमित्युमिच्छया। To excel you.
भूतिं समुन्नयन् - Confirming to one's improvement

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

गुणसम्पदा दयादाक्षिण्यादिगुणगरिमणा —
विशेषो वरम्— मनाक् प्रियः। "देवाद् वृते
वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीवं मनाक् प्रिये"।
यद्यप्यासमानाधिकरणेऽपि क्त्वेतीति
लटः शतृशानचौ— इत्यत्र पुनर्ल्लिग्रहणात्
उपस्थितं भवतीति काशिकाकारः॥
साधुजनेन सङ्गवोऽपि अभ्युदयस्य मूलम्—
का कथा सङ्गतेरित्यर्थः॥
६. अन्वयः— अस्तन्द्रिणा तेन नयेन
वीतवं वितन्यते। पुरुषकारो विस्तार्यते। नयेन नीत्या— in accordance
with statesmanship. वीतवमुद्योगः—
energetic efforts. अस्ता तन्द्रालस्यं
येन सः— by him who has banished
all idleness. कृतारिषड्वर्गजयेन =
कृतः शौर्येण अरिषड्वर्गजयः शत्रुवर्गजयो येन।
केवलं दानादरचेष्टितं केवलाश्च नीतिः
कातर्यमिति अवधार्य उभाभ्यां सिद्धि-
मभिप्सति॥ कृतारि··· शिवभागवतवत्
समासः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

-म् । सिद्धयन्ति कर्म्मसु महत्स्वपि य-
न्नियोज्या : सम्भावनागुणमवेहि तमी-
-श्वराणाम् ॥ इदमेतदः शब्दा यच्छब्द-
निराकाङ्क्षत्वप्रतीयत्तये तच्छब्देन समानार्थं
तया प्रयुज्यन्ते ।

७. अन्वयः- सुयोधनो नयासनस्थोपि
वनाधिवासिनो भवतः पराभवं विशङ्क-
-मानः — इत्यादि — वितर्कयन्,
उत्प्रेक्षमाणः । जगतीं महीम् जगतो
विष्टपे महां वालुक्यन्दोविशोषयोः —
इति वैजयन्ती । समीहते आप्रियते
भवत्यति चेष्टते नयदात्त इत्यर्थः ।
बलवत्स्वामिकुमावि[illegible]द्धागमं च धनं
ऋजानत्य क्षतो मनः समाधिरिति
भानः ॥

८. अन्वयः सुस्थः । उत्कर्षमापादयन्
विरोधो वैरम् । महात्मभिः उत्कृष्टस्वभा
-वैः महद्भिः । भवद्भिरीक्षया - गुणैः
भवन्तमाक्रमितुमिच्छया । To excel you.
भूतिं समुन्नयन् - Endeavour to one's improvement

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

गुणसम्पदा दमादाक्षिण्मादिगुणगरिम्णा —
विरोधो वरम्— मनाक् प्रियः। "देवाद् वृते
वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीवं मनाक् प्रिये"।
प्रथमासमानाधिकरणेपि क्तेनेतीति
लटः शतृशानचौ— इत्यत्र पुनर्लड्ग्रहणात्
उपस्थितं भवतीति काशिकाकारः॥
साधुजनेन सङ्गवोपि अभ्युदयस्य मूलम्—
का कथा सङ्गतेरित्यर्थः॥
ई. अन्वयः— अस्तन्द्रिणा तेन नयेन
वैतवं वितन्यते। पुरुषकारो विस्तार्यते।
नयेन नीत्या— with statesmanship. वैतवमुद्योगः—
energetic efforts. अस्ता तन्द्रालस्यं
येन सः— by him who has banished
all idleness. कृतारिषड्वर्गजयेन =
कृतः शौर्येण अरीन्कृतकामायतनः शत्रुवर्गः। केव-
लं दानायत्तचेष्टितं केवलाच्च नीतिः
कृतार्थयतीति अवधार्य उभाभ्यां सिद्धि-
मन्विष्यति॥ कृतारि··· शिवभगवतत्
समास

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

-म्। सिद्धयन्ति कर्म्मसु महत्स्वपि य-
न्नियोज्या: सम्भावनागुणमवेहि तमी-
-श्वराणाम् ॥ इदमेतदर्थ: शब्दा यच्छब्द-
निराकाङ्क्षत्वप्रतीयत्तये तच्छब्देन समानार्थ
तया प्रयुज्यन्ते।

७. अन्वय:- सुयोधनो नयासनस्थोपि
वनाधिवासिनो भवत: पराभवं विशङ्क-
-मान: — इत्यादि — वितर्कयन्,
उत्प्रेक्षमाण:। जगतीं महीम्- जगतो
विष्टपे महां वा तु च्छन्दोविशेषयो:—
इति वैजयन्ती। समीहते आप्रियते
भवत्यति चेष्टते नन्दाल्त इत्यर्थ:।
बलवत्स्वामिकुमावि शुद्धागमं च धनं
युञ्जानत्य क्षतो मन: समाधिरिति
भान: ॥

८. अन्वय: सुस्पष्ट:। उत्कर्षमापादयन्
विरोधो वैरम्। महात्मभि: उत्कृष्टस्वभा
-वै: महद्भि:। भवद्भिरीक्षया - गुणै:
भवन्तमाक्रमितुमिच्छया। To excel you.
भूतिं समुन्नयन् - Endeavouring to one's improvement.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

गुणसम्पदा दयादाक्षिण्यादिगुणगरिम्णा —
विशेषो वरम्— मनाक् प्रियः। "देवाद् वृते
वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीवं मनाक् प्रिये"।
प्रथमासमानाधिकरणेपि कृभ्वादीति
लटः शतृशानचौ — इत्यत्र पुनर्लड्ग्रहणात्
उपस्थितं भवतीति काशिकाकारः॥
साधुजनेन सङ्गतोपि अभ्युदयस्य मूलम्—
का कथा सङ्गतेरित्यर्थः॥
६. अन्वयः— अस्तन्द्रिणा तेन नयेन
वीतवं वितन्यते। पुरुषकारो विस्तार्यते।
नयेन नीत्या — with statesmanship. वीतवमुद्योगः —
energetic efforts. अस्ता तन्द्रालस्यं
येन सः — he in whom sloth has vanished
all together. कृतारिषड्वर्गजयेन =
कृतः शीर्णीकृतः कामायत्तः शत्रुवर्गो येन।
लं रावायदचेष्टितं केवलं च नीतिः
कृतार्थमिति अवधार्य उभाभ्यां सिद्धि-
मन्विष्यति॥ कृतारि··· शिवभगवतवत्
समासः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

१०. ~~अनुजीवि~~ ~~सततम्~~ सततं अनुजीवि
नः प्रीतियुक्तः सरयूरिव इत्यादि।
गतस्पृहो निरहङ्कारः, अपेतगर्वः, विग-
लितदर्पः। सततमनारतम्। कृताधि-
पत्याम्- कृतं स्वाम्यं यस्याः सा, प्राप्त-
राज्याधिकाराम्। ग्रामजनबन्धुसहायेभ्य
-स्तल् इति समूहार्थे तल्।
(१) भृत्यान् स्निग्धानि मित्राणीव दर्शयते
लोकस्येति शेषः। हेतुमति चेति णिच्-
णिचश्चेति आत्मनेपदम्- अनुजीव्यादी
नां कर्तुरीप्सिततमं कर्म, कर्मत्वम्।
(२) धूर्ते तु वारयातारो वाच्यार्थमित्रं
वर्जयन्ति। स राज्ञा अनुजीव्यादीन्
स्वस्वादीनिव दर्शयते। सरय्वादय
इव ते तं वशयन्ति। सरय्वादिभावेन
वशमतस्तान् तथा दर्शयते स्वयमेव
छन्दानुवर्तितया स्वदर्शनं तेभ्यः ददातीति
इत्यर्थः। अत्र स्वस्येप्सिततमकर्मत्वम्।
अणौ कर्तुरनुजीव्यादेरिवादृश्यात्मने-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

-पदेषु उपसंरक्षानम् इति वार्त्तिकं कर्मत्वम्।
एवमाराधयतः कर्मणो राज्ञो णमन्तेऽकर्मत्वे
पि) कर्तृत्वे पि 'आरोहयते हस्ती स्वयमेव'
इत्यादिवत् अन्ययमाणकर्मान्तराभावात्
नायं न णेरणादिसूत्रस्य विषय इति मत्वा
-णिचश्चेत्यात्मनेपदं प्रतिषेदिरे। भाष्ये तु
णेरणादिसूत्रनिषयत्वमेव अस्योक्तम्॥
तेषु तेषु अधिकारेषु नियुक्तान् कर्मकरान्
संस्नेहसम्भावणैः दानमानादिना धन्यानुवर्त
-नेन च तेषां तोषयति यथा असौ तेषां पर-
स्नेहभाजनं मित्रं न तु प्रभुरिति बुद्धिर्लोका
-नामुत्पद्यते॥

११. अन्वयः- यथायथं विभज्य समयसंपात
-या भक्त्या अस्तक्रमाराधयतोऽस्य ----
यथास्वं विभज्य असंकीर्णरूपं विविच्य
इत्यर्थः। यथात्वे यथायथम् इति निपातना
द् द्विर्भावो नपुंसकत्वम्य। Having
analysed each in its own place. अस्य
धर्मार्थकामाः परस्परानुपमर्देन वर्द्धन्ते इत्यर्थः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

योयमात्मा यच्चात्मीयं तत्यक्त्वम् —

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

१२. अन्वयः — तस्य निरत्ययं सामदान-वर्जितं न वर्तते ---- निरत्ययं निर्बाधमसाधिक्यमित्यर्थः — faultless and dissensive (conciliatory measures) दानं धनविसर्गः। वर्तते — प्रचरति — अन्यथा लुब्धवर्तनस्य शुक्रप्रियैर्वाग्मैर्दुष्करत्वात्। उक्तञ्च लुब्धमर्षेन गृह्णीयात् साधुमञ्जलिकर्मणा। पूर्वं छन्दानुरोधेन तत्त्वार्थेन व्यधितम्॥ इति.

१३. अन्वयः — वशी स वस्तुनि नाध्यक्षेण मन्युना न, किन्तु निवृत्तकारणः स्वधर्म्म इत्येव --- निवृत्तलोभादिनिमित्तः सन्=free from such motives of action. गुरूपदिष्टेन दण्डेन — with such punishment as is advised by justices of the peace. प्राड्विवाकानुशिष्टेन दमेन। दुष्ट एवास्य शत्रुः शिष्ट एव बन्धुः, नतु सम्बन्धनिबन्धनः वस्तुपातो स्ति। अधर्म्मेऽनिवारिते सर्वा मवस्था निरर्थवत्तां भजेयुरिमे लोकाश्च

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

उत्तीदेयुरिति बुद्धिमात्काय प्राड्विवाकोपदिष्टं
Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
दण्डं प्रयुञ्जते ॥

१४. अन्वयः- शङ्कितः परितः परेतरान्
रक्षान् विधाय अशाङ्कितान्कारमुपैति।
परेतरान् आत्मीयान् अवञ्चकानित्यर्थः
यद्वा परान् इतरयति भेदेनात्मसात्क-
रोति इति ण्यन्तात्कर्मणि अण् प्रत्ययः
कार्यलम्पटेभ्यो दत्तानि धनानि
अस्य राज्ञो हृतवेदित्वं ख्यापयन्ति
प्रकाशयन्ति इति यावत् ॥ परे शत्रव
इतरे अन्यस्ते परेतराः- न बहुव्रीहाविति
सर्वनामसंज्ञाभावः। गूढाचारङ्गितः
सो गीतवत् विश्वसनवच्च जनहरति ॥

१५. अन्वयः- तेन सम्यक् विभज्य वेदेषु
विनियोगसन्निधा लब्धता उद्याताः
सश्चर्वमुपेत्य इव परिवंहितायतीर्घ-
सम्यदः कलन्ति। देशकालमात्रादीनां
~~विभ~~ विभागेन प्रभु विनिच्य ।
विनियोगः सुष्ठुप्रयोगः। प्रसवते ।
~~प्रत्यासीत्तरकालं~~ धनोत्कर्षम् ॥
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

१६. अन्वयः- युग्मद्वद्गन्धि: सङ्गम्युपमान इत्यादिना बहुव्रीहि रुत्तरपद-लोपश्च। उपमानाच्चेति समासान्त इकारः। नृपाणामुपायनानि उपहारभूता ये दन्तिनः कुञ्जराः। बहुक्षत्रियस्यन्दनवाजिसमाकुल-म्। आस्थाननिकेतनाजिरं सभागृहाङ्गन-म्। आर्द्रतां वाञ्छिलत्वम्॥

१७. अन्वयः- तस्मिन् चिराय क्षेमं वितन्वति अदेवमातृकाः कुरवः अकृष्टपच्या इव कृषीवलैः सुरवेन लभ्या शस्य सम्पदः दधतः चकासति॥ देवमातृकाः कृष्यम्बुजीविनो देशाः ते न भवन्ति इति अदेवमातृका नदीमातृका इत्यर्थः। अकृष्टपच्याः अकृष्टरोहिण्यः स्वयमुत्पन्नाः इत्यर्थः। एतेनास्य कुल्यादेपूर्तप्रवर्तनत्वमुक्तम्। शस्यसमृद्धया श्रीमतो जनपदाः कमपि लोकोत्तरमुत्कर्षं पश्यन्ति॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

१८. उदारकीर्तेः दयावतः प्रशान्तबाधं अभिरक्षया उदयं दिशतः वसूयमानस्य अस्य मेदिनो वसूनि स्वयं दुग्धे ॥ उदारकीर्तिः महायशाः । परदुःख प्रहाणेच्छोः । अभिरक्षया सर्वतस्त्राणेन। उपलुता द्राविता। वसूयमानस्य कुबेरो -पमस्य। प्रशान्तबाधं प्रशमितोपसर्गम्- नियतमेव दीनानां विपन्नानां चार्तिं मोच- यितुमीहते ॥

१९. अन्वयः सुस्पष्ट एव. संहता मिथः संहताः स्वार्थनिष्ठा न भवन्ति नमर्थस्य नशब्दस्य सुप्सुपेति समासः। धनुर्भृतः धानुष्काः - प्राधान्याद् धनुर्ग्रहणम् । आनृण्यार्थं प्राणान् दातुमिच्छन्ति।

१९. निःशेषं वेदेति अन्वयः। हितमनु- बध्नन्ति अनुतन्वन्ति इति - प्रतीयते ज्ञायते उन्नीयते। निश्वसतान् प्रणिधीन् दूरमण्डला -नि अपसर्पितुं निपुणा चरपुरुषेण सर्वं जानाति

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

प्रतिविधत्ते च। गूढान्वयोऽङ्कितस्य संवत
मन्त्रस्य तस्य प्रारम्भः प्राक् फलोदयात्
नानुमानं शक्यते।

२१. अन्वयः- तेन * कोपेन सज्यं धनुः
नोद्यतम्- न वा आननं कोपविजेह्मं
कृतम्॥ नराधिपैरस्य शासनं माल्य-
मिव गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते॥
सज्यं सप्रत्यञ्चम्। माल्यमिति भाव-
वर्ण्यादित्वात्स्वार्थे ष्यञ्। कुनामि
तस्यास्तु न जाहन्यते अत एव न
लोकशिक्षार्थं धनुरायम्य तेन दण्डो
विधीयते नवागरक्तां सन्त्वासाय
पुरं भ्रूभङ्गनिरीक्षं कोपान्धकारी-
-कृतम्॥

२२. अन्वयः- इक्ष्वाकुशासनः स नव-
यौवनोद्धतं दुःशासनं यौवराज्ये निधाय
--- इक्षुणा हिरण्यरेतसं धिनोति।

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

प्रत्यग्रलाजपर्यालोलम्। युवराजकर्म्माणि मरनेषु निरन्तरं दक्षिसामिराज्यधारामिः समेधितो भगवान् उर्वर्बुधोद्धिरव आज्यधूमपटलैर्दिग्भुरवं मलिनयन् प्रीत्या निरीतिरयशुभ्रं यशःस्तोममस्य प्रसारयति॥

२३. अन्वयः- प्रलीनभूपालं स्थिरायति भुवो मण्डलं आवारिधिप्रशासदवि स त्वेव्यतौः मियश्चिन्तयत्येव।

अदायोत्तरकालम्- (in future) which is firm and secure. प्रलीनभूपालं अस्तमितवैरिनयं निःसपत्नमित्यर्थः। उदधिश्यामसीमां कृत्स्नामिमां धरित्रीं भुञ्जतोपि तस्य दुर्योधनस्य मनः समाधिं नाप्नोति। बलवता शत्रुणा वैरमुत्पाद्य को नु नैश्चिन्त्यं लब्धुं शक्नुयात्॥

प्रलीना अन्तर्हिता वशीकृता भूपाला यस्मिन्॥ (The) Ground over danger proceed from you.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

२१. अन्वस्य - कथाप्रसङ्गेन जनैरुदा
हृतात् तवाभिधानात् अनुस्मृता-
खण्डलसूनुविक्रमः ततानन: स
दुःसहान् मन्त्रपदाद् उरग इव
व्यधते ॥ * गोष्ठीवचनेन वार्ता-
सम्बन्धक्रमेण। अन्यत्र कथाप्रसं
-गो दिवदैव्यः - कथाप्रसंगो वार्तायां
दिवदैवोपि वाच्यवत् इति विश्वः।
कथाप्रसंगे इनाश्च्यते जनाश्च। नाम-
धेयस्मरणाद्धेतोः। हेतौ पञ्चमी। अनु-
धातेन्द्रततनयशौर्यः। अन्यत्र उत्पेक्षिते
-न्द्रावरजस्य गोपनिपातः। व्यधते दुःखा
-यते मर्म्मयोड्डामनुभवतीति ॥ तश्च नश्च
तवौ तार्क्ष्यवासुकी तयोरभिधानं यस्मिन्
पदे इति ॥ मन्त्रपदात् - * हेत्वर्थे
पञ्चमी। विभावाऽगुरोऽस्त्रियामिति सूत्रे
विभावा इति योगविभागात् अगुरोऽस्त्रियां

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

च कथितेऽर्थे ॥ कथाप्रसंगो ऽ यस्य स कथाप्रसंगः ॥ व्यथते becomes disquieted or troubled.

२५. अन्वयः- तद् त्वयि जिह्मं कर्तुमुद्यते तत्र विधेयमुत्तरमाशु विधीयताम्---

विधेयमुत्तरं = योग्यं प्रति विधानम् ।

चिन्वतां गवेषयतामन्विष्यताम्-

प्रवृत्तिसारा उद्यन्तप्रधानाः ॥ उद्यते उद्युञ्जाने आप्रियमाणे इति यावत् ॥

२६. अन्वयः- वनसानिवासिनां वत्यौ इति गिरमीरयित्वा आत्तसत्क्रियेगते अथ महीभुजा कृशानासदनं प्रविश्य---

आत्तसत्क्रिये गृहीतपरितोषिनु-

इति वाचमादाय स किरातवर्यः ॥

२७. अन्वयः- द्रुपदात्मजा द्विषतां सिद्धिं निशम्य ततस्ततस्या अपाकृतीः विनियन्तु अक्षमा सती.....

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अपाकृतीः क्रोधजान् विकारान्।
मन्युमवसायदीपिनीः - क्रोधोयोजयोः
संवर्द्धिनीः गिरो वाक्यानि जगाद॥
Calculated to excite (to awaken) energetic action of the king.

२८. अन्वयः - मनादृशेषु ----
अधिक्षेप इव भवति, तथापि निरस्तनारीसमया दुराधयः मां वक्तुं अवसाययन्ति॥ त्यक्तिशालीनता-रूपस्त्रीसमाचाराः। दुष्टा मनोरथाः अवसाययन्ति प्रयोजयन्ति प्रेरयन्तीति॥
अहो बत दुष्करं कर्तुं प्रवृत्ताहं मघवन्तं विदितानिखलवेदितत्वं नीतिमुपदिशामि। धृष्टता खल्वेषा यदुपदेशदानसाहसाङ्गीकारः।

२९. अन्वयः - अखण्डलतुल्यधामभिः ---- अखण्डं स्थिरं धृता मही त्वया यदच्युता मतङ्गजेन स्वयं इव आत्म-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

ओ३म्-

चरणदासवर्म्मा एम.ए.
संस्कृताध्यापकः,
लक्ष्मपुरीये श्रीदयानन्द-
महाविद्यालये।

साहित्यशास्त्रोपाधिपरीक्षामुद्दिश्य कविभणितीः परिचेतुं प्रवर्ते, अनालोडितपूर्वो ह्यं काव्यवार्धिः प्रभासबहुलो दुरवगाहश्चेति मन्मदे- एवं तिति परमात्मनः इतहस्तावलम्बनोऽहमस्मिन् कार्ये कृतकृत्यतामासुमाशासे॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

—— कुमारसम्भवटिप्पणी निशोवा: ——

१. अन्वय:— उत्तरस्यां दिशि पूर्वापरौ तोयनिधी विगाह्य देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज: पृथिव्या मानदण्ड इव स्थितो अस्ति इति।

उत्तरस्यां दिशि देवभूमय:, दक्षिणस्यां दिशि सुरभूमय:, मध्ये मनुष्यभूमय इति पुराणप्रसिद्धि:

मानदण्ड:— परिच्छेदस्य दण्ड:— देवतात्मा— देवतायां इवात्मा स्वभावो यस्य देवात्मा— इदं च वक्ष्यमाणचेतनकृत्यविवाहादिचरनार्थम्— हिमालयो नाम— हिमालय इति प्रसिद्ध:—

इह खलु त्रिभुवनकण्टकतारकनामासुरस्योत्पादितोत्पातापनयनमनास त्रिदशनिवहप्रार्थितपार्वती— नन्दनवर्णनोपयुक्तत्वेन पार्वतीजननं वर्णनीयं— तत्प्रसंगाद् हिमालयस्यापि वर्णनमिति च तस्य विश्वजननीजनकायोग्यत्वशङ्कां परिजिहीर्षुर्भग— वान् कालिदास: प्रकृतोऽर्थं महान्तं वर्णयितुमारभते॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

चतुरो दक्षरन्ध्रा— इति चत्वार

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

शैलवदौ ... आलम्बा ... मानो यत्रैते
बुद्धेः स्वभाव इत्यमरः -
यद्वा महाकाव्ये वस्तुनिर्देशस्यापि क्वचित्
प्राधान्येनोक्तत्वात् सर्वत्र मङ्गलनिबन्ध-
नस्य नावश्यकत्वम्. यथाह दण्डी -
"सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणम्।
आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशोपि वा तन्मुखम्॥
विगाह्य पर्विश्य - वाहे मागुरीरङ्गोपमवाप्योर्हि
हयलग्नयोः। धात्रहृयोस्तोसिनहोश्च बहुलत्वेन
शौनकिः॥ "आचार्यग्रहणे च विभावा वक्तव्या"
"अञ्चन् मैवीतसंहुसमैः प्रियमेता" इति माघः।
ननु कोयं वस्तुनिर्देशो नाम - । उच्यते।
वस्त्विति वृत्तम्। तत्र च प्राधान्यात् वस्तुशब्देन
अत्र नायक उच्यते। तस्य प्रधानस्येतर-
स्य वा निर्देशो वस्तुनिर्देशः। तत्र घंघणा-
चार्यः कथायां प्रधानभूतस्य नायकस्य निर्देशो
वस्तुनिर्देश इत्याह। तेन पतिः श्रीमतीति शालिनं

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS and eGangotri

नगर इति श्लोकमुदाहृतवान् । भोजराजस्तु हयग्रीववधे काव्ये "आसीद् दैत्यो हयग्रीवः" इत्यादिश्लोकमुदाहृत्य प्रतिनायकनिर्देशस्यापि बलुनिर्देशात्वमुक्तवान् - इति युक्तमत्र पतानो निर्देशस्यापि बलुनिर्देशस्य त्वमित्यलमनेन ।

ननु कुमारसम्भव इत्यत्र कः समासः - षष्ठीतत्पुरुष इति ब्रूमः । नचैवंसति कुमारस्यार्थवत्त्वाच्छब्दस्य कुमारसम्भवः काम इति सामानाधिकरण्यं न स्यादिति वाच्यं - आर्थिकभेदेनाभिधायकस्यापि बहुशो भेददर्शनात् ।

ननु काव्ये यत्साध्यं तदनुसारेणैव काव्यसंज्ञा कर्तव्या, यथा युधिष्ठिरजानकीहरणशिशुपालवधप्रभृतीनाम् । अत्र तु तारकासुर - निग्रहः काव्ये साध्यतया निर्दिष्टः, तस्मिन् विघ्नहेतोः [illegible] देवोक्त इत्युपक्र-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

-मात्र । तस्मात् तारकवधे इत्येव स्थिता कर्तिका । अत्रोच्यते । नात्र तारकासुर-निग्रहः काके साध्यः । तादृक्शक्तो विभो स्कन्दं सेनान्यं तस्य शान्तये - इति देवैः कुमारसृष्टिमात्रत्वेन अस्त्राणं प्रति प्रार्थितत्वात् । तारकासुरनिग्रहस्तु कुमारीजनप्रलोभकतया निमित्तत्वेनोपक्षीणः, यथा किरातार्जुनीये दुर्योधनजयः ।

---

2. अन्वयः - सर्वशैला यं वत्सं धारेकस्य दोहदक्षे मेरौ दोग्धरि स्थिते (सति) पृथूपदिष्टां धरित्रीं भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्च दुदुहुः । दोग्धरि स्थिते - अत्र क्रियार्हत्व कारकत्वे इति शेषत्वेन षष्ठी - सप्तम्यर्थस्तु यस्य च भावेन भावलक्षणमिति सप्तमीति मन्यते ।

वैन्येन उपदिष्टाम् ईदृक्तया पदवीतां धरित्रीं गोरूपधरामिति शेषः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri

आल्वीनं नृपतिमनो आधिपत्यविशेषणञ्चैतत्-
नपुंसकमनपुंसकेनेत्यादिना नपुंसकैकशेषः।
'रत्नं श्रेष्ठे मणावपि' - इति विश्वः। जातौ जातौ
यदुत्कृष्टं तद्रत्नमिति कथ्यते इति यादवः। रत्नं
स्वजातिश्रेष्ठेऽपि - इति चामरः।
तेनोपदिष्टां जनानामभीष्टदोहनार्कं त्वयानुकूलया
भवितव्यमित्युपदेशपत्कारः। अत्र प्रयोजकत्वे
पि शैलानां पञ्चभिर्हलैः कर्षति ग्रामं ग्रामणीरि
ति वत् तत्समर्थाचरणात्कर्तृत्वेन व्यपदेशः।
महौषधीः - वीर्यवतीः मृतसञ्जीवनीप्रभृतीः।
धारित्र्याः - अकर्षितत्रयीति कर्मसंज्ञा। वत्सं वी-
-क्ष्य - अनेन वत्सस्य जारग्राहित्वं गम्यते-
अतो वत्सपीतशेषं दोग्धारं त्वमुज्जीवेति।

3. अन्वयः - अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य हिमं
सौभाग्यविलोपि न जातम्। हे एको दोषो
गुणसंनिपाते इन्दोः किरणेषु अङ्कइव नि-
मज्जति।
सौभाग्यं - हंसुगसिन्धवेन पूर्वपदस्येत्युभयपद-
वृद्धिः। शोभनं भगं यस्य स सुभगः - "भगं श्रीकाम

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

माहात्म्यवीर्यमयत्नार्जनकीर्तिषु" इत्यमरः।
Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

निमज्जति- न्यग्भवति, तिरस्कृतो भवतीत्यर्थः।
नलीदपरचनया न्यग्भावितो धनुष्करवर्धरः
कालिदासोक्तिषु दोषं मृगयमाणोऽ त्रेत्थमाह
— एको हि दोषो गुणसंनिपाते निमज्जतीन्दोरिव
यो बभावे। नूनं न दृष्टं कविनापि तेन दारिद्र्य-
दोषो गुणराशिनाशी॥ अनन्तरत्नानामस्पदी-
भूतानां श्रेष्ठवस्तूनाम्- उत्पत्तिस्थानं कन्यारत्न
-स्य वैदूर्यादीनां मणिरत्नां, देवदारुप्रभृतीनां
वृक्षरत्नानां, मृतसञ्जीवनी प्रभृतीनामोषधि-
रत्नानां, गङ्गादिसरिद्रत्नानां, सोमलतापभृती
नां यज्ञद्रव्यरत्नानां प्रभवः, जन्मकारणभूतः।
'हि हेतौ च प्रसिद्धौ च' इति भोजः- अत्र
हि शब्दः प्रसिद्धौ- ननु निदर्शनस्य सामान्येन
समर्थने किमत्र दृष्टान्तेन, अर्थान्तरन्यासे तु
प्रतीतोपपादनम्। नच क्वचिदीदृशे विषये
दृष्टान्तो दृश्यते। नहि काव्ये प्रमाणप्रतिपन्नेन
लक्षणेन व्यवहारः, प्रतीतिमात्रस्योपयोगात्।
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तत्कथमत्र दृष्टान्तः। उच्यते। न तावदयं दृष्टान्तो व्याप्तिविरोधी किन्त्वतिरिक्त इति शक्यते। नचैवं शङ्क्यं। अत्र दृष्टान्तस्य विशेषतश्चाधत्वाधानमात्रपरत्वात्। यथाह कुन्तकाचार्यः- "अलंकारस्य कवयो यत्रालङ्करणान्तरम्। अलनुद्दा निबध्नन्ति हारादेर्वेणिबन्धवत्॥" इति.

४. अन्वयः- यश्च अप्सरो विभ्रममण्डनानां सम्पादयित्रीं बलाहकच्छेदविभक्तरागाम् अकालसन्ध्यामिव धातुमत्तां शिरसैर्विभर्ति॥

बलाहकच्छेदाः लायंतनेन समीरणेन विच्छिन्नाः मेघाः - 'छेदयोर्हेतौ भावो छक्वत्प्रत्ययेन'.

विभ्रममण्डनानि - विलासेनालङ्करणानि- विभक्तः तत्रोमितः। अकृतो विकीर्तितकालो विभ्रमः- तथाहि दण्डिनावन्तिः- "विभ्रमस्त्वकृतो याकाले मूषालङ्कारविपर्ययः" इति दशरूपकं कारकृतलक्षणानुसारेण। विभ्रमशब्दं सायंकालस्य शिरसलग्नो धातुमत्तामालोक्य तायं-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

माहात्म्यवीर्यपरार्द्धकीर्तिषु" इत्यमरः।
Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
निमज्जति- न्यग्भवति, तिरस्कृतो भवतीत्यर्थः
नलोदयरचनया न्यग्भावितो वररुचिरित्यर्थः
कालिदासोक्तिषु दोषं मृगयमाणोऽन्येत्थमाह
— एको हि दोषो गुणसंनिपाते निमज्जतीन्दोरिव
यो बभावे। नूनं न दृष्टं कविनापि तेन दारिद्र्य-
दोषो गुणराशिनाशी॥ अनन्तरत्नानामस्मदादि-
भिन्नानां श्रेष्ठवस्तूनाम्: उत्पत्तिस्थानं कन्यारत्न
-स्य वैदूर्यादीनां मणिरत्नानां, देवदारुप्रभृतीनां
वृक्षरत्नानां, मृतसञ्जीवनीप्रभृतीनामोषधि-
रत्नानां, गङ्गादितीर्थरत्नानां, सोमलतादिप्रभृती
नां यज्ञद्रव्यरत्नानां प्रभवः, जन्मकारणभूतः।
'हि हेतौ च प्रसिद्धौ च' इति मेदिनीः- अत्र
हि शब्दः प्रसिद्धौ- ननु विशेषस्य सामान्येन
समर्थने किमत्र दृष्टान्तेन, अर्थान्तरन्यासे तु
प्रतीतोपपादनम्। नच क्वचिदीदृशे विषये
दृष्टान्तो दृश्यते। नहि काव्ये प्रमाणप्रतिपन्नेन
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.
एवमेव व्यवहारः, प्रतीतिमात्रस्योपयोगात्।

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तत्कथमत्र दृष्टान्तः। उच्यते। न तावदयं दृष्टान्तो व्याप्तिविरोधी किन्त्वौपचारिक इति शङ्क्यते। नचैवं शङ्क्यम्। अत्र दृष्टान्तस्य विशेषतश्चाटुत्वाद्धानमात्रपरत्वात्। यथाह कुन्तकाचार्यः- "अलङ्कारस्य कवयो यत्रालङ्करणान्तरम्। अलनुष्टा निबध्नन्ति हारादेर्वेणिबन्धवत्॥" इति.

४. अन्वयः- यश्च अप्सरो विभ्रममण्डनानां सम्पादयित्रीं बलाहकच्छेदविभक्तरागाम् अकालसन्ध्यामिव धातुमत्तां शिरसैव बिभर्ति॥

बलाहकच्छेदाः सायंतनेन समीरणेन विच्छिन्नाः मेघाः - 'कृत्स्नमेहितो भावो दुष्करात्प्रकाशते'.

विभ्रममण्डनानि - विलासिनालङ्करणानि- विभक्तः तत्रोमितः। अथवा विकीर्तितलालो विभ्रमः- तथाहि दाक्षिणात्यः- "विभ्रमस्त्वरयाकाले मूढज्ञानविपर्ययः" इति दशरूपकारकृतलक्षणानुसारेण विभ्रमशब्दं सारूप्यमस्य शिरसलग्नां धातुमत्तामालोक्य सायं-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तन्धाभ्रमेण त्वरमाणाः लावंतनमण्डनमयथा यत्नं कुर्वन्त्यवलरत इत्यभिप्राय इति व्याचष्टे- न चैतद् युक्तम्। ल लक्षौ विभ्रमशब्दस्य शास्त्रव्यवहार एव लोके तु विलासवयीयो विभ्रमशब्दः॥ अक्षरः शब्दस्य बहुत्वं प्राप्ये कम्- नादिभ्याङ्कोऽपत्यस्येति सूत्रे भाष्यकारादीभिरेकवचने प्रयोगात्। तथाहि- आपः सुमनसो वर्षा अक्षराः सिकताः लताः। एते स्त्रियां बहुत्वे स्युरेकत्वेप्युत्तरत्रिकम्॥ "कृतोऽस्त्री द्विरदं रदः"— अत्र मत्ताशब्दः क्षीणार्थे निहतार्थः, इति मम्मटः॥

५. अन्वयः- यस्मिन् किराताः तुषारस्तुति- -धौतरक्तं हतद्विपानां केसरिणां वदम् अदृष्ट्वापे नखरन्ध्रमुक्तै मुक्ताफलै मार्गं नदीनि पदमद्धिवेन्यालक्षयन्ति निम्नम्- 'त्रिहे ऽद्धिवेन्या -से' इति नेरुक्तः। तुषारस्तुतीति- हिम- निष्यन्देन (निष्यन्दैः) क्षालितं क्षीणितं यस्य तत्तथोक्तम् नख द्रोणीषु मुक्ताः- नखानां रन्ध्रेभ्यो गलितैः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

मौक्तिकानामुत्पत्तिं गजेन्द्रमल्लीनल्लो व्यक्तीत्यु
क्तमगस्त्येन—

"द्विपेन्द्रजीमूतवराहराघवमत्स्यादिशुक्त्युद्भवेषु जातिं।
मुक्ताफलानि प्राहुस्तानि लोके तेषां तु
शुक्त्युद्भवमेव भूरि॥" धातु गतिशुक्लोरि
-त्यस्माद्धातोः क्तप्रत्यये रूपम्। यत्र निभावेति
निष्ठायामनिट्त्वम्। कथन्तर्हि धावेतामैभराजाधि-
येति। नृती गात्रविक्षेप इत्यत्र ईदित्करणं यत्र
निभावेत्यस्यानित्यत्वज्ञापनार्थम्। तेन धावेतामि-
भराजाधियेत्यादि सिध्यतीति मनोरमायां भट्टोजिः।
ईदितो निष्ठायामिति निष्ठायामिणेनेत्वः,
लेऽसिचीत्यादिना नृतीधातोर्वेट्कत्वान्निभेत्वस्य
च सिद्धत्वात्किमनेन ईदित्करणेन॥

६६ अन्वयः- सिन्धो आमेरवलं सञ्चरतां घनानां
अधःसानुगतां छायां निवेश्य वृष्टिभिरुद्वेजिताः
(सन्तः) यत्यातपवारणानि आश्रयन्ते॥

आमेरवलं - नितम्बपर्यन्तम्- मेरवला रवङ्गान्धे
स्यात् काञ्ची शैलानां नितम्बयोरिति विश्वः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

लिङ्गा देवस्य ते लिङ्गाः - प्रसादोन्मादकः।
उद्विजिताः - ओविजी भयचलनयोः, क्यपेणाय
मृत्यूर्वः। कदाचिन। चकन्द विजा कुररीव
भूयः। दृष्टः कक्ष्मश्चिर् गवये वीविजैरीतीच
रघुवंशे॥ अत्र पर्वतवर्तिनां जनानां छायातप
यो र्यथेष्टप्रतिपादनेनातिक्रान्तमेघमार्गत्व-
प्रतिपादनेन चास्य सर्वकालरमणीयत्वमौ
- चित्यं चोक्तम्॥ "स्निः स्वल्कः सानुरस्त्रियाम्"
6. यत्र धातुरसेन न्यस्ताक्षराः कुञ्जरा विन्दु-
शोणा भूर्जत्वचः विद्याधरसुन्दरीणामनङ्ग
- लेखक्रियायोपयोगं व्रजन्ति॥
न्यस्ताक्षराः = विलेखितवर्णाः - कुञ्जरस्य
ये विन्दवः कपोले वयोविशेषभाविनः पसला
रकाः पयसः विन्दुजालकमित्यमरः। ते इव
शोणाः रक्तवर्णा अथवा कुञ्जरा इव विन्दु
- शोणा इति विग्रहः - लिख्यन्ते येषु ते लेखाः
पत्राणि = अनङ्गस्य लेखाः तेषां क्रियया
कामसञ्जकलेखकरणेनेत्यर्थः। उपयोगः
= उपकारः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

८. अन्वय:- यं दरीमुखोत्थेन समीरणेन रन्ध्रभागान् पूरयन् (सन्) उज्जास्यतां किन्नराणां तानप्रदायित्वमुपगन्तुमिच्छतीव ॥ दरी गुहा सैव मुखं तस्मादुत्थेनोत्पन्नेन। तानो नाम स्वरान्तरप्रवर्तको रागस्फीतिप्रवृत्त्यादिहेतुरंशा -परनामा वंशवाद्यसाध्य: प्रधानभूत: स्वर - विशेष:। "तानस्त्वंशस्वरो मत:" इत्यभिनव - गुप्त: ॥ तानप्रदायित्वं वांशिकत्वम्- गाता यं यं स्वरं गच्छेत् तं तं वंशेन तानयेदिति भाव: अत्र त्वनो नान्यार्थ उत्प्रेक्षते। ननु पूरणादे र्वास्तवत्व किमुत्प्रेक्षया। न। गिरेस्तत्र तावत् पूरणव्यापारासम्भव:। तत एव च तत्कारक - वर्गस्यापि असंभव:, क्रियापेक्षत्वात् कारकाणा -म्। इनशब्द: केनान्वयमुपेयात्- प्रधानभूते नेक्षितेन। प्रधानभूततदर्थोत्प्रेक्षयैव तामर्थ्यो दितरोत्प्रेक्षालिङ्गे:। यथाह महिमा:-

एकयोत्प्रेक्षितत्वेन यत्रार्था बहवो मता:।
तत्रेतरादे: प्रधानादेव नान्यत: ॥

इति-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

रन्ध्रभागान् = रन्ध्रप्रदेशान्. "भागः प्रदेशे शब्दले भागधेये च कथ्यते" इति मेदिनी. यद्यपि नैषधः कीचकाल्ते स्युः ये स्वनन्म-नैलोद्भता इत्यमरानुशासनात् कीचकपदेनैव विशिष्टार्थलाभेन रन्ध्रभागानिति तन्निरूपणेन इत्यादेः कर्मत्वमन्वयबोध इति। तथापि विशिष्टबोधकपदानामपि विशिष्टविशेषण-बोधकपदान्तरसामभिव्याहारेणैकान्तरबोधकत्वम्।

६. अन्वयः- यत्र कारीभिः कपोलकण्डूः विनेतुं विघट्टितानां सरलद्रुमाणां स्रुतक्षीरतया घनीभूतो गन्धः लानूनि सुरभीकरोति। विघट्टितानां कपोलकण्डूयनेन मृदितानाम्. क्षारितानि क्षीराणि निर्यासाः येषां तेषां भावस्तत्ता तया हेतुना। कण्डूञ् गात्रविचर्षण इति कण्ड्वादित्वात्त्वातिपदिकत्वम्। तथा च कण्ड्वादयो द्विधा। धातवः प्रातिपदिकानि च।

सरला द्रुमाः सरलद्रुमाः। ननु तत्पुरुषः कर्मधारय इत्यत्र यद्यपि न कर्मधारयस्तद्वदत्रापि न। आदृश्य रामो जामदग्न्यः, फाल्गुनः पाराशर्यः, अर्जुनः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri

पार्वतीयेति इत्यादिषु तत्समास इति। एकान्तेति अत्र तमालः। सरलनामानो द्रुमा इति एकस्मिन् शाकपार्थिवादित्वम्। अत्र नैयः- विशेषण विशेष्ययोः सम्बन्धिकृतयान्यतरोपादानमात्रेणेतरोपसम्भवे उभयोरुपादानं स्यादिति। शिंशपावृक्षः नैलालवर्वत इत्यादीन् प्रयोगान् दूषयति भाष्यकारः। तर्हीमौ द्वौ प्रधानशब्दौ एकस्मिन्नर्थे युगपदवछ्यते- वृक्षः शिंशपेति। नैतयोरावश्यकः समावेशः। नीलवृक्षः शिंशपेति।

१०. अन्वयः- यत्र रजन्यां दरीगृहोत्सङ्गनिषक्तमात्र ओषधय वनिताससखानां वनेचराणामतैलपूराः सुरतप्रदीपा भवन्ति। अतैलपूराः- न विद्यते तैलपूरस्तैलसमूहो यत्र ते तथोक्ताः- तैलनिषेकनिरपेक्षा इत्यर्थः। सुरतकर्मणि प्रदीपा इति समासीति योगविभागात्समासः। अत्र वादेणामालङ्कारः।

११. यत्र शैलीभूतहिमे मार्गे अङ्गुलीपार्ष्णिभागान् उद्वेजयत्यापि अश्रमुख्यो दुर्वहस्तनोरुपयोधरार्ताः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

मन्दां गतिं मनोरथैः। दीर्घीनाथ स्तम्भयन्
योजयति तन्नरम्यम्। शिलीभूतं घनीभूतं
हेमं यत्र- आर्तिः - आङ्पूर्वादृच्छतेः क्तिः।
श्रोणायश्च पयोधराश्च श्रोणिपयोधरम्-
दुर्वहेण दुर्धरेण श्रोणिपयोधरेण। "स्त्रीस्तना
-ब्दौ पयोधरौ" इत्यमरः। एकवचनेनापि
शब्दो विग्रहः श्रोण्यादिशब्दानां जातिवाच
कत्वात्- श्रोण्या जघनस्थलेन पयोधराभ्यां
स्तनाभ्यां च आर्तीः। गुल्फयोरधोभागः
पार्ष्णिशब्देनोच्यते। 'तद्ग्रन्थी घुटिके
गुल्फौ पुमान् पार्ष्णिरधस्तयोः' इत्यमरः।

१२. अन्वयः- यो दिवा *भीतमिव गुहासु
लीनमन्धकारं दिनाकराद्रक्षति। उच्चैः
शिरसां शरणं पवने क्षुद्रेऽपि तत्रैव नूनं
ममत्वं (अस्ति)। दिवा दिवसे भीतं भया-
विष्टमिव। उलूकपिनेति च ध्वनेः। दिवा-
भीतो दिनाकीर्ते वेच्चनेन च निगद्यते। काक-
जूर्यौ दिवान्धावेति च विश्वः॥ क्षुद्रोऽनार्यः
उच्चैः शिरसां उन्नतानाम्-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

ममत्वं ममायमित्यभिमानः। ममेत्यस्मच्छब्द-
प्रतेरूपबन्धमव्ययमिति केचित्। अन्ये तु —
तेषां प्रायः शब्दानां त्रयोऽर्थाः — स्वरूपं
अवहार्योऽर्थो बुद्धिश्चेति। तत्र स्वरूपं यथा
— घटशब्दस्य घकारटकार समुदायः।
अवहार्योऽर्थो यथा — तस्य पृथुबुध्नोदरादि
-रो मृदादेर्विकारः। बुद्धिर्यथा - तद्विषया
तदाकारा च बुद्धिः। तत्र बुद्ध्यर्थत्वे शब्द-
स्वभावाद् इत्यवच्छिन्नत्वेन वृत्तेर्गततत्वेन
वा केवलं प्रयोगः। यथा। घट इति बुद्धेरि
-ति, घटबुद्धिरिति वा। नतु स्वातन्त्र्येण
प्रयोगः। तस्मान्मम शब्दस्य ममेति बुद्धेरर्थः।
यथा निर्मम इत्यत्र। तथा चात्र तदाह्लादते
तस्य भावो ममत्वमिति तमर्थयन्ते॥

२२. अत्र न्यायप्रकाशकृता दूषितम्। तथा —
उत्पेक्षेतमपि तात्त्विकेन रूपेण घटनात्रितत्वा
न्नित्यारब्धप्रख्यम्। तत्समर्थनाय यद्यर्थान्तर-
न्यासोपादानं तदालेख्यमिव गगनतलेऽत्यन्त
-मलमीचीनमिति निर्विषयत्वेन तस्य,

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अनुचितार्थतैव दोषः, इत्युक्तम्। इमं तु श्लोकमुदाहृत्याचेतनस्य तमसो दिवाकरात् काल एव न संभवति कुत एव तत्प्रयोजित मात्रेणा वारेत्राणं कुतस्तरां तत्समर्पनार्थ -मर्थान्तरन्यास इति। संभावितेन तु रूपेण प्रतिभासमानस्यास्य न कश्चिद् अनुपपत्तिरिति सर्व एव तत्समर्थनायां यत्नः इति। तदयुक्तम्। यतः वारेत्राणं वक्तुं प्रकृतम्। तत्र हेतुत्वेन केवलं भीति -रसंभावैनी संभाव्यते। वारेत्राणं च ना- संभावे। तद्धि नाम बाधकनिवारणम्। बाधकश्चात्र तमसोऽकीलोकः। स च स्वधीयतेऽस्य बालालकुक्षिकलामि गुहाधिरिति॥

१३. चमर्य इतस्ततो लाङ्गूलविक्षेपविलोलविरो- -भैः चन्द्रमरीचिगौरैः बालव्यजनैः यस्य गिरिराजशब्दमर्थयुक्तं कुर्वीत। लाङ्गूलाने बालधयः। [illegible] लोमलाङ्गूले बाल- हस्तश्च बालधिः इत्यमरः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

बालधीनां विधुननैः चैलुमरः। कान्तमो
चेवामैति- गिरिराज इति लंज्ञाम्- अवधातः
शीरः। राज्ञानो हि धृतचामरादिचिह्नेहिता
इति भावः।

१४. यत्र अंशुकाक्षेपविलज्जितानां निम्युत्वाङ्
नानां यदृच्छया दरीगृहद्वारीवलम्बिबिम्बा
जलदास्तिरस्करिण्यो भवन्ति॥ वस्त्रहरणेन
जातव्रीडानाम्- अनावृताङ्गत्वाद् ह्रीमूढाना-
मित्यर्थः। कन्दरामुखलम्बमानमण्डलाः।
"व्रातेलीरा जवनिका, स्यात्तिरस्करिणी चलां"
इत्यमरः। ✓ अंशुकं वस्त्रमात्रे स्यात्पटेधाने
तरीयथो रिति शब्दार्णवः।' बिम्बोऽस्त्री
मण्डलं त्रिष्वित्यमरः। आद्रोयो भर्त्सना-
दृष्टिकाम्बालकृतेषु लुप्त इति मेदिनी।
यदृच्छया यादृच्छिकलंगत्या, दैवगत्या इति
वा॥

१५. अन्वयः- मागीरथीनिर्झरशीकराणां
वोढा मुहुः कम्पितदेवदारुः बिलाशिरण्डै
- नहैः यस्य वायुरन्विष्टमृगैः किरातैरासेव्यते।
गङ्गाप्रवाहपातः कणानाम्। वोढा = वाहकः।

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

मिन्नानि विस्तीर्णतानि विन्दीर्णानि।
क्षीरखण्डवद्वै निष्ठद्यवेगप्रसरत्वाद्वायो
- र्मान्द्यम्। क्रमाद्विशेषणत्रयेण शैत्य-
सौरभ्यमान्द्यान्युक्तानि॥ योनः प्रत्येष्यशार्ङ्गे
च सद्योर्द्धे स्यान्मुहुः पदम् - इत्यजयः।
अत्रेदं प्रमाणं - भित्त्वा लयः किललयपुरं
देवदारुद्रुमाणाम् - इत्युत्तरमेघे॥

१६. अन्वयः - तस्मादिह स्तावचितानि यत्य
अग्रसरोरुहाणि। पद्मानि अधःपरिवर्तमानः
विवस्वान् ऊर्ध्वमुरवैर्मयूरवैः प्रबोधयति॥

अवचितभ्योलूनेभ्योऽवशिष्टानि -
शेषोऽप्रधाने लुप्तेपि त्रिष्वन्यत्रोपयुक्तइति
केशवस्वामिवचनं शेषशब्दस्यामिधेयव-
लिङ्गत्वे प्रमाणम्। हस्तावचितौ इति
पदच्छेदः। निमित्तसप्तमीचेयम्। सप्तमी-
स्थानत्य लुग्दीर्घत्वादिसमृद्धिः।
वक्ष्यति च नित्यमर्द्रांच्च सोमाच्च परमध्या-
- त्महे पदम् इत्यादौ। अग्रसरोरुहाणीत्यत्य

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

विधेयतया अन्वयेऽपि सारसं सरसीरुहमिति
बोधबलात्तादृशार्थलाभसम्भवात्यजानीत्यस्य
वैयर्थ्यं न शङ्क्यम्। त्यजतेरुक्तस्य कर्वेत्तादृ-
शान्वयस्यैवाभिप्रेतत्वात्। एवं च रूढा
अपि शब्दाः क्वचिद् यौगिकार्थमवगाहन्ते
इति न्यायेन अग्रसरोरुहाणीति पदात्
तादृशसरोवरजातत्वेनैव बोधः। न पद्मत्वा
दिनेति नाप्यनुपपत्तिरिति ध्येयम्॥ अग्र-
१७. सरोरुहाणि = क्षीरः पुष्करिणीषु चरूढानि॥
अन्वयः- यस्याङ्गयोनित्वं धात्रीधरणक्षमं
सारं चावेक्ष्य प्रजापतिः कलितयज्ञभागं शैला
-धिपत्यं त्वयमन्वतिष्ठत्॥ यज्ञाङ्गानां
यागसाधनानाम्। अन्वतिष्ठत् अददात्।
कलितोऽर्कदृग्वै यस्य भागो यस्मिन् तथा च
ब्रह्मणा शैलाधिपत्यं दत्तम्। तद् दृष्ट्वा देवैरायं
यज्ञभागो हस्तिरूपो दत्त इति भावः॥ "तारो बले
स्थिरांशौ च" इत्यमरः। अथवायमभिप्रायः-
विधाता हिमालयस्य यागोपकरणस्रष्टृत्वं
भूभारवहनयोग्यं बलं च पर्यालोच्यात्मनैव तस्मै
यज्ञस्य भागं दत्त्वा एनं पर्वतश्रेष्ठत्वे स्थापयामास॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

अन्वयः—

१८. मेतत्सत्यः स्त्रीतीर्थः तनीतृणां मानसी मुनीनामपि माननीयाम् आत्मानुरूपां मेनां कन्यां कुलस्थितये विधिनोपयेमे ॥

मानसी मनःसंकल्पजन्याम्। मुनीनामपि माननीयां योगबलवादाभ्यामित्यर्थः। कुलस्य स्थितये प्रतिष्ठायै स्थिरत्वाय— स्थितिज्ञः— लोकव्यवहाराभिज्ञः ॥ कुलस्य स्थितये न तु कामाय। अत्र कामव्यपोहाय कुलस्य स्थितय इत्युक्तमिति परिसंख्या-अलङ्कारः ॥

१९. अन्वयः— सा नागवधूपभोग्यम् अम्भोनिधिवद्धसत्त्वं पक्षच्छिदे वज्रभृतो वृद्धेऽपि कुलेशाक्षतानामवेदनाज्ञं मैनाकमलुत ॥

नागवधूपभोग्यं— नागकन्यापरिणेतारम्। कुलिशाक्षतानां वज्रप्रहाराणाम्। लावेक्षत्वेऽपि गमकत्वात्समासः। वेदनानां ज्ञ इति ज्ञपधेति क प्रत्ययः। अथवा वेदनां जानीत इति वेदनाज्ञः स न भवतीति। उपपदमतिङ् इति समासः ॥ न वेदनाज्ञोऽवेदनाज्ञः,

Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri

वेदनाशब्देन समासः अलूर्यम्यश्चेति वत्॥
तमुद्रे कृता मैत्री येन ते॥ "बन्धूज्ञियाऽनुजा स्त्री"

२०. अन्वयः— अथ दक्षस्य कन्या भवपूर्व-
-पत्नी सती ततो पितुः अवमानेन प्रयुक्त
योग विसृष्टदेहा नन्दने तां शैलवधूं प्रवेदे॥
शैलवधूर्भार्य्या - "सती साध्वी पतिव्रता"

२१. अथेति प्रकरणान्तरोपक्रमद्योतनः - मङ्गलेति
अन्वयः— मया ता भूधराणामधिपेन
समाधिमत्यां तस्यां सम्यक् प्रयोगादयोत्सृता
यां नीतौ उत्साहगुणेन सम्पादिव उदपादि
साध्वाचरणाद्धेतोः, अपरीक्षितायां वरीतव्यायाम्॥ अत्र प्रयोगस्य सम्यक्त्वं नाम परात्मनोः
प्राबल्यदौर्बल्यादेर्विवेकपूर्वकत्वम्॥

२२. तस्यश्चेत्यन्वयः। स्थावराः स्थितिशीलाः शैलवृक्षादयः - जङ्गम्यन्ते *भुवं
गच्छन्तीति जङ्गमा देवातिथिमनुष्यादयः।
प्रत्नाः चिरन्तनाः [illegible] आचरणादित्यात्मनोहराः।
उत्सवशङ्खध्वनेरनन्तरं दृष्टे शैलेन्द्रे॥

CC-0. Prof Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

सुरवासेति क्वचिच्च सम्पद्यमान इति वक्तव्यं
च्युतेश्च। जङ्गमः - अत्र नागेशः -
गत्यर्थेभ्यः क्रियासमभिहारे यङ् भवत्येव।
अत एव स्थावरप्रतिद्वन्द्यर्थको जङ्गम इति
सिद्धम्। स्थितिशीलो हि स्थावरः,
तत्प्रतिद्वन्द्वी त्वशं गन्ता हि जङ्गमः। यत्तु
गत्यर्थादिभ्यः कौटिल्यभावगर्हायो वि-
शेषविवक्षितेन यङा क्रियासमभिहारार्थ-
यङः सत्कर्तौडिन्यन्यायेन बाधः। ताभ्या-
मर्थाभ्यां तदर्थस्य बाध इति तन्न।
तत्र न्यायस्य विधेयविषयत्वात्।
अचीकरितार्थविषयत्वाच्च। अत एवोरर्त्ती
- इत्र गत्यर्थकत्वात् क्रियासमभिहारे यङुदाहृतो
भाष्ये ॥

22. विदूरत्याद्रेः प्रान्तभूमे विदूरभूमेः।
सावित्री - जनयित्री पलवक्त्री - ङीप्रत्यया
दमन्ते लेटीति लालयान्ताल्काशधातो नीम्
प्रत्ययः। रत्नाङ्कुरेण। प्रभामण्डलं तेजःसमूहः।
उद्विनय। - उत्पन्नया।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

२४. अन्वयः — लक्ष्मीदया दिने दिने पारेवर्धमाना चान्द्रमसी लेखेव लावण्यमयान् विशेषान् ज्योत्स्नान्तराणि कलान्तराणि इव बुधोव। अत्र वाक्योपमालङ्कारः। मानविशेष प्रचुरान्। निशेषोऽवयवे मात्रावितिं उत्पलमाला। ज्योत्स्नायामन्तरमन्तर्धानं येषां तानि अथवा ज्योत्स्नायाम् अन्तरं विशेषो येभ्यस्तानि। ज्योत्स्ना अन्तरं व्यवधाने येषामिति वा विग्रहः। मध्ये नक्षत्र तथा छिद्रे व्यवधानेऽन्तरात्मनि। अवकाशेऽवहितेऽन्तरे विशेषेऽवयवेऽन्तरम्॥ इति हलायुधः। नन्वत्रैकेनैवशब्देन किं न चरितार्थता। न। प्रतिपदार्धमुपमेतिविवक्षणात्। ज्योत्स्ना-लावण्ययोस्तु वस्त्वन्तर्भावानैवशब्दस्तद्विवयः।

२५. पार्वतीति इति जुहावेत्यन्वयः। उपसर्गाणां धात्वर्थाभेकत्वज्ञानेन जुहावेति लिटि प्रयोग-स्यानुपपत्तेपि न कश्चिद् दोषः। पश्चात् अग्निजननात्प्रभृत्यनन्तरम्। तपसो निर्विघ्ना निवारिता सती समृद्धी इत्याद्यन्वयः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

२७. पुत्रवत: पुत्रश्च दुहितरश्च पुत्रा: पात्पुत्रौ स्वसृदुहितृभ्या -म्। इत्येकशेष:। सामान्यवाच्यपि पुत्रशब्दो ऽस्ति। तथाश्वलायनगृह्ये दर्शनात्- यदि कामयेत पुमांस एव मे पुत्रा जायेरन्निति। एवञ्च सामान्यविशेषवरूपोभयार्थवाचिन: पुत्रशब्दस्य सामान्यार्थत्वे पर्यायक्रमभङ्ग: तत्परिहारायतु विशेषार्थत्वे वाक्यार्थयोरनन्वय:। तथाहि प्रतिवस्तूपमालङ्कारे दृष्टान्त - दार्ष्टान्तिकयो र्वाक्यार्थयो र्बिम्बप्रतिबिम्ब भावेन नाम्नम्। तत्रानन्वयात् पर्याय - क्रमभङ्गदोषो वरम्। तदपेक्षयाल्पदोषत्वात्। महाकविप्रयोगे चासंभावनीयस्य तादृशो वाक्यार्थदोष:। नहि चन्द्रचक्षुरपि पर: स्वं शिरश्चरं न पश्येत् किमुत चक्षुष्मान्॥ अपत्यशब्दो ऽत्र सर्वनाम-वद्गौणद्विशेषान्तरवाचीत्यवधेयम्॥

२८. अन्वय:- प्रथमा शोभया या महतीश्रीरवा। तया यौवनेन स तया पूत इत्यादि॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तृतीया द्यौरिति त्रिदिवः। द्यौतिर्विषये त्रिशब्दस्य त्रिभागवत् पूरणार्थकत्वम्। दीक्षतेर्घञ्प्रत्ययविधानम्- दीक्षनि नना अत्रेति दीक्षा स्वामी। संस्कारः व्याकरणजन्या शुद्धिः। संस्कारवत्या व्याकरणलक्षणानुसारिण्या। शिरवादीपयोरवयवावयविवद्भावेनोपदेशः। महीभूतत्वनगहेन्मुखया तया मलमामाकर्म्मतत्कार्य्याणां दग्धत्वयता। विभूतितत्वे तु तत्रैव ज्ञानैश्वर्यभावत्वम्। स्निग्धवर्त्यादिद्रव्यवर्ती नाडीदीप इत्युच्यते घृतीवात्प्रीतिक्षणमुज्ज्वलालोकप्रदः शिखेत्युच्यते। आत्माशस्य ग्रहणात् पूतत्वं तच्छीकरादिसम्पर्कात् तत्रत्यानां दुरितक्षयः। मनीषिणः पूतत्वं सुकृतलाभः ऋक्थः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुष्ठु प्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग् भवतीत्यागमः।

२८. अन्वयः- सा बाले क्रीडारसं निर्विशन्ती एव तरुणीनां मध्यगता (सती) मन्दाकिनीसैकतवेदिकासु कन्दुकैरित्यादि।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

निवेशो यत्र मोक्षायो रित्यमरः। सैकते वु पुलिनेवु वेदिकाभिः सिकतासन्निवेशमयैः मण्डपविशेषैः। पुत्रकैः पाञ्चालिकाभिः। संज्ञायां कन्।

२६. अन्वयः - स्थिरोपदेशां तां उपदेशकाले प्राक्तनजन्मविद्याः शरदि गङ्गां हंसमाला इव नक्तं महौषधीमात्मभास इव ववोदिरे ॥ स्थेयानुपदेशः प्राग्भवीयो यस्या तादृशीं मेधाविनीम्- स्थिरो वासनारूपेण अवस्थितः। प्राक्तनजन्मविद्याः पूर्वजन्माभ्यस्तविद्या इत्यर्थः। अनेन स्वाभाविको विद्याविनय उक्तः - द्विविधो विद्याविनयः यदाह - विशारुतः - कृतकः स्वाभाविकश्च विनयः।।

३०. अनास्तवारुं मदत्य करणमिति मोजना मौनी रोलम्बमाला धनुरध विशिरवा: कौसुमा: पुष्पकेतोरिति साहित्यदर्पणे॥ असम्भृतमसम्पादितम्- अयत्नसिद्धम्- हस्तग्राह्यतादयः प्रसाधनाः इत्युक्तत्वात्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri

मदस्य अङ्गः तदपि विभूषणम् - करणं साधकतमम्। अङ्गमङ्गेः प्रशस्ताङ्गत्व। यौवनस्य मदकारणात्वं प्रसिद्धम्- उपादेशातिकामिनीनां यौवनमद एव ललितताने।

३१. अन्वयः- नवयौवनेन विभक्तं तस्या वपुः तूलिकया उन्मीलितं चित्रम् इव सूक्ष्मशिरीभिः भिन्नमरविन्दमिव चतुरश्रशोभि बभूव॥

अत्र तस्याः शारीरसुषमां वर्णयति- वक्तीकृतावयव संस्थानम्- चतुरश्रं शोभितुं शीलमस्येति इति शोभनेरितिनामनः। "तूलिका कथितालेख्यकूर्चिका तूलशौण्डयोः" इति विश्वः। उन्मीलितं- स्फुटं विकसितं समुत्कीर्णरूपमिति यावत्। अत्र नवयौवन-इत्यत्र नवशब्देन त्वयातत एवेदृक् कार्यकारि यौवनं लब्धप्रौढत्वे किं किं न कुर्यात् इति द्योत्यते।

३२. अन्वयः- अम्लानताम्रोष्ठनखप्रभाभिर्निक्षेपणात् रणद्भिरन्तावनेन तच्चरणावित्यादौ [illegible]

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

मुन्नतानतयोरङ्गुल्यो यौ नरवौ तयोः प्रमाभि
दीप्तिभिः। रागोऽनुरागे लाक्षायामिति
मादनः। रागः क्लेशादिके रक्ते मात्सर्ये
लोहितादिष्विति शाश्वतः। उदाहरन्ती-
अत्र गौणार्थत्वान्न ग्राम्यतादोषः। यथाह
दण्डी- निष्यूतोद्गीर्णदीप्ति। अवयवलक्षां
सञ्चारिणीम्- आतश्चोपसर्ग इत्यङ्-
स्कारणापचो भावे इत्यङापवादे घञि
अवलक्षायामसंज्ञायामिति रायक्षान्नात्य-
-न्ताय वाधा भवतीति॥ स्वेदाकुला।
हि पूर्वसेवितं लाक्षारसमुज्झन्तीति॥

33. अन्वयः— प्रत्यूषदेशालुब्धैः पुरन्ध्रीभिर्जिता
नि आदीप्तभिः राजहंसैः लक्षतासा सा
लीलाक्षिप्तविक्रमेषु गतेषु अनीयतेव।
सक्षतासेति राजहंससाम्यप्रतिपत्त्यर्थम्। ते
हि तथा प्रसिद्धाः प्रयोगेषु— यथा—
स्मर्तव्याः शैथिलासंहतरुचयो गोदावरी-
वीचयः' इति। यथा वा बक्रः यदि तथा
वेत्सि कैश्चिच्छ्रुधाऽस्तृणी मेनासितुमपि

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

सदेव। त्वं कृष्णं मे न हंस इति। सन्ततांसाः स्त्रियः पूज्या उन्नतांसास्तु पूरुषाः। इति सामुद्रिकवचनात्तल्याः प्राप्तास्त्यम्। अत्र देवा गतेषु विषयभूतेषु राजहंसन्यायेन विनयनादि सर्वमित्येवेष्यते॥ "पादाङ्कदं तुला - कोटि मञ्जीरो नूपुरो ऽस्त्रियाम्" भूषणा - -नान्तु शिञ्जेतमित्यमरानुशासनात्॥

२४. 'जङ्घा तु प्रसृता' इत्यमरः। आसेति वभूवार्थे तिङन्तप्रतिरूपकमव्ययमित्याह शाकटायनः। नामनस्तु अल् च गतिदीप्त्यादानेषु इति धातो र्लिटि रूपमाह। अल्प भूमावस्तु न शाब्दः। अलेरीति लुक्। निर्देशादीत्व शाब्दकौस्तुभे भट्टोजेः। न चातिदीर्घे इत्यत्र प्रत्ययप्रतिबोधो न युक्तः। तत्र हि क्रियापर - सम्बन्धेन नमा भाव्यम्। तदा च विनाधिता - र्थेऽपरीत्यं स्यात्। पर्युदासेन भाव्यम्। यत स्तत्र प्रतिषेधवाचिनः समासे गुणीभावात् क्रियाया न सम्बन्धः॥ आसेति प्रयोगः कालिदासप्रभृतिषु हृ दरीदृश्यते तद्यथा —

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

श्वस् भोजनदिक्षु : स्वरितेत्।

'प्रादुरास बहुलरजा-इति वीरिति' तेनास
Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
लोकः पितरमान् विनेत्रेति' च रघौ ॥

३५. अन्वयः - नागेन्द्रहस्ता स्त्वीच्य कर्कश
-त्वात् कदलीविशेषा एकान्तशैत्यात्
लोके वारणाहि रूपं लब्धापि तदूर्वोरुप
मानवाहा नाताः ॥ नागेन्द्राणामैरावता
दीनाम्- 'हस्तः करे करिकरे'- इति
विश्वः। एकान्तशैत्यात्कुतोः - नियत-
शीतलत्वात्। त्वचि कर्कशत्वात्-
अमूर्धमिस्तत्वात्त्वाः, दकारे इत्यलुक्। विशिष्ट
कदलः- नन्दनोद्यानादिप्ररूढाः कनक-
कदलीकाण्डा इति यावत्। उपमानम्
-वमितरत्र वाच्या अनुपयोगिन :।
लोके दृष्ट लोकदृष्टौ। लोकवृत्तं लोकस्थि
-वत्।

३६. काञ्चीगुणस्थानं - रशनादाम्नः
स्थानं नितम्बप्रदेश इत्यर्थः। एतावता
ननु - तन्मात्रेणैव प्रश्नावधारणा-
नुज्ञाविनयामन्त्रणे ननु— इत्यमरः
शेषमत इति शेषः- आवश्यके णिनिः।

एकान्तशैत्येन वनु शैत्यम्-
अतेन धर्मकाल एव लघुनी: शीतल-
मिति व्यक्तम्। व्यतिरेको ऽलंकारः,
तस्य चागं निरोधः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

ततस्त्वप्रत्ययः। त्वप्रत्ययस्तु गतार्थत्वान्न वक्तव्य इत्याह वामनः॥ पश्चात् आदौ नैःस्थ्येऽपि पश्चात्तपश्चर्य्यानन्तरम्। अनुमेयश्चोक्तः- अन्ये तु रीत्यन्तरेण व्याचक्षते- अनुमेयाचा-सौ दोषाच्च- सास्ति यस्येति। नन्वर्मधारयान्मत्वर्थीयो बहुव्रीहिश्चेत् तदर्थप्रति-पत्तिकर इति तु प्रायिकम्। 'प्रत्ययस्कादि-ति सूत्रस्थेनासुबवत इति मात्रप्रयोगेण क्वचिच्छ्राद्धनादरस्यापि सूचनात्कर्म-धारयान्मत्वर्थीयोऽपि क्वचिदिति ज्ञाप-नान्नैतत्प्रयोगानुपपत्तिरिति बोध्यमिति दीक्षितः शब्दरत्ने।' 'सा वीनीनीति मत्वर्थोधरयुगं धत्ते सरनेदावयम्-' आनैलालाद् विसङ्किसलयच्छेदपाथेय-वन्तः॥ अनिन्दितायाः सर्वावयसुन्दर्या-अनवद्यरूपाया इतिभावात्।

३७. नीनीमतेरुम्र नतनाभिरन्ध्रं प्रनेष्ट तन्वी तस्या नवरोमराजेरित्यादि- स्त्रीकटी-नल्वनन्धेत्थं नीनीवारेयणो वेत्यमरः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

'प्रादुरास बहुलक्षया-क्षविरिति' तेनास
Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
लोकः पितरमान् विनेत्रेति'-च स्थौ ॥

३५. अन्वयः- नागेन्द्रहस्ता स्त्वीच्य कर्कश
-त्वात् कदलीविशेषा एकान्तशैत्यात्
लोके वारणाहि रूपं लब्धापि तदूर्वोरुप
मानवाहा नाताः ॥ नागेन्द्राणामैरावता
दीनाम्- 'हस्तः करे करिकरे'- इति
विश्वः। एकान्तशैत्याद्धेतोः- नियत-
शीतलत्वात्। त्वचेः कर्कशत्वात्-
अमूर्धमस्तकात्त्वाच्च। दकारे इत्यलुक्। विशेष-
कदलः- नन्दनोद्यानादिप्ररूढाः कनक-
कदलीकाण्डा इति भावः। उपमानम्-
-वमितरत्र बाह्या अनुपयोगिन :।
लोके इह लोकदृष्टौ। लोकवृत्तं लोकइति
-वत्।

३६. काञ्चीगुणस्थानं- रशनादाम्नः
स्थानं नितम्बप्रदेश इत्यर्थः। एतावता
ननु- तन्मात्रेणैव प्रश्नावधारणा-
दशावैनयामन्त्रणे ननु— इत्यमरः
शोभत इति शोभि— आवश्यके णिनिः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

एकान्तनिर्मलेन वपुः शैत्यम्-
अतेन कर्कशत्व एव तदूर्वोः शीतत्व-
मिति व्यन्यते। व्यतिरेकी अलङ्कारः,
तत्र चार्थः विरोधः॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

ततस्त्वप्रत्ययः। त्वप्रत्ययस्तु गतार्थत्वान्न प्रयुक्त इत्याह वामनः॥ पश्चात् आदौ नैःस्थ्येऽपि पश्चात्तपश्चर्य्यानन्तरम्। अनुमेयश्चेति- अन्ये तु रीत्यन्तरेण आचक्षते- अनुमेयाच्च -सौ दोषाच्च- सास्ति यस्येति। न कर्म- धारयान्मत्वर्थीयो बहुव्रीहिश्चेत् तदर्थप्राप्ति -वत्तिकर इति तु प्रायिकम्। 'त्वप्रत्ययस्कादि ति सूत्रस्थेनासुवत इति मात्रप्रयोगेण क्वचिच्छ्राद्धनादरस्यापि सूचनात्कर्म- धारयान्मत्वर्थीयोऽपि क्वचिदिति ताप नानेनैतत्प्रयोगानुपपत्तिरिति बोध्यमिति हरिदीक्षितः शब्दरत्ने।' 'सा धीनोन्नति मत्यर्थोधरणं धत्ते सरेदावयम्-' आमेलालाद् विसङ्किसलयच्छेदपाथेय- वन्तः॥ अनिन्दितायाः सर्वावयसुन्दर्या- अनवद्यरूपाया इति यावत्।

३७. नीलीमतैक्षम्य ततनाभिरन्ध्रं प्रवेष्टा तन्वी तस्मा नवरोमराजेरित्यादि- स्त्रीन्फटी- CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. नत्वबन्धेऽपि नीलीवारिपङ्क्तेऽपि चेत्यमरः॥

अर्चि हीति: शिरसा स्त्रियाम्- इत्यमरः।

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

३८. अन्वयः- वेदीविलग्नमध्या सा मध्येन चारु नतित्रयं श्रोणीरोहणार्थं नवयौवनेन प्रयुक्तं सोपानमिव बभार॥ सोपानमिवे -त्युत्प्रेक्षा। वेदीवत् कृशमध्या- अनलग्ने विलग्नं च मध्ये मध्यम इत्यपि इति हलायुधः। वेद्या विलग्नं मध्यमिव मध्यं यस्याः इत्येवं विग्रहादिति यल्लिणा- वर्तः- अरुणगिरिनाथस्तु वेदीरिव विलग्न- मध्येति मन्यते। विलग्ने ह्रस्वीति- पूर्वविग्रहाश्रयणे वेदीविलग्ना वेदिमध्या वा स्यं स्यात्। उत्तरपदलोपात्। नव- यौवनेन प्रयुक्तमिति- नवयौवनेन निर्मिते तादृशं चारुत्वं सम्भवतीति भावः॥

---

३९. अन्वयः- अन्योन्यमुत्पीडयतुल्यलक्ष्म्योः पांडु स्तनद्वयं तथा प्रवृद्धं श्याममुखस्य तस्य मध्ये यथा सूत्रान्तरमप्यलभ्यम्॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

कर्मधारयतत्पुरुषे समानाङ्गे वाच्ये इति ङी-

Digitized by Sarayu Trust. CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Chennai and eGangotri

- इति। समासान्तः कुलगौरादौ बहुलवचनादसमासपक्षेऽपि पूर्वपदस्वस्य सुवः सुवेति ङ इति तत्रत्यवार्तिकम्। उत्पीडयत् उत्सन्धत्- श्यामसुरभस्य= कृष्णाच्चुकुस्य- विसतन्तु- वाया वृक्षोऽपि। 'अन्तरमवकाशावधिव्यवधानावधिभेदतार्थक इत्यमरः॥ उत्पलेकुवलये इवाक्षिणी यस्याः सा। अलम्बं वरीधृक्कलीकेनेति शेषः॥

४०. अन्वयः- तदीयौबाहू शिरीषव्याधिकुसौकुमार्यावितीमे वितर्कैः -इत्यादिलोके सुकुमारत्वमेव कामास्त्रत्यसाधकत्वमिति स्थिते सत्याह— कण्ठबन्धनस्रजौ कृतौ। कण्ठालिङ्गनं प्रापितौ। अत्र व्यतिरेको ऽलङ्कारः॥

४१. अन्वयः- भूषणभूष्यभावः साधारणो नम्रतेति - अलङ्कारालङ्कार्यभावः। मुक्ताकलापः- मुक्ताभूषणम्- कलापो भूषणे बर्हे तूणीरे संहतावपि इत्यमरः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

उभावपि अन्योन्यस्य मुख्यौ मुख्यौ च
नभूवतुरित्यर्थः ॥ मुक्तासमूहेन किं कण्ठो
ऽलङ्कृतः किं वा कण्ठेन मुक्तासमूहः इति
अपरिच्छित्तिः ।

४२. अन्वयः- लोला लक्ष्मीः चन्द्रं गता
(सती) पद्मगुणान् न भुङ्क्ते इत्यादि ।
द्वे चन्द्रपद्मे संश्रयः कारणं यस्याः तां
द्विसंश्रयां प्रीतिमानन्दमवाप ॥ लोला
चपला - रात्रौ चन्द्रप्राप्तिरहिते पद्मप्राप्तेश्च
-नियतावस्थानरहितेत्यर्थः ॥ पद्मे ये गुणाः
दिवा रमणीयत्वसौरभ्यादयः ॥

४३. अन्वयः- पद्मं मृणालोपहितं व्याधेः
निकुमे रक्तरत्नविशेषे तिष्ठतीति — अत्र
यथार्थबलादसिद्धस्यार्थित्वकल्पनमतिशयो-
क्तिरलङ्कारः ॥ विशदत्व स्मितत्वानुचकार
माणामिति वतीति तत्सम्बन्धविवक्षायां
दोवे वष्ठीति ष्वष्ठी । साधूनामुपकर्तुं लक्ष्मीं
वहुं निर्गमस्य प्रकृष्टान् कुलहीति कल

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

वनश्चरीदेवेन मृदङ्गवतां भवेयुरिति श्रीहर्षः ॥

४४. अन्वयः- अभिजातवाचि तस्यां अमृतस्रुता स्वरेणैव वज्रलेपतायां (सत्यां) अन्यवृष्टापि ताभ्यः इयमाना वितन्त्रीरिव श्रोतुः प्रतिकूलशब्दा भवतीति शेषः ॥ सुधास्रविणा- वज्रलेपता -यां वक्तुं वक्तायाम् । अभिजातवाचि मधुरभाविण्याम् । आदिकर्मणि क्तः ॥ अभिजातशब्दो येलक्षणया सुकुमारार्थपर्यव- -सायी । अभूदावाम्भोजदलाभिजातः ॥

४५. अन्वयः- प्रवातनीलोत्पलनिर्विशेषं अधीरविक्षेपितमायताक्ष्या तया मृगाङ्गना -भ्यो गृहीतं नु अथवा मृगाङ्गनाभिस्ताभ्यो गृहीतं नु ॥ प्रवाते वस्तुतवातस्थले यन्नी- लोत्पलं ततो निर्विशेषम् - गृहीतमध्यव -सितम् । चकितविलोकितम् । आयताक्ष्या विशालनेत्रया, स्मरलोचनया ।

४६. अन्वयः सुस्पष्ट एव शलाक्यया अञ्जनेन इति मल्लिनाथः । शलाकाग्रावस्कृताञ्जनं शलाकाञ्जनमितीतरे । विलासिनीनां चतुरौ दृक्सन्दर्भौ — इति वैजय-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

सौन्दर्येण यो मदस्तम्-

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

४७. लज्जा - अपत्रपा - बाला: प्रिया आ-
सामिति लालं भावस्तत्ता - त्वत्तो -
गुणवत्यतीति पुंवद्भावेन यपो निवृत्तः
यो हि गुणाधिक्यदर्शनेन लज्जितः स
स्वगुणेषु नादरं करोतीति लोकसिद्धम्॥
प्रक्रान्तप्रतिसन्धानभूतार्थविषयस्त च्छब्दो यदु-
पादाने नापेक्षते इति काव्यप्रकाशः॥

४८. अन्वयः- सा विश्वस्रजा एकस्थसौन्दर्य-
दिदृक्षया इव प्रयत्नात् यथाप्रदेशं विनिवेशि-
तेनोपमाद्रव्येण निर्मिता॥ चन्द्रारविन्दाद्यु
-पमानवस्तूनामित्यर्थः।

४९. अन्वयः- कामचरो नारदः कदाचित्
पितुः समीपे कन्यां तां प्रेक्ष्य स्निग्ध प्रेम्णा हरत्य
शरीरार्धहरां एकवधूं भाविनीं समा
दिदेश॥ स्त्रीत्वस्य अर्धं हरतीति
अर्धहरा - हरतेरनुद्यमने ड्च्- शरीरस्य
अर्धहराम्- कुलधुरन्धरादिवदवयवद्वारा
समुदायनिर्देशकत्वात्समासः। अन्यथा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

५०. अन्वयः — गुरुरतोऽस्याः पुगलभे वय-
स्थाये निवृत्तान्यवरामिलाषस्तत्स्थौ ।
हे मन्त्रपूतं हव्यं कृशानोः ऋते अक्षरा
-णां तेत्रांसि गाहीत्ति ॥ पुगलभे पौढे —
अतोऽस्मान्मारदवचनात् । निवृत्तोऽन्य
स्मिन् जामातर्य्यभिलाषो यस्य स तथोक्तः
साधुर्वाद्धिके चाहौ सञ्ज्ञने यामिधेय-
-वत् — इति विश्वः । पाक्षावैकल्पेन-
ग्राहे द्विकर्मकत्वं बहवो न मेनिरे — वस्तु
तः सर्वत्र ग्राहेरर्थेन द्विकर्मकत्वे जाया-
प्रतिग्राहितगन्धमाल्यामिति न स्यात् ।
हरदत्तस्य — अत्र कञ्चं अयाचितारं नहीं
ति । स्वतन्त्राः कनयः । यद्वा सुतां प्रति
निमित्तं दुहितृविषये ग्राहयितुं नोद्यायेतुं न
शशाकेत्यर्थेन व्याख्याय तत्र बुद्धयर्थत्वात्
सिद्धम्" इति पदमञ्जर्याम् — गृहीजिस्य-
एतेनायाचितारमिति व्याख्यातम् । ग्रहे र्बुद्ध
र्थत्वात् । यद्वा इषिशब्दोक्तमुखन्तसमोभ
— याहृतया द्विकर्मकतया भावे क्तिवचात्
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तु अर्धम् समप्रधानम् तदन्तम् चार्द्धशरीरेति स्यात्। कदाचिदिति यादृच्छिकत्वम्- कन्यानां दर्शने हे तत्पित्रादिप्रीतये तत् प्रवर्तये वा। भविनमर्कमादिशति सन्तः। अर्धशब्दस्य पुंल्लिङ्गत्वे तु शरीरैकदेशाहरा मित्येवार्धः स्यात्। एकवधूः - अस - पत्नीका वधूः। कामं चरतीति कामचरः॥

भगवान् याज्ञवल्क्योऽर्धं नपुंसकम्। इत्येतत् सूत्रं प्रत्याचष्टे- तद्यथा- "अथ पुनरयमे- कदेशे समास आरभमाणः षष्ठीसमासं बाधते। इष्यते च षष्ठीसमासोऽपि। तद्यथा। अपूपार्धं मया भक्षितम्। अपूपार्द्धं मया लब्धम् इति। एवं पिप्पलार्धमित्यपि भवितव्यम्।" हरदत्तस्य — इदं तर्हि प्रयोजनं समप्रधा- नेऽर्धे समासो मा भूदिति। इष्यते षष्ठी- समासोऽपि। तद्यथा च भगवान् पिङ्गल- नागः पठति स्वरार्द्धमिति॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तात मित्यर्थः। एतौ समजौ माद्रीपुत्रौ

तदेव कुड्यसन्देशेन - सन्देश उभयतो ग्रहणम्।

जघनशब्दः समुदायेन कटिभागे तदेकदेशे च पुरोभागे वर्तते। टी०.

प्रवासं गच्छतः स्मारणीयकम् - कर्तरि ल्युट्।

दिवापि जनसंबाधे नायकेन प्रदर्शितम्।

जनसमूहे -

नागरकाः = पाटलिपुत्रकाः। संज्ञाशब्दात्तु वृत्त्यादिभ्यो ढक्ञ् इति ढक्ञ् नागरेयकाः।

वत्सः प्रस्रवणे मेध्यः श्वा मृगग्रहणे शुचिः।

शकुनिः फलपाते तु स्त्री मुखं रतिसंगमे ॥ मूलम्

रसवीर्यविपाकाढ्यं श्वमांसस्यापि वैद्यके।

कीर्तितं इति तत्किं स्याद्ग्रहणीयं विचक्षणैः॥

। विपाक उपयुक्तस्य परिणतो मधुरादिः। मूलस्थं

अनुपस्कृता रतिः - अकृत्रिमा।

तथाविध एव श्रुतवान्शीलयेत् - मनसि समादध्यात्। शील समाधौ।

कौलाः पौरुषेया गुणाः - कुले भवाः पुरुषनिष्पन्नाश्च।

त्वयापि चोच्चसंबन्धं पश्चाज्जातिषु संनमेत्।

भावयन्ती नितरां मुखायासे, प्रेमार्द्रौ शान्तौ

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

तु अर्थस्य समप्रविभागवचनत्वाद्ईश्वरीरिति
स्यात्। कदाचिदीति यादृच्छिकत्वम्-

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

प्रजिहितया By a female employed to do any work.
मन्दपदेशा = हीनाभिजना. शाकुन्तलेऽपि
व्यपदेशशब्दः कुलवनितया प्रयुक्तः। व्यपदेश-
मानिलयितुं किमीहसे जनमिमं च पातयितुम्।
बहुसाधारणः पतिः - बहुवल्लभः।
प्रायेण धनिनां दारा बहवो निरवग्रहाः।
निरङ्कुशाः।
प्रस्तुते च परिचये तस्या हस्ते न्यासं निक्षेपं च निदध्यात्
न्यासाः स्थाप्याश्चिरकालग्राह्याः। निक्षेपो ल्प-
कालग्राह्यः।
वैकारिको रत्नानां परिशोधकः।
निर्भिन्नसद्भावा - प्रस्फुटितसंभृतभावा।
प्रकृतिवाहिनी - अकुपिता।
परुषयित्वापि — परुषमुक्त्वापि-
अनभियुक्तप्याकारयति - तद्भावसूचनमाकारं
दर्शयति। (आकारं करोतीति तु वृत्त्यर्थः स्यात्).
सौहृदं प्रतिसन्धया द्विधीर्ज स्त्री निवक्ष्यति-

योगशब्दः सामान्यवाच्यपि लोकप्रसिद्ध

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

हातुमित्यर्थः। एतौ यमजौ माद्रीपुत्रौ सुखोचितौ, आर्यया कुन्त्या यत्नेन लालितौ इदानीं बहु क्लेशं सहेते। सुकोमलशय्यासयि यौ अग्लासिष्टां तौ इदानीं केवले स्थण्डिले शयाते। ज्वलप्रायां वनभूमिमधिशयानयोरेतयोः सुकुमारो देहः कठिनः संवृत्तः। सङ्काशभावात् यद्वा दीर्घाश्चैनयो मूर्धजाः इतस्ततो विश्लथा विलम्बन्ते॥ वनान्तो वनभूमिरेव शैय्या...

२७. अन्वयः- इमां तावत्कीं धियं अहं न वेद। चित्तवृत्तयः विचित्ररूपाः खलु परां भवदापदं विचिन्तयतो मम चेतः... चित्तवृत्तयो विचित्ररूपा धीराधीरा हि अनेकप्रकाराः, आत्मदृष्टान्तेनानुमातुं न शक्यन्ते। अहन्तु इमं व्यसनसम्पातं भावयन्ती नितरां मुह्यामि, प्रमाष्टी शोको

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri

मां कर्षति, इन्द्रियग्रामं प्रपीडयति चैतोऽवसादयति च ॥ प्रगता तभा निचारोऽस्मादिति प्रतिभम् ॥

३८. अन्वयः- यस्त्वं (पुरा) महाधनं शयनमधिरूढः सन् ..... सि त्वम् अदभ्रदर्भां (बहुकुशाम्) शिवाहतैः क्रोष्टुरसितैः ॥ स्थलीमकृत्रिमभूमिम्। जानपदेत्यादिना ङीष् ॥ कृ नु गतास्ते रक्तकण्ठाः ललितोदारपदबन्धं गीतं गायन्तो मागधा ये उषसि त्वां प्रावोधयन्। कण्ठकेधनदसुरवं -स्पर्शमनुभवन् यथाकथञ्चिन्निद्राणः श्रीमैरशुभैर्गोमायुरुतैर्निद्राभञ्जनवा- -क्षीषि। अहो दुर्ललितस्य विधेर्वि- -लसितम्!

३९. अन्वयः- हे नृप! पुरा द्विजातिदौवेण अन्धासा [illegible] सामरणीयकमुपनीतम्

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अथ वन्यफलाशीनस्ते तां दशां समं वरं कार्श्यं चेरुः ॥ द्विजभुक्तावशिष्टेन, अन्नेन. द्वे जाती येषां ते द्विजातयः । सहोक्तिरलङ्का-रः ॥

४०. अन्वयः - अनातपं मणिपीठशायि-नौ यौ ते चरणौ राजशिरःस्रजां रजः अरञ्जयत् तौ मृगद्विजालूनशिरवेषु बर्हिषां वनेषु निवीदतः ॥ कुशकाशनिम्न-शिखाग्रेषु । नृपतिवृन्दमौलिमालानां परागो गौरतामनयत् । रत्नमयपीठारूढौ अष्टराज्यस्य ते तावेव चरणौ दर्भमय्यां भूमौ आसाते ॥

४१. अन्वयः - यदियं दशा द्विषन्निमित्ता ततो मे मैनः समूलमुन्मीलयति इव । वैरेयथासितनौर्यसम्पदां मानिनां पराभवो-पि उत्सव एव ॥ वैविन्दो त्यायन्न दुःख-येत्याह । मानहानिर्दुःसहा । द्विषतो निमि-त्तं यस्याः सा ॥ द्विषोऽमित्रे इति शतृप्रत्ययः

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

मां कर्षति, इन्द्रियग्रामं उपीडयति चेतोऽवसाययति च ॥ प्रगता तभा निचारोऽस्मादिति प्रतमम् ॥

३८. अन्वयः- यस्त्वं (पुरा) महाधनं शयनमधिरूढः सन् ..... सा त्वम् अदभ्रभीं (बहुकुशाम्) शिवाहतैः क्रोष्टुरसितैः ॥ स्थलीमकृत्रिमभूमिम्। जानपदेत्यादिना ङीष् ॥ कु नु गतासी रक्तकण्ठाः ललितोदारपदबन्धं गीतं गायन्तो मागधा ये उवासि त्वां प्रबोधयन्। कण्टकवेधनदसुरवं स्पर्शमनुभवन् यथा कथञ्चिन्निद्राणः श्रीमैरघुभैः जोमायुरुतैः निद्राभञ्जामलाक्षीषि। अहो दुर्ललितस्य विधेर्विलसितम्!

३९. अन्वयः- हे नृप! पुरा द्विजातिशैवेन अन्यास्त्रवेदनं ते सुः रामणीयकमुपनीतम्

CC-0. Vak Sarayu Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS and eGangotri

अद्य [illegible] प्रशंसा समं वरं कार्श्यं करोति ॥ द्विजभुक्तावशिष्टेन, अन्नेन. द्वे जाती येषां ते द्विजातयः । तहीन्निरलङ्घ्य । -ए: ॥

४०. अन्वयः - अनातं माणिपीठशायि- -नौ यौ ते चरणौ राजाशीरः स्रजां रजः अरञ्जयत् तौ मृगाद्विजालूनशिरवेषु बर्हिणां वनेषु निवीदतः ॥ कुरङ्गानिद्र- -द्विन्नाग्रेषु । नृपतिवन्दमौलिमालानां परणो गौरतामनयत् । रत्नमयपीठसंढौ अष्टराज्यस्य ते तावेव चरणौ दर्भमय्यां भूमौ आसाते ॥

४१. अन्वयः - यदियं दशा द्विषन्निमित्ता ततो मे मैनः समूलमुन्मीलयति इव । वैरयर्थासितवीर्यसम्पदां मानिनां पराभवो -पि उत्सव एव ॥ दैविनो त्यापन्न दुःख- -येत्याह । मानहानिर्दुःसहा । द्विषतो निमि -त्तं यस्याः सा ॥ द्विषोऽमित्रे इति शतृप्रत्यय

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

४२. अन्वयः- हे नृप! शान्तिं विहाय तत्प्रसिद्धं तेजो धाम शत्रूणां निवर्हणा -य सन्धेयङ्गीकुरु, प्रसीद। निस्पृहा विततृष्णा मुनयः रिपून् निर्जित्य शमेन क्रोधवर्जनेन सिद्धिं व्रजन्ति भूमतस्तु नः। कैवल्यकार्य्यवद् रक्षाकार्य्यं न शान्तिसाध्यम् ॥

४३. अन्वयः- धामवतां परः सरः .... रतिमधिकुर्वते चेत्तर्हि मनस्वि -ता निराश्रया (सती) हता हन्त! सन्तोषं स्वीकुर्वन्ति। तेजस्विजनैक -शरणत्वान्मनस्वितायाः। अतः पराक्रमितव्यम् ॥ अस्य कर्त्रभिप्राये स्वीरेतमितः- इत्यात्मनेपदं प्रसिद्ध -म् ॥

४४. अन्वयः- अथ निरस्तविक्रमः सन् चिराय क्षमामेव सुखस्य साधनं पर्येषि तर्हि लक्ष्मीपतिलक्ष्यं कार्मुकं विहाय जटा-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

धरः सन् इह पावकं सुहुधि ॥ यथेवि॰
अवगच्छसि। पावके होमं कुरु, अधिकरणे
कर्मत्वोपचारः।

४५. अन्वयः- वरेषु निकृतिवरेषु तान्तु
भूरिधाम्नस्ते समयपरिरक्षणं न क्षमम्।
विजयार्थिनः क्षितीशा आरेषु सोपधि
सन्धिदूषणानि विदधति हि ॥ केनचिद्
व्यजेन दोषमापाय सन्धिं दूषयन्ति वि-
-घटयन्तीत्यर्थः॥ आरेषु विषये, सोपधि
सन्धटं यथा स्यात्तथा ॥

४५. अन्वयः- विधिसमयनियोगाद् दीप्ति-
संहार जिह्मं शिथिलवसुमगाधे आपत्
पयोधौ मग्नं स्थितिमिरमुदस्योदीयमानं
त्वां दिनादौ दिनकृतमिव लक्ष्मीः भूयः
समभ्येतु ॥ दीप्तिः प्रतापः आतपश्च।
तस्याः संहारेण जिह्मम्प्रसन्नम्। शिथिल
वसुं शिथिलधनम् अन्यत्र शिथिलरश्मिम्
वसुदेनेऽग्नौ रश्मौ च वसु तोये धने मणौ- इति वै.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

विधिर्दैवम्। विधि र्विधाने दैवे च-
समयः कालस्तयो र्नियोगान् नियम-
-नाद्धेहतोः। समम्येतु भजतु -
आशीर्लिङ्लोटौ -इति लोट ॥

शब्दार्थविमर्शो प्रथमः सर्गः पूर्ति-
-मगात् ॥

अथ द्वितीयसर्गप्रारम्भः —

१. अन्वयः- अथ वृकोदरः प्रियया विहितां मनः प्रियां गिरं गरीयसीं नि-श्चित्य उपपत्तिमत् ऊर्जिताश्रयं वचनं नृपमूचे ॥ सारवत्त्वाद् आदरयोग्यां -मिणीयि। विपूर्वस्य दधातेः क्रिया-सामान्यवाचिनो योग्यविशेषपर्यवसानात्। ऊर्जिताश्रयमुदाराभिधेयम्। full of noble sense.

२. अन्वयः- मानिनो हनेदृमयेन चक्षुषा वारितो वीक्ष्य यदवोचत् दुर्वचं

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तद्वचनं नागाधिपस्यापि विस्मयं विदधीत।
परितो वीक्ष्य समन्तात् विविच्य। सर्वा-
-वस्थां पर्यालोच्य। केनापि वक्तुमश-
क्यं तद् लपितं बृहस्पतेरपि विस्मयं
जनयेत् अन्येषान्तु का कथा। आभि-
-जात्याभिमानिनो - उदात्तवंशसम्भूता।
स्त्रीणामपि वचः शास्त्रमनुसृणद्धि हितं
चानुबध्नाति इति उपादेयं तत्॥

२. अन्वयः- विषमो पि नयः पयसा-
-माशय इव कृततीर्थैः विगाह्यते। यः
कृत्यवर्त्म सत् उपन्यस्यति सतु तत्र
विशेषदुर्लभः॥ विषमः दुर्बोधः, दुर्वि-
ज्ञेयः। अन्यत्र दुष्प्रवेशः। कृततीर्थैः =
विहितबोधोपायः, सम्पादितज्ञलावतार-
श्च। सत् साधु सम्यक् इतियावत्
उदाहरति। उपन्यासस्तु वाङ्मयमुपोद्घात
उदाहारः — यथा केचित् कृततीर्थैः
पयसि गम्भीरे ये प्रवेशाः सन्ति तीर्थ-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

-करस्तु निरलङ्कारो वा तावपि
निगूढं तत्त्वं सति वक्तरि बोद्धारः
सन्ति वक्ता तु न सुलभ इयच्च
साधु वक्तीति युज्यते विस्मय इति
तात्पर्यार्थः ॥

४. अन्वयः- परिणामसुरवे गरीयसि
क्षतौजसां व्यथनेऽस्मिन् वचसि
अतिवीर्यवति अल्पीयसि भेषजे
इव बहुगुणो दृश्यते ॥ परिणामः
फलकालः परिपाकावस्था तत्र सुखे
हितकरे - शस्तं चाथ त्रिषु क्लेवाय-
पूरायं सुखादि चेत्यमरः । सुखशब्दस्य
विशेष्यलिङ्गत्वम् । उक्तञ्च - स्वल्पा
च मात्रा बहुलो गुणश्च । ~~अ~~
annoying to the weak. हतप्रभावाः
परिणामसुखः शुभोदर्कः ।

५. अन्वयः- सचिरार्थो इयं इष्टगुणा-
-य भवेदपि वैचनाय । गुणग्रहा

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

विपश्चितो वचने वक्तृविशेषानिःस्पृहा ननु ॥
हृद्याभिधेया। ह्यौणे वचने का श्रद्धा —
गुणानां ग्रहा गुणपक्षपातिनः। वक्तृविशेषे
स्त्रीपुंसादिलक्षणे निरास्थाः खलु। इष्ट-
गुणायेत्यत्र इष्टशब्दो वर्तमानकाल-
विहितेन क्त प्रत्ययेन निष्पादितोत्तर-
पदः, ततश्च इष्टो गुणो यस्येति
विग्रह एव समीचीनः प्रतिभाति ॥

६. अन्वयः - हे नय! चतसृष्वपि विद्या
-सु निरूढिं गता। विवेकिनो ते मतिः
कथं करिणो पङ्कमिव विपर्ययमित्य अव-
-सीदति। ख्यातिं गता सदसद्विचार-
निपुणा। discriminating intellect.
करेणुः जम्बालमिव। विपर्ययं विपर्या
-सं वैपरीत्यमविवेक इत्यर्थः। सर्वासां
विद्यानां पारदृश्वरी ते बुद्धिस्तथा-
विधास्य। असिते द्विपो वैपरीत्यमवलो-
-क्य बलवद् दूये ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

७. त्रिदशैरपि यस्या अवगीतां दशां
गमिते सति सुरैरपि सम्भावितवृत्ति-
र्वीरुधमवसीदति इतियत् अतःपरं
किं विधुरमस्तीति शेषः॥
बहुमतप्रसरं समादृतोदयम् अथवा
- निश्चितसद्भावम्। विधुरं कष्टम्-
विधुरं प्रत्यक्षवाये स्यात् कष्टविश्लेष
योरपि इति वैजयन्ती। Inauspicious
(in existence and progress of which
was respected even by the gods.
अस्ति भवन्तीपरः प्रथमपुरुषेऽप्रयुज्यमानो
पि अस्तीति भाष्यकारः। शत्रुकृतं
निष्कारं प्राप्य अरण्यं समाश्रितो भवान्
यन्मुनीनामाचारं प्रपन्नस्तन्नक्षत्रियस्य
सर्वथा न योग्यम्॥
८. अन्वयः- भूतिमिच्छता सुमेधसा
गुरुः अस्वन्ततरः द्विषतामुपरि
पर्वणः। महानपि फलसम्पत्प्रवणः
वीरुधः न समवैति इति शेषः॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अभ्युदयं वाञ्छता। शोभनबुद्धिना अत्यन्त
दुरन्तः क्षयोन्मुखः परेषामुदयः सोढुं शक्यः
फलोन्मुखोन्मुखो व्यसनागमो न। शत्रु-
कृतस्य परिभवस्य प्रतीकारे ऽनुद्योगः
न पौरुषावसादनिमित्तकः किन्तु
उपेक्षाहेतुकः इति शङ्कायामुपेक्षाकालं
तावद् वक्ति॥ सम्यग् भूतौ गुणोत्कर्षे
हारभेदे पि स्त्रियामिति मेदिनी॥

६. अन्वयः- कृती परस्य क्षयघुक्तिं
अचिरेण भूयसीं आत्मनश्च विपरीतां
विगणय्य उपेक्षते अन्यथा.... आशु
विनीं दुरन्तां च विचार्य। उपेक्षते
अनीहया प्रतीक्षमाणस्तिष्ठति उदास्ते
इति यावत्। क्षयेण योगः इति क्षययोगः

७० अन्वयः— उदेष्यतीं द्विषतां प्रभु-
शक्तिमनीहया अनुपालयतां महीभुजां
श्रियो जननिर्वृतिभयादिव आचिराद्
अपयान्ति॥ [illegible] power of.....

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri

प्रभुशक्तिः कोषदण्डजं तेजः। स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोषदण्डजम् इत्यमरः॥ अत्राह कामन्दकः—

स्त्रीभिः षण्ढ इव श्रीभिरलसः परिभूयते। कौलीनशङ्कया। उक्तञ्च नियक्षमरिवलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा। मन्ये हीनपुरुषसंश्रयहेतुकात् कौलीनाद् भीता कमला तं विहाय अन्यत्र प्रयाति॥

"स्खलाप्रहते समे"

११. अन्वयः- क्षयमुक्तमपि स्वभावजं शिवं धाम दधतं समृद्धये उदितं अनयामं नयं प्रजाः प्रतिपच्चन्द्रमिव प्रणमन्ति॥ शिवं सर्वलोकाह्लादकं क्षात्रं तेजः प्रकाशश्च। क्षयमुक्तमुत्सहमानम्। अन्यत्र उदितं उदितम्। अनयामयायरहितमविनाशिनम्- unfailing. । प्रतिपच्चन्द्रम्-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

श्रियं हि सत्सोत्साहो दुर्बलो ऽपि समश्नुते
इति कामन्दकवचनप्रामाण्यात् क्षीणस्य
अप्युत्साह एव कार्य्यसिद्धे निदानम् ॥

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

उर्वीरितम् — अवशिष्टम्। (मालतिकाग्निमित्रे)

विवेकविश्रान्तमभिहितम् — विवेकेन विश्रान्तं विरहितम्। विवेको विश्रान्तो यस्मिन्कर्मणि तत्तथा। दृष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावलिः काव्यमिति दण्डी।

द्राघवतीमतिक्रामन्तीमिव पश्यामि (अतिशयानामित्यर्थः।

आकृतिविशेषप्रत्ययोदेनामनूनवस्तुकां संभावयामि

पात्रविशेषे न्यस्तं गुणान्तरं व्रजति शिल्पमाधातुः।
जलमिव समुद्रशुक्तौ मुक्ताफलतां पयोदस्य॥

प्रश्ने नियुक्तः = प्राश्निकः।

न परिहीयते प्रतिदिनो गणदासः (न न्यूनो भवति).

यद्यप्येवं तथापि राजपरिग्रहोस्य प्रधानत्वमुपहरति।

अतिभासुरत्वं पुष्यति भानोः परिग्रहादनलः
अधिगच्छति महिमानं चन्द्रोपि निशापरिग्रहीतः॥

भवतु दृश्याम उरभ्रसम्पातम्।

वणिक् = क्रयविक्रयिकः।

निपुणतरं गृहीतोपि द्रव्यपरिग्रहो बुद्धिलाघवं प्रकाशयति।
प्रभवन्त्योपि भर्तृषु कारणकोपाः कुटुम्बिन्यः।
(यो मे स्वप्नेपि नेच्छति कुर्वीते न करग्रहम्।
महान्तो नाममात्रेण जायन्ते पतयो भुवः॥)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

वयोवृद्धत्वाद्गणदासः पुरस्कारमर्हति — precedence.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

नेत्रगतायामस्यां कानि विसंवादशङ्कि मे हृदयम्।
सम्प्रति हि अखिलसभाधिं मन्ये येनेयमालिखिता॥

अप्राप्तिर्विप्रलम्भः स्याद्यूनोर्जात्यभिलाषयोः।
विप्रलम्भस्य भेदाः स्युरयोगो विरहस्ततः॥
प्रवासः शाप: करुणा मानसाश्चेति षण्मताः।
तालान्तरालवर्ती यः कालो सौ लय ईरितः।
अहो प्रयोगाभ्यन्तरः प्रश्नः।

शङ्खे तैले तथा मांसे वैद्ये ज्योतिर्विदे द्विजे।
यात्रायां वापि निद्रायां महच्छब्दो न दीयते॥ पथिः इति पाठः।
भूतेन्द्रभारतेशात्प्राङ् महच्छब्दो निरर्थकः।
दुरर्थे ब्राह्मणे वृद्धिमोजौषधपथादिषु॥

भ्रान्तिमद्वारियन्त्रम् — अत्र प्राचुर्येर्थे मतुप्.

क्लीबे ऽम्बरीषं भ्राष्टौ ना कन्दुर्वा स्त्री दिवी स्त्रियाम्
निष्पाणिकन्दुरि वौदराभ्यन्तरं दह्यते - इत्यमरः।

कालविशेषवसरे ऽव्यापारे न परतन्त्रे च।
मध्ये तथोत्सवे च क्षणशब्दः कथ्यते बुधैः॥ इति टीकाकाराः।

द्वावपि किल गमिनौ प्रयोगनिपुणौ च।
कृतो मयोपायोपक्षेपः।
मौर्वी रोलम्बमाला धनुरथ विशिखाः कौसुमाः
पुष्पकेतोः।
भवता एवंस्वे प्रतिज्ञातम् (प्रतिश्रुतम्).

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

(मालविकाग्निमित्रे)

उर्वीरितम् — अवशिष्टम्.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

विवेकनिश्रान्तमभिहितम् — विवेकेन विश्रान्तं विरहितम्। विवेको विश्रान्तो यस्मिन्कर्मणि तत्तथा। इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावलिः काव्यमिति दण्डी।

इरावतीमतिक्रामन्तीमिव पश्यामि (अतिशयानामित्यर्थः।

आकृतिविशेषप्रत्ययादेनामनूनवस्तुकां संभावयामि

पात्रविशेषे न्यस्तं गुणान्तरं व्रजति शिल्पमाधातुः।
जलमिव समुद्रशुक्तौ मुक्ताफलतां पयोदस्य॥

प्रश्ने नियुक्तः = प्राश्निकः।

न परिहीयते प्रतिद्वन्द्वी गणदासः (न न्यूनो भवति).

यद्यप्येवं तथापि राजपरिग्रहस्य प्राधान्यमुपहरति।

अतिभासुरत्वं पुष्यति भानोः परिग्रहादनलः
अधिगच्छति महिमानं चन्द्रोऽपि शिवपरिग्रहीतः॥

भवतु दृश्याम उरभ्रसम्पातम्.

वणिक् = क्रयविक्रयिकः।

निगेतुरद्रव्यपरिग्रहोऽपि बुद्धिलाघवं प्रकाशयति।

प्रभवन्त्योऽपि भर्तृषु कारणकोपाः कुटुम्बिन्यः।
(योगे स्वप्नेऽपि नेच्छन्ति कुर्वते न करग्रहम्।
महान्तो नाममात्रेण जायन्ते पतयो भुवः॥)

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

वयोवृद्धत्वाद्गणदासः पुरस्कारमर्हति — procedure.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

चित्रगतायामस्यां कानि विसंवादशङ्कि मे हृदयम्।
सम्प्रति द्विचिलसभाधिं मन्ये येनेयमालिखिता॥

अप्राप्तिर्विप्रलम्भः स्याद्यूनोर्जातमिलाषयोः।
विप्रलम्भस्य भेदाः स्युरयोगो विरहस्ततः॥
प्रवासः शाप: करुणा मानसाश्चेति षण्मताः।
तालान्तरालवर्ती यः कालो सौ लय ईरितः।
अहो प्रयोगाभ्यन्तरः प्रश्नः।

शङ्खे तैले तथा मांसे वैद्ये ज्यौतिर्विदे द्विजे।
नहि इति पाठः।
यात्रायां वापि निद्रायां महच्छब्दोऽपि नदीयते॥
भूतेन्द्रभारतेशात्प्राङ् महच्छब्दो निरर्थकः।
दुरर्थे ब्राह्मणे वृद्धिमोज्यौषधपथादिषु॥

भ्रान्तिमद्वारियन्त्रम् — अत्र प्राचुर्येर्थे मतुप्.

क्लीबे ऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम्
त्रिषणिकन्दुरि वौदराभ्यन्तरं दह्यते - इत्यमरः।

कालविशेषेवसरे ऽव्यापारे ✕ पारतन्त्र्ये च।
मध्ये तथोत्सवे च क्षणशब्दः कथ्यते बुधैः॥ इति टीकाकाराः।

द्वावपि चित्रगामिनौ प्रयोगनिपुणौ च।
कृतो मयोपायोपक्षेपः।
मौर्वी रोलम्बमाला धनुरथ विशिखाः कोसुमाः
पुष्पेक्षोस्तोः।
भवता पश्चात्तस्मै प्रतिज्ञातम् (प्रतिश्रुतम्).

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

इक्षो रसो यः सम्यङ्नो चनः किञ्चिदुवाचितः।
मन्दं मत्स्यन्दते तस्मान्मत्स्यण्डीति निगद्यते ॥
इति भावप्रकाशः। अथवा मत्स्यण्डिका शर्करा विशेषः।
मदनव्याधिना परामृष्टा = स्पृष्टा.
तत्त्वावबोधैकरसो न तर्कः।
बाला स्त्री प्राणदा प्रेक्ष्या तरुणी प्राणहारिणी।
प्रौढा करोति दृढत्वं वृद्धा मरणमादिशेत् ॥
चूताङ्कुरं विचिन्वत्यावयोः पिपीलिकामिर्दष्टम्
अत्र ललितालङ्कारः — तल्लक्षणं यथा —
वर्ण्ये स्याद्वर्णवृत्तान्त प्रतिबिम्बस्य वर्णनं ललितम्।
केन प्रसाधनकलायामपि विनीतोसि।
वात्सल्याद्यत्र मान्येन कनिष्ठस्याभिधीयते।
इत्यवधारके वाक्यमाशीः सा परिकीर्तिता ॥ इति।
आशीरिष्टजनाशंसा इति दर्पणे।
मुग्धे भ्रमरसम्बाध इति वसन्तावतारसर्वस्वभूतः
किं न चूतप्रसवोऽवतंसनीयः।
दुर्जातिबन्धुरयमक्षहरीश्वरो मे इति रघौ।
बन्धुरधूर्तयोः। इत्यमरः।
समापत्तिदृष्टः। तयोः समापत्तिषु कातराणि इति
कुमारे। क्रियासमापत्तिनिवर्तितानि इति रघुवंशे।
राजा विस्रस्तचरणां देवीं सुप्तप्रबुद्धिकां आगतां।
विस्रस्तव्याकुलौ समौ — इत्यमरः।
अन्तरेणपरं विद्यात् विनामध्याधयोरपि — मेदिनी.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

अहो अ दीर्घरोषता तत्रभवत्याः।

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

चरणं रुजा करीतं कलभाषिणि मां च पीडयितुम्—
अत्र प्रस्तुतयोरग्निमित्रदेवीचरणयोः पीडास्यैक क्रिया-
न्वितत्वात् तुल्ययोगितालङ्कारः।

छेदो दंशस्य दाहो वा क्षतेवा रक्तमोक्षणम्।
एतानि दष्टमात्राणामायुषः प्रतिपत्तयः॥

शिरास्वदृश्यमानासु योज्याः शुक्रजलौकसः।

सोपसर्गो वो नक्षत्रम्।

समुद्रगृहमित्युक्तं जलयन्त्रनिकेतनम् इति
हारावली।

अहो कुम्भीलनैः कामुकैश्च परिहरणीया चान्द्रिका.
कात्स्न्र्येन निर्वर्णयितुं यत्पमिच्छन्ति तत्पूर्वसमागतमा
नच प्रियेवायतलोचनानां समग्रपातीनि विलोचितानि॥

षण्ढो वर्षवर स्तुल्यौ — इत्यमरः-

येऽल्पसत्त्वा प्रथमाः क्लीबाश्च स्त्रीस्वभाविनः।
जात्या नदुष्टाः कार्येषु ते वै वर्षनराः स्मृताः॥

दाक्षिण्यं नाम बिम्बोष्ठि वैम्बिकानां कुलव्रतम्—
बिम्बं मुखमनुवर्तन्ते ते वैम्बिकाः। मुखच्छायानु-
वर्तिनः। अग्निमित्रवंशजानामिति टीकाकाराः।

मालविकामुत्स्वप्नायते— मालविकामुद्दिश्य
स्वप्ने किं चिद्वदति।

अपि निर्विघ्नमनोरथो विनासङ्केतो मिधुनस्य.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

किं नु खलु दुर्दिन एवाद्य नीलिं देवः पृथिवी विस्मरति। अयमर्थः। ददुराण्यमात्रोद्यानेन सञ्जातदर्पो मेघः कदाचिद्वर्षति परं तदा भगवतीं वसुन्धरां न विस्मरति तस्यामनुरागं बिभर्त्येव।

बन्धनभ्रष्टो गृहकपोतको बिडालिकालोके पतितः।

दुःखायते च हृदयं सुखमश्नुते च।
तथापि बिसिनीपत्रगतं सलिलमिव वेपते मे हृदयम्।

आगामि सुखं वा दुःखं वा हृदयं तमर्थीकरोति सूचयति -

चन्दनं वल्ल मया पादुकापरिभोगेन दूषितम्।

इमां पतिसुदुर्जातेः —— V. II. पर्याप्तिः स्यात् परित्राणम् —— इत्यमरः।

पत्रोर्णं चौतकौद्येयं बहुमूल्यं महाधनम् —— इत्यमरः।

मया नैभृत्यमवलम्बितम् —— स्थैर्यं, तारस्यम्

तेरव मुद्वेजयति —

परितोषिकं प्रतीच्छतु -

न हि कमलिनीं दृष्ट्वा ग्राहमवेक्षते गजः।

मालविकाग्निमित्रो भरतवाक्यविषयकं कारयेत्

रिप्पणमवश्यमवधेयम् —— 'सत्यत्र नाटकाने भरतेन सर्वकालसाधारण्येऽप्याशंसावचने कर्तव्ये

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

तत्कालराजोपलक्षणमिति मन्तव्यम्' —

Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri

द्विविधो गृहस्थो यायावरः शालीनश्चेति। तयोर्यायावरः प्रवरः। याजनाध्यापनप्रतिग्रहरिक्थवर्जनात्। षट्कर्माधिष्ठितः प्रेष्यनृत्यदग्रहग्रामधनधान्ययुक्तो लोकानुवर्ती शालीनः इति देवलः।

महामहिमो भागुरायणस्य प्रतीकवत्या शिष्यै-
विहितनामोऽनेवास्तिनो इरदासस्य भूमिकां सम्पा-
दयामि - I assume the role of Hari-dasa
named after his external appearance.

यातं श्रोत्ररसायनं रचयितुं वाचः सतां सम्मताः
व्युत्पत्तिं परमामवाप्तुमधिगं लब्धुं रसस्रोतसः।
भोक्तुं स्वादु फलं च जीविततरोर्यद्यस्ति ते कौतुकं
तद् भ्रातः शृणु राजशेखरकवेः सूक्तीः सुधास्यन्दिनीः॥
श्रोत्रयो रसस्य हर्षस्य स्थानम्। रसो गन्ध रसो
हर्षे रसः स्यादे प्रकीर्तितः — इति विश्वः।

श्रियः प्रसूते विपदो रुणद्धि
यशांसि दुग्धे मलिनं प्रमार्ष्टि।
संस्कारशौचेन परं पुनीते
शुद्धा हि बुद्धिः किल कामधेनुः॥

तेन पुत्री पुत्रः कल्पिता।
पुत्रावकल्पश्चलतः By making a daughter possible
in the case of a son. पुत्रेऽवकल्पते सम्भवतीति
पुत्रावकल्पः, तस्य भावः तादृशं पुत्रावकल्पत्वं, तस्मिन् बलोपे कर्मण्युपसंख्यानम्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अन्तःपुरिजनस्यापि विहारस्य महाराजस्य तया विना किं रविष्यते। अन्तःपुरे विहरन्तिताः।
प्राची बालविडाललोचनरुचां जाता च पात्रं कुपः।
प्रभातभोगावली प्रातर्बन्दिपाठ्या राजस्तुतिः।
उद्गतमधुच्छत्रश्चन्द्रमाः। उद्गतं गतमधु।
छत्रं पटलम्।
कनकरत्नादिसामग्रीं दापयितुं महाराजभाण्डागारं यास्यामि।
प्रातस्त्यस्तूर्यनादः स्थगयति गगनम् — आच्छादयति व्याप्नोतीति यावत्।
*कथयितव्यं गुणं प्रतिभं सन्दधानः। प्रतिभारूपं गुणमित्यर्थः। व्यस्तरूपकम्।

तद्वक्त्रं यदि मुद्रिता शशिकया हा हेम सा चेद्द्युतिः
स्तच्चक्षुर्यदि हारितं कुवलयैस्तच्चेत् क्षितं का सुधा।
धिक्कुन्दर्पधनुर्भुवौ च यदि ते किं वा बहु ब्रूमहे
यत्सत्यं पुनरुक्तवत्त्वविमुखः सर्गक्रमो वेधसः॥ १।८॥

तद्वक्त्रादीनामेव शशिहेमादिस्थानाभिषिक्तत्वात् शशिकया मुद्रिता मुद्रणमवाप्तच्यतां प्राप्ता।
भवतु अनुभन्त्स्यामि। निर्बन्धेन प्रश्नं करिष्ये।
परिणामोत्पीडितमिव दाडिमफलं स्फुटनमुत्सृष्टं
वर्तते मे हृदयं कौतूहलेन — Vidyadhara.
Compare with this Vidyadhara's saying
at the beginning of Act III of Vikramorvaśīya.

* C.P. गहनमकरन्दप्राप्तबुद्धिप्रसादः।
कवय इव महीपाश्चेतनायत्तवर्ण्यजातम्॥ Anuka. XI.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

ज्योत्स्नासपत्नं महः। चुलुकोत्सेकं महः
Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri
चुलुकेन संहतपाणिभ्यां उत्सेकाद्भिः। Of pleasure to be measured by the cavity of the hand.

सा मन्मथं मन्मथं कृतवती। मां मथ्नातीति।
मौक्तिकानां (मौक्तिकानाम्)। अभिनवोत्पन्नानाम्। १।१७॥ कौङ्कुमीभिः प्रभाभिः। आरक्ताभिः।

गण्डूषय मधु।

किमद्यापि वा चन्द्रे प्रसारितकरे ऽदलितकन्दोहा नीलोत्पलिनी तिष्ठति। कन्दोहशब्दो नीलोत्पले रूढः प्राकृते।

सत्यं त्वया कृतं नये दृष्टे माण्डिते उपविष्टः पतिमुण्डित इति।

लक्ष्यं तव त्र्यम्बकः। पुनरपि तत्स्वप्नाद्भुतं दर्शय।

एवं सतं स्वप्नलब्धैर्मोदकैर्ग्रामभुपनिमन्त्रयसे।

वरं तत्कालोपनता तित्तिरी न दिवसान्तरिता मयूरी. cf. वरमद्य कपोतः श्वो मयूरात् (कामसूत्रे)

मध्येऽङ्कुरं पल्लवाः। यष्टिमात्रपरिग्रहः पञ्चमः (स्वरः)

इच्छामात्रस्वरूपः।

मनो जन्मनो देवस्यापि चिरोज्झितं धनुरभ्यासवश्यं भवेद्यदि तर्हि द्वित्रैरहोभिर्जगन्ति जिष्णु जयशीलं जेष्यतीत्यर्थः — इति टीकाकृत्।

माञ्जिष्ठैः स्तबकैश्च पाटलितरैः पैत्रं च चिल्लिपिः।
तमालपत्र [illegible] (Sk Lexicon).

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

For a mythological description of the प्रमदोद्यान which is अनवस्तरग्रस्त (see) Vidyusaka's speech on page 23.

शरो दध्यग्रभागे स्यात्। इति कोशः।

दाक्षिणात्याः समीराः। बाह्याली धावनभूमिः।

वोहेम्पोऽहं। ओह! चाँद और सांस में मेरी खेल रहा है।

कथमाच्छिन्नदर्शनिष्काभिरिव। स्मार्भिः समं खेलति चन्द्रः। Play of hide and seek with us.

चक्षुर्मेचकमम्बुजं विजयते वक्त्रस्य मित्रं शशी
भ्रूसूत्रस्य सनाभि मन्मथधनुर्लावण्यपण्यं वपुः।
कन्येति सूचयति वेलविशेष एव।
यन्नीलचोलकवती लिखिताऽपि चित्रे। I.34.

इदं च पौरन्ध्रमवैमि कर्म।

आकृतिमनुगृह्णन्ति गुणाः।
यादृशः कावेस्तादृशी काव्यबन्धच्छटाया।
कम्बोर्विडम्बनकरश्च स एव कण्ठः।

न स्वप्नानुभवस्य काचिदपरः सब्रह्मचारीमम
कुवलयच्छायामुषा चक्षुषा— I.37.
तिरश्चीनदृष्टिच्छटाकरणैः।
मध्यं दरिद्राति च। The waist is poor in. slender.
सत्यङ्कारमिवैः स्मरैकसुहृदा तद्यौवनेनार्पितम् I.40.
How सत्यङ्कार (exact meaning) is used. in the verse; [illegible] in the verse.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

स्त्रीवे सत्यापनं सत्यङ्कारः सत्याकृतिः स्त्रियाम्।
मात्रा नतेन पाण्डितभुवदनम्। अंशेन

मात्रा परिच्छेदे। अल्पे च परिमाणे स्यात् — इत्यमरः
न खलु व्यापारमन्तरेण करतलकलितापि शुक्ति-
र्विमुञ्चति मौक्तिकानि।
तर्हि मालतीकुसुमैः दुकूलं कल्पयिष्यसि।
दुकूलं शाङ्कुमिः कीर्णे श्वभ्रे ना तृणकानले —
इत्यमरः।
मिथ्या लेढि मृणालकोटिरमसाद्दृष्ट्वाङ्कुरं सूकरः
मृणालकोटौ बिसाग्रभाग औत्सुक्यं I. 63.
जौरी मे कुप्यतु यदि मया दृष्टासि अन्यहृदयेन।
जघनपरिवेषः — जघनविस्तारः।
कौतूहलं मां प्रक्ष्यति। अत्रान्तरेण कर्मपरिक्षेपः पुष्पे
कथमिव जीवतः कृकलासात् शिरः सुवर्णं प्राप्यते [कर्मकः।
सटः कृकलासः स्यात् — इत्यमरः। chameleon.
दुकूलं श्लक्ष्णवस्त्रे स्यात् क्षौमे च — इति मेदिनी।
भो दीक्षितोहं मौने तिष्ठामि।
निदेशकः — देवी साम्प्रतमेव मां परिणायिष्यति
राजा — तामेव चिरन्तनब्राह्मणीम्
मी-मी will परि-follow णिच् is regarded as
as द्विकर्मकः
मालाकारे प्रतिवेश्मनि मालेयं रुदः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

वर्धतां परिहासलता।

भ्रामर्यः।

बन्धुलः - Bakul.

अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः।

बन्धून् लाति।

कुरङ्किके देवता द्वितीयस्य देवस्य पार्श्वपरिवर्तिनी भव। देवतया द्वितीयस्य नतु परिजनेन। एकाकिन इत्यर्थः। छाया द्वितीय इत्यपि व्यवहारः।

न पुराणप्रजापतिनिर्मितमेषा। यतः

चन्द्रो जडः कदलिकाण्डमकाण्डशीत-
मिन्दीवराणि च विसूत्रित विभ्रमाणि।
येनाक्रियन्त सुतनोः स कथं विधाता
किं चन्द्रिकां क्वचिदशीतरुचिः प्रसूते॥ II.५.

विसूत्रित°- दिनरात्रिभेदेन नैकरूपो विभ्रमो येषाम्।

उत्तालकभङ्गानि -

दन्तानां परिकर्म - प्रसाधनम्।

सर्वं त्वयि संभाव्यते। किं मधुनि कुसुमयति।

गुडूचीदण्ड इव भवानेव प्ररोहतु। अहं पुनर्देवीसकाशं गच्छामि।

उत्फालसंफालानि कर्तुं लग्ना। पतनोत्पतनानि।

छेन्नोक्तयः - विदग्धोक्तयः clever words.

लतापल्लवानि - लतागुल्माः।

अलकाश्चूर्णकुन्तलाः ते ललाटे भ्रमरकाः इत्यमरः।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

भृङ्गाग्र गृह कुड्य केतकदल स्पर्धावतीनां दृशाम्
Compare with it from the Meghadūta:—

कुन्दस्येषानुग मधुकरश्रीमुषामात्म बिम्बं
पात्रीकुर्वन् जनपद वधू नेत्र कौतूहलानाम् । I. 46.

कचान्ते सञ्ज्ञायां स्यात् कर्णान्ति शोभनार्थकः (पाशः)
इति विश्वः ।

अदेवं देव कुलम् ।
देवो मेघे सुरे राज्ञि स्यान्नपुंसकमिन्द्रिये ।
कुलं कुल्ये गुणे देहे गेहे जनपदेऽन्वये ॥
दृष्टा च हरिश्चन्द्र पुरीव नष्टा च । गन्धर्वनगरी

प्रिय वयस्य यदि कालाक्षरिक्षोसि तत् पठ ।
कालाक्षराणि वेद्यत्वेनास्य सन्तीतिसः ।

पौगण्डो व्यङ्गः । विकलाङ्गस्तु पौगण्डः ।
तदेहि मत्तवारिण्यामुपविशामः । बालागं मत्तवारणम्
सैव मत्तवारिणी क्वोतपालिकेति केचित् । गज-
दन्तैः कृता शाला विज्ञेया मत्तवारणी इत्यन्ये ।
वातायनानामग्र उपविशो वेशनार्थं दारुभिः पाषाणै-
र्वा निर्मितं स्थलमित्यपरे ।
तदिदं तकिये अनाकरे पद्मराग रत्नम् ।
दोलान्दोलिनी -
तत् कामं सुभग त्वया वरतनुर्वातूलतां लम्भिता
गसुपसर्जनः प्राप्त्यर्थे विलभत्र किमिति
II. 20
द्विकर्मकः ।
तापोऽम्भः प्रस्तिम्पचः । सैरन्ध्री परवेशमस्था
शिल्प कर्त्री ।
सैरन्ध्री परवेशमस्था स्ववशा शिल्पकारिका—
इत्यमरः ।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

उत्कण्ठाभरेण शिशिरकरस्यमाणमिव कारि-
दन्तमुसलं स्फुटनभूयिष्ठं वर्तते मे हृदयम् —
Speech चेटी
beginning of Act III.

नूनं महाभागधेयजनकार्यसिद्धिरिव चिन्तितोप-
नता देवी।

पश्चात् कलकण्ठी कण्ठमुद्रां शिथिलीकरोति।

राजरहस्ये साहाय्यं कर्तव्यम्।
— सहायस्य कर्म।

का वर्णना बकुलाः (वल्या) सुरभिर्गन्धोद्गार इति।
Cf. का वर्णना नन्दः सुधोद्गारीति। Ratnavali.
= अथवा चन्द्रादमृतं स्रवतीति किमनेनाचार्यम्
न खलु सोपानपङ्क्तिमन्तरेण वलभ्याः समारोहः।

त्वया मैरवला सानुनासिकं भणितव्या।

मा समाधानभङ्गं मे कुरु-(Vighnaka) Compare in
जीव मा भवान् परिदेवितेन मम समाधिं भिन्द्धि—
Vighnaka = Vikrama.

वर्णं कलुषयन्ति Sanc.

न प्रेम स्व नव्यं सहते व्यन्तरायम्।

पुराणपत्रमपसारीकृत्य नवपल्लवः समुल्लसति।

अन्तःपुरद्वारप्रग्रीवे — वातायने, मुखशालायां वा।

सास्फोटं विहस्य—

दीर्घमग्नकटुकणा भवतु मे ब्राह्मणी।
रोदितु रोदितु किमस्या मौक्तिकानि गणिष्यन्ति।
मुष्टिग्राह्यं तमः। अतिमुक्तमिति यावत्। III. 6.

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

सम्प्रत्येणेक्षणानां तिमिरभरसखी वर्तते वेवलीला III.1.
Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
सरन्ध्रवती तत्सन्धानधर्मिणी।
शेखरो मूर्धमाला.
आवर्तितदुग्धमुग्धकर° III.8. आवर्तितमग्नि-
सन्तपेन घनीकृतम्।
ये पूर्वं यवसूचिसूत्रसुहृदः (सुधांशोः कराः)
यवाग्राणि -
पश्यैरावतकान्तदन्तमुसलच्छेदोपमेयाकृतिः।
Cf. सद्यः कृत्तद्विरददशनच्छेदपाण्डुः कपोलः।
तन्ममापि वर्धते तुण्डकण्डूः।
सरवे नाद्यापि शैशवोत्तेरतिरिच्यसे।
वैशद्यमेव विषमं विषस्य।
उत्सेच्या कलशीभिः (चान्द्रिका).
ज्वालामुचो रोचिषः। द्वितीयाबहुवचनम्।
तेजो दरिद्रः। रोचिः शोचिरुभे क्लीबे इत्यमर-
वचनेन विरुध्यते।
अयि पिबत चकोराः कृत्स्नमुन्नाम्य कण्ठं
क्रमकवलनचञ्चुचम्बवश्चान्द्रिकाम्भः।
विरहविधुरितानां जीवितत्राणहेतो-
र्भवति हरिणलक्ष्मा येन तेजोदरिद्रः॥ III.15.
साधमावर्त्य हेम्ना रजतम् अग्नौ द्रवीभूतं
कृत्वा।
सलिलरूपापि दहति हिमानी। कुसुममयापि
स्वभावचण्डा मदनपञ्चशरी।
चन्द्रमणिद्रुतिवहं निस्यन्दते इति नो वा
प्रतीकारः।
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.
कुसुमशयनं कामास्त्राणां करोति सहायताम्
III.20.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

कामं करुणगम्भीरः प्रबोधः; चन्दलयति मानसम्। चन्दलयुक्तं करोति। चन्दलं नवाङ्कुरः — इति हैमः।

सविसंष्ठुलं वाचयति।

विशीर्ण शिरसो रेखाहारश्रोणयः। सम्यग निष्पन्नानि शिरांसि उपरितनरेखा यास्तां ताः।

कारय चक्षुषी पारणाम्।

किमेषोऽनभो वर्षः। रीतिरिव कनकत्वं गता....

चित्रा शिरखण्डिदाम — सप्तर्षिमण्डलम्।

दीयन्तां पक्षद्वाराणि।

सौत्रामणी दिक् — ऐन्द्री.

भतेगावली वान्दिपाठः — इति हारावली।

तस्मै रेवलावृत्तान्तं प्रतिकर्तुमलीकविवाहेन विडम्ब्यतां भर्ता।

तच्चिरं पाययितव्या जीर्णमार्जारी मा।ज्ञि ने दुग्धम् इति।

मृगतृष्णा नाजामाता-

नरवं पचाश्च पथि पांसवः।

करम्बिता शिशिरवारिणा वारुणी।

दयितजनेन समं च विप्रयोगः।

हारः स च प्राप्तमत्र जातः 1V. 9.

सम्बन्धिनो जन्यवासभोज्ये किमुत्तरम्।

अशोकः यत्कङ्केलितरोर्दोहदं यच्च भगवान् त्रिलोचनः शीर्षे समुद्वहति। यदा वा तदिलासामि त्वाम् अर्धचन्द्रं वा ते दास्यामि।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

आरम्भणीयानि प्रकरणानि भवन्ति। साधयत गायत
नृत्यत च।
Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
फालः = उद्भूतिर्व्यतनम् (plowghshare) resembles
कराक्षव्याक्षेपाः। शिशुशफरफाल प्रतिभुवः
नवं नेत्राद्वैतं कुवलयदृशः संनिदधति॥ Ritusam. IV. 14.
हला वयं कार्यवाहिरीत्या भ्रान्ता एतयोः पुनः
सानुबन्धः प्रबन्धः। Our mind has been wandered in such a manner as to give occasion for their plots; like Bengalese plotting (planning), as for a very long time.
किं गते सलिले सेतुबन्धेन। किं गते विवोह
नक्षत्रपरीक्षया।
विवाहसम्पुटो वृत्तः।
मादृशानां च पदातिलवानाम्
सर्व एव राजानश्चण्डवृत्तयो दण्डोपनताः।

वामाङ्गं पृथुलस्तनस्तबकितं यावद्भवानीपते-
र्लक्ष्मीकण्ठहठग्रहव्यसनिता यावच्च दोष्णां हरेः।
यावच्च प्रतिमाप्रसारणविधौ व्यग्रौ करौ ब्रह्मणः
स्थेयासुः श्रुतिशुक्तिलेह्यमधुरास्तावत्सतां सूक्तयः॥
नग्नः स्तुतिव्रतस्तस्य ग्रन्थो भोगावली भवेत्—हैमः। IV. 23.

क्रमपरिणतेरेवा मांसलैरङ्गभङ्गैः
लघुरपि लिखितेयं दृश्यते पूर्णमूर्त्तिः। I. 36.
with the several limbs appearing solid by the shadings, gradually growing deeper deeper, she, though painted in miniature, appears to have (life - lita) full form.
प्रियवयस्यसमाचरितम् J. conciliate.
CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.
तहिनकरसुता — नर्मदा—

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

निर्यद्वारस्य दीव्य पिण्डकरणं ... The rite of the sun giving forth departing life of today. The setting sun is मान्त्रिष्ठ as if he has performed the rite - calmed down to take to संन्यास.

वाचयति — निष्कृप नराक्या: You are merciless from the helpless.

उन्मुद्रय — Removing the seal. पत्रे हि प्रत्ययार्थं मुद्रा क्रियते स्म।

मांसलतां दधत्यपि चान्द्रि द्योतें व्यतिरिच्यत
एवास्या: स्मरजन्मा पाण्डिमा।
आन्ध्रो नीरन्ध्रसार: Kings of Andhra possessed strength without flaw.

वात्स्यायनीये कामसूत्रे वेद्य पद्यवाक्यादिसङ्ग्रह: —

यद्विज्ञातशास्त्रेण कदाचित्साधितं भवेत्।
न चैतद्बहु मन्तव्यं घुणोत्कीर्णमिवाक्षरम् ॥ (टीका)

धर्माधिकारिकम् - धर्मस्याधिकार: प्रस्तावो यत्रास्ति तत्।

पक्वान्नमिव राजेन्द्र सर्वसाधारणा: स्त्रिय:।
तस्मात्तासु न कुप्येत न रज्येत रमेत च ॥

पाटलिपुत्रका: — पाटलिपुत्रं नाम नगरं तत्र भवा: रोपधेतो: प्राचाम् इति वुञ्।

गोनर्दीयो भार्याधिकारिकम्, गोणिकापुत्र: पारदारिकम् - इत्यतोऽवसीयते भिद्यते गोनर्दीयो गोणिकापुत्रात्।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

शतायुर्वै पुरुषः.... शतशब्दः सामान्यवाच्यपि वर्षगतसंख्यानमाह। वृत्तौ तथार्थस्य विवक्षितत्वात्।

अलौकिकत्वाददृष्टार्थत्वाद प्रवृत्तानां यज्ञादीनां शास्त्रात्प्रवर्तनम्, लौकिकत्वादृष्टार्थत्वाच्च प्रवृत्तेभ्यश्च मांसभक्षणादिभ्यश्च शास्त्रादेव निवारणं धर्मः। तं श्रुतेर्धर्मज्ञसमवायाच्च प्रतिपद्येत — संसर्गात् जानीयात्।

विनोपदेशं सिद्धो हि कामोऽनाख्यातशिक्षितः।
स्वकानारभणोपाये को गुरुर्मृगपक्षिणाम्॥
मुमुक्षवोऽपि सिद्ध्यन्ति विरागाद्रागपूर्वकात्।
विषयेष्वननुबन्धिन्यो निसर्गात्प्राणिनां धियः॥
(टीका)

न धर्मश्चरेत्, एष्यत्कालत्वात् सांशयिकत्वाच्च
अत्र सांशयिकशब्दे कर्तरि इति पूर्वः पक्षः
संशयितरि न प्रत्यय इति स्पष्टम्। एवं
यास्कीये निरुक्तेऽपि — सांशयिकस्तृतीयः पाद इत्यत्र।
वरं सांशयिकान्निष्कादसांशयिकः कार्षापणः।
इति लौकायतिकाः।

दोषाः सन्ति न सन्तीति पौरुषेयस्य युज्यते।
वेदे कर्तुरभावात्तु दोषशङ्कैव नास्ति नः॥ टी०
अनुव्याहारः शान्तिकपौष्टिकम्।
नक्षत्रग्रहपञ्जरमहर्निशं लोककर्मविशिष्टम्।
भ्रमति शुभाशुभमखिलं प्रकाशयत्पूर्वजन्मकृतम्॥ टी०
अपि नाम श्रेष्ठविधिना लोकाचार बाधकम्।
पूर्वस्य तु प्रधानत्वान्न सेव्यः पूर्वबाधकः॥ टी०

CC-0. Sarayu Trust. Shashi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अस्ति व्यवहारे तैयाकरणा अपि याज्ञिका
ऊहं ऋत्वङ्गेषु प्रयुञ्जते। मूलम्।
शास्त्रप्रहतबुद्धयः। शास्त्रे प्रहता विन्ना बुद्धि
र्यासां ताः।
महामात्रदुहितरश्च। महती मात्रा येषामिति सामना
महासामन्ता वा।
वैश्वासिकाज्जनात्। मूलसूत्रम्। विश्वासार्हात्।
अभिधानकोषः इतिमूलपाठः। अत एवोत्तरत्र
लोकव्यवहारे प्रसिद्धया कोष इत्येव प्रयोग दृश्यते।
। विशेषकस्तिलको यो ललाटे दीयते तस्य भूर्ज-
पत्रमयस्यानेकप्रकारं छेदमेव च्छेद्यम्। पत्रच्छे-
द्यमिति वक्तव्यम्।
भद्रं खण्डखाद्यादि.
प्रतिमाला यस्या अन्त्याक्षरिकेति प्रतीतिः।
प्रतिश्लोकं क्रमाद्यत्र सन्धायाक्षरसन्निभम्।
पश्चेतां श्लोकमन्योन्यं प्रतिमालेति सोच्यते॥
सूच्या यत्सन्धानकरणं तत् सूचीवानम्।
तत् त्रिविधम्— सीवनम्, ऊतनम्, विरचनम्
काव्यसमस्यापूरणम्। श्लोकपादपूरणम् इत्यर्थः।
तद्यथा काव्यादर्शे— आश्वासं जनयति राजमुख्यमध्य
इति। अयं पाद उद्योगपर्वणि विष्णुयाने त्रिभिः पादैः
संग्रथितव्य इति समस्या दत्ता। तत्र तत्रयः पादाः
दैत्येन हिरण्यपुरं गतस्य विष्णो र्बन्धार्थं प्रतिविहितस्य धातराष्ट्रैः
रूपाणि त्रिजगति प्रतिमानि शौर्यादाश्वासं जनयति राजमुख्यमध्ये।

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

टी०

Digitized by Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS and eGangotri

साधु [illegible] इत्यर्थः। सत्य-
धनस्य इति सोल्लुण्ठवचनम्। पदातिः
पादचारी। रेणुरेवितः पांसुगुण्ठितः।
धूलिधूसरितः। एनं वनौदसमीदृगवस्थं
पश्यतस्ते मनो धृतिं धत्त इत्याश्चर्ये
-म्। कपटचारिभिरसतीभिः सह कृतः
समयबन्ध एव किं गरीयान् महोपकारि
-णां भ्रातृणां परिरक्षणं न गरीयो भव
-तीति जिज्ञासामहे॥

३५. अन्वयः- वासवोपमो यो धनञ्जय
उत्तरान् कुरून् विजित्य पाञ्चं
अक्षय्यं वसु अयच्छत् सोऽधुना तव
वल्कवासांसि हरन् कथं मन्युं न करोति
वासव इन्द्र उपमा उपमानं यस्य -
अक्षय्यं हैमत्वात्मकम्, हाटकस
-मयम्। वरिवेयभृतास्त्वचः। हा देव
[illegible] इति अहं ध्रिये; कथं

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri

कथं मे हृदयं न दीर्यति ॥

धनञ्जयः, धनं जयतीति संज्ञायां भृत्रृजि - इत्यादिना खच्प्रत्ययः। अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम् ॥ मिमीतेः करणे (नाहुलकात्) अड् = उपमा। वासवेनोपमा सादृश्यं यस्य स इति व्यधिकरणो बहुव्रीहिः। अथ वा नित्यसमास एवायम् - वासवेन सदृश इति वासवोपम इत्यस्वपदविग्रहः। स्युरुत्तरपदे त्वमी निभसंकाश नीकाशप्रतीकाशोपमाद्य इति तन्निर्देशात् ॥

इद्ध. अन्वयः - वनान्तशय्याकठिनीकृतान्कृतौ विक्षत क्वाचितौ अजौ गजाविव स्थितौ एतौ यमौ विलोकयन् त्वं धृतिसंयमौ बाधितुं कथं नोत्सहसे? अरण्यभूमिशयनपटवीकृतदेहं केशवात्मजौ। तन्नाबध्येथे पीडयितुं

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.